कौशिकी

– एक जीवन धारा

संयुक्तांक 2022–23 एवं 2023–24

हुकुम सिंह बोरा
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सोमेश्वर, अल्मोड़ा(उत्तराखण्ड)

प्राध्यापक वर्ग

प्रथम पंक्ति– (बायें से दायें)– डॉ. विवेक कुमार आर्या, डॉ. जगदीश प्रसाद, डॉ. चन्द्र प्रकाश वर्मा, प्रोफे. अवनीन्द्र कुमार जोशी (प्राचार्य), प्रोफे. कमला डी. भारद्वाज, डॉ. अमिता प्रकाश, डॉ. राकेश पाण्डे।

द्वितीय पंक्ति– (बायें से दायें)– श्री नीरज सिंह पांगती, डॉ. भावना, डॉ. कंचन वर्मा, डॉ. ऑचल सती, डॉ. शालिनी टम्टा, सुश्री हिमाद्री आर्या, डॉ. विपिन चन्द्र।

तृतीय पंक्ति– (बायें से दायें)– डॉ. पुष्पा भट्ट, डॉ. सुनीता जोशी, डॉ. हर्षा रावत, डॉ. महेश चन्द्र, डॉ. संजय कुमार।

‘‘कौशिकी-एक जीवन धारा’’

संयुक्तांक- 2022-23, 2023-24

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो. (डॉ.) अवनीन्द्र कुमार जोशी

संपादक

डॉ. अमिता प्रकाश

संपादक मण्डल

डॉ. जगदीश प्रसाद
डॉ. सी.पी. वर्मा
डॉ. विवेक कुमार आर्या
डॉ. महेश चन्द्र
डॉ. विपिन चंद्र
डॉ. नीरज पांगती

छात्र संपादक

राजेन्द्र सिंह कैड़ा
लक्षिता लोहनी
ज्योति बोरा

मुद्रकः-

उत्तरायण प्रकाशन, हल्द्वानी (नैनीताल) फोन- 221125

शुभकामना संदेश

अजय टम्टा
AJAY TAMTA

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय
भारत सरकार
Minister of State for
Road Transport & Highways
Government of India

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) द्वारा **''कौशिकी-एक जीवन धारा''** पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय स्तर की विभिन्न गतिविधियों के सफल आयोजनों सहित विभिन्न प्रकार की उपयोगी जानकारियों का भी समावेश होगा, जो विद्यालय के छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। मुझे आशा है कि यह पत्रिका छात्र-छात्राओं की बहुमुखी प्रतिभा को एक मंच प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन है।

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) को उक्त पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अजय टम्टा)

शुभकामना संदेश

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून – 248001
फोन : 0135-2650433
0135-2716262
फैक्स : 0135-2712827
कैम्प कार्यालय
फोन : 0135-2750033
0135-2750344
फैक्स : 0135-2752144

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका ''**कौशिकी- एक जीवन धारा**'' का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान की पत्रिका उसका दर्पण होती है, जिसमें छात्र-छात्राओं, गुरूजनों व शिक्षाविद्वों की रचनाओं का प्रकाशन किया जाता है, साथ ही छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक और रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक प्रभावी एवं सार्थक माध्यम मिलने के साथ-साथ ऐसे प्रयासों से छात्र-छात्राओं के आत्मविश्वास में आशातीत वृद्धि भी होती है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में महाविद्यालय से जुड़ी विभिन्न उपलब्धियाँ/गतिविधियाँ तथा लेख/विचारों को समाहित किया जायेगा, जो महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं एवं अन्य पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे।

मेरी ओर से हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) को अपनी वार्षिक पत्रिका ''**कौशिकी-एक जीवन धारा**'' के सफल प्रकाशन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

(पुष्कर सिंह धामी)

शुभकामना संदेश

डॉ. धन सिंह रावत
मंत्री
चिकित्सा स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा
सहकारिता, उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा
विद्यालयी शिक्षा

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
कक्ष सं. : 20
फोन : (0135) 2666410
फैक्स : (0135) 2666411

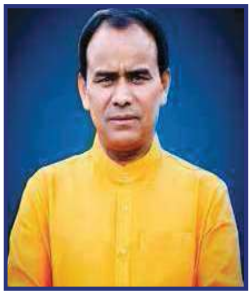

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा की वार्षिक पत्रिका ''कौशिकी–एक जीवन धारा'' का प्रकाशन होने जा रहा है। महाविद्यालय ने इससे पूर्व कोविड–19 के दौरान ई–मैगजीन का प्रकाशन करके एक अनुकरणीय और सराहनीय कदम उठाया था। वर्तमान समय में सोशल मीडिया के दौर में जब विद्यार्थी रचनात्मकता से दूर जा रहे हैं, ऐसे समय में महाविद्यालय की पत्रिका उनको सृजन के लिए प्रेरित करती है।

महाविद्यालय पत्रिका, जहाँ एक ओर विद्यार्थियों और शिक्षकों को रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर महाविद्यालय के बौद्धिक उन्नयन, चहुँमुखी विकास एवं पाठ्येत्तर क्रियाकलापों का भी प्रतिबिम्ब होती है।

मैं अपेक्षा करता हूँ कि यह पत्रिका अभिभावकों, प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों एवं समाज के सभी वर्गों के लिए पठनीय एवं विचारणीय सामग्री प्रस्तुत करने में सफल होगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापकों एवं छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

(डॉ. धनसिंह रावत)

शुभकामना संदेश

रेखा आर्या
मंत्री
महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास,
खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता
मामले, खेल एवं युवा कल्याण,
उत्तराखण्ड सरकार

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन, उत्तराखण्ड
कक्ष सं0 : 113
फोन : (0135) 2665111
फैक्स : (0135) 2665880
मो. : 8395889380

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि श्री हुकुम सिंह बोरा, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा विगत वर्ष की भांति पत्रिका ''कौशिकी-एक जीवन धारा'' का प्रकाशन कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के अध्यापक, छात्रा एवं अभिभावकगण अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक अभिरूचियों तथा रचनात्मक गतिविधियों का विकास करेंगे एवं भावी पीढ़ी को सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसारित करेंगे। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

(रेखा आर्या)

शुभकामना संदेश

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट
कुलपति

मो0- +91 7579138434
ई-मेल : vessju@gmail.com

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) द्वारा "**कौशिकी-एक जीवन धारा**" विषयक संयुक्तांक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाएं हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को विकसित करने के साथ-साथ उनका ज्ञानार्जन करती हैं। जब सोमेश्वर क्षेत्र की बात आती है तो यह क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध रहा है। आज भी इस क्षेत्र के आस-पास ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक धरोहरों का विस्तार मिलता है। जिनके विषय में हमारे विद्यार्थियों को बताए जाने की आवश्यकता है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से इन महत्वपूर्ण पहलुओं पर दृष्टि डाली जाएगी। साथ ही यह पत्रिका विद्यार्थियों में रचनाशीलता को बढ़ाने में अपना योगदान देगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन अवसर पर हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, अल्मोड़ा के प्राचार्य डॉ0 ए0के0 जोशी, महाविद्यालय के सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षणेत्तर कर्मियों का अपनी ओर से शुभकामनाएं देता हूं।

शुभमस्तु!

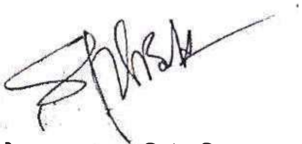

(प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट)

शुभकामना संदेश

प्रो० ओम प्रकाश सिंह नेगी
कुलपति
Prof. Om Prakash Singh Negi
Vice Chancellor

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Uttarakhand Open University

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) द्वारा महाविद्यालय पत्रिका ''कौशिकी–एक जीवन धारा'' के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकाएं विद्यार्थियों के उज्ज्वलतम भविष्य एवं सक्रिय कार्य कुशलता में बढ़ोत्तरी, परस्पर सहयोग एवं रचनात्मक अभिरुचियों को प्रकाशन में लाने का उत्कृष्ट कार्य करती हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है, कि पत्रिका में छात्र/छात्राओं तथा जनसामान्य हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जायेगा। पत्रिका के माध्यम से शिक्षार्थी एवं समाज के सभी वर्ग मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से लाभान्वित होंगे।

मैं महाविद्यालय की पत्रिका ''कौशिकी–एक जीवन धारा'' के संयुक्तांक के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित,

(प्रो. ओ०पी०एस० नेगी)

शुभकामना संदेश

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी - 263139 (नैनीताल)

E-mail - highereducation.director@gmail.com

प्रो. अंजू अग्रवाल
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक: 4585/2024-25
दिनांक: 10 दिसम्बर, 2024

महोदय,

हर्ष का विषय है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा) महाविद्यालय पत्रिका **''कौशिकी-एक जीवन धारा''** का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जायेगी जिससे छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन-दर्शन, कार्य-संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र-छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तितव विकास में सहायता मिलेगी।

''कौशिकी-एक जीवन धारा'' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करती हूं।

मंगलकामनाओं सहित।

(प्रो. अंजू अग्रवाल)

शुभकामना संदेश

विनीत तोमर
आई.ए.एस.

उत्तराखण्ड सरकार

जिला अधिकारी
अल्मोड़ा

यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका **''कौशिकी-एक जीवन धारा''** के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों में नैसर्गिक सृजनात्मकता होती है। विद्यार्थियों का उनकी अभिरुचि के अनुरूप अध्ययन के साथ ही अन्य विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु सतत् प्रयास किया जाना विद्यालय का कर्तव्य है।

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों व शिक्षकों को रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभाग की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है व विद्यालय के बौद्धिक उन्नयन, चहुँमुखी विकास एवं पाठ्येत्तर क्रियाकलापों का भी प्रतिबिम्ब होती हैं।

मैं अपेक्षा करता हूँ कि विद्यालय की यह पत्रिका अभिभावकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तथा समाज के सभी वर्ग के लिए पठनीय एवं विचारणीय सामग्री प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई के साथ ही इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

(विनीत तोमर)

प्राचार्य की कलम से...

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर (जिला अल्मोड़ा) की पत्रिका 'कौशिकी एक जीवन धारा' के संयुक्तांक वर्ष 2022–23 तथा 2023–24 के प्रकाशन अवसर पर मैं महाविद्यालय के विद्यार्थियों शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कार्मिकों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। इस पत्रिका में जिन युवा विद्यार्थी रचनाकारों ने अपनी लेखनी द्वारा योगदान देकर इसे मूर्त रूप प्रदान किया है, उन सभी के प्रति मैं शुभकामनाएं और साधुवाद प्रेषित करता हूँ। पत्रिका के संपादक मण्डल द्वारा पूर्ण मनोयोग एवं तत्परता के साथ पत्रिका प्रकाशन हेतु किए गए प्रयास सार्थक एवं उल्लेखनीय हैं। युवा शक्ति की बौद्धिक संकल्पनाओं, वैचारिक क्षमताओं और मनोदशाओं के प्रतिबिम्ब रूपी यह पत्रिका आपके समक्ष इस आशा के साथ प्रस्तुत है कि इसे सामाजिक सरोकार के एक दस्तावेज के रूप में ग्रहण करते हुए पाठकगण समाज में युवाओं के प्रति अपने दायित्वबोध को साकार रूप प्रदान करेंगे। महाविद्यालय पत्रिका छात्र–छात्राओं की बौद्धिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उनके विचारों, कल्पनाओं एवं दृष्टिकोणों का दर्पण है जिसे प्रत्येक शिक्षण सत्र में नियमित प्रकाशित किए जाने पर उत्तराखण्ड सरकार एवं शासन द्वारा निर्देश दिए गए हैं। तदक्रम में विद्यार्थीगणों से अपेक्षा है कि वे महाविद्यालय पत्रिका में प्रकाशनार्थ स्वरचित रचनाएं पत्रिका के संपादक मण्डल को उपलब्ध कराएंगे ताकि आगामी सत्र की महाविद्यालय पत्रिका अधिक परिष्कृत रूप में सम्मुख आ सके।

शुभकामनाओं सहित–

प्रो. (डॉ.) अवनीन्द्र कुमार जोशी
प्राचार्य

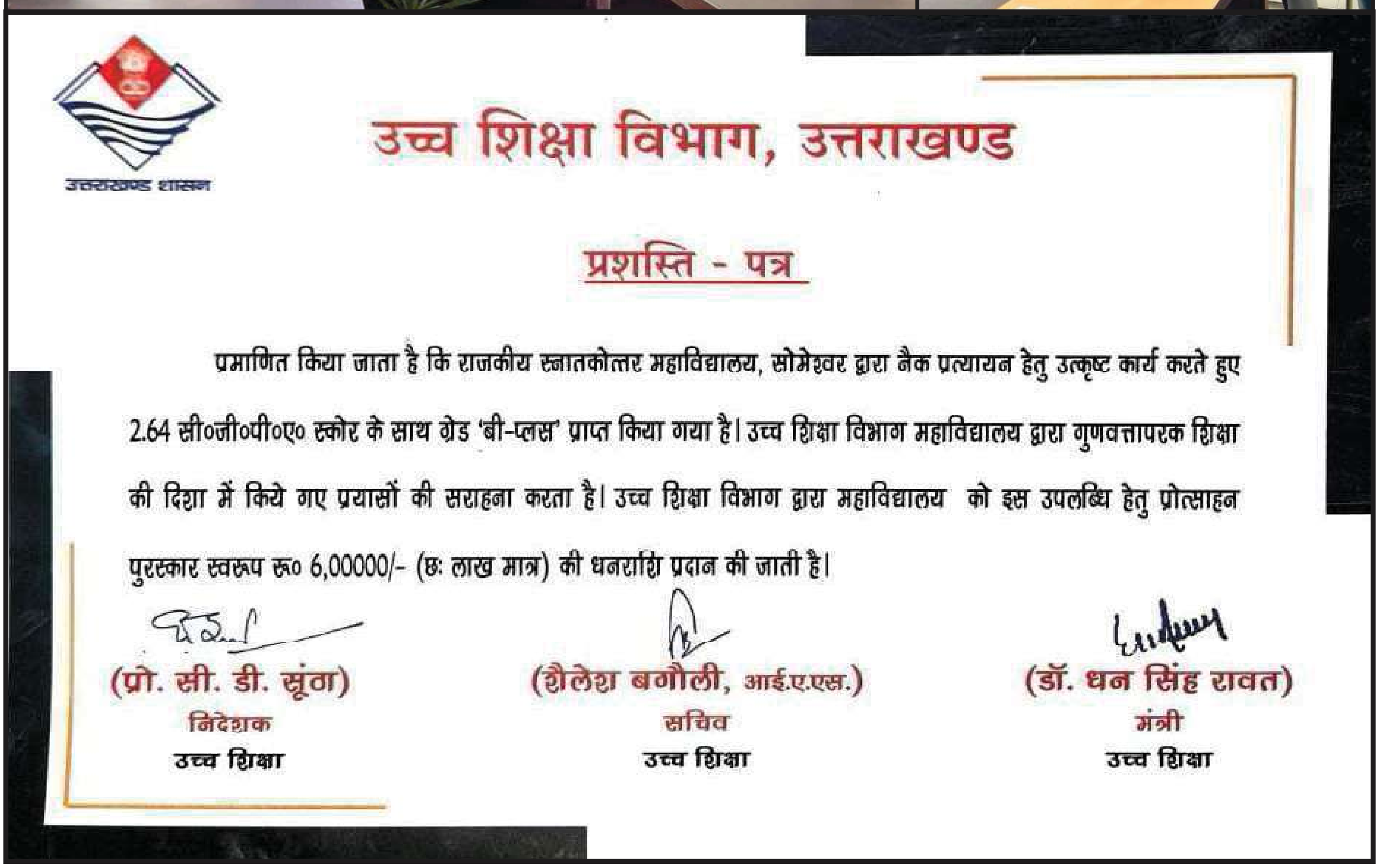

उत्तराखण्ड शासन

उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

प्रशस्ति - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर द्वारा नैक प्रत्यायन हेतु उत्कृष्ट कार्य करते हुए 2.64 सी०जी०पी०ए० स्कोर के साथ ग्रेड 'बी-प्लस' प्राप्त किया गया है। उच्च शिक्षा विभाग महाविद्यालय द्वारा गुणवत्तापरक शिक्षा की दिशा में किये गए प्रयासों की सराहना करता है। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा महाविद्यालय को इस उपलब्धि हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप रू० 6,00000/- (छः लाख मात्र) की धनराशि प्रदान की जाती है।

(प्रो. सी. डी. सूंठा)	(शैलेश बगौली, आई.ए.एस.)	(डॉ. धन सिंह रावत)
निदेशक	सचिव	मंत्री
उच्च शिक्षा	उच्च शिक्षा	उच्च शिक्षा

महाविद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NACC) विजिट

- संपादकीय -

देवभूमि उत्तराखण्ड अपनी प्राकृतिक सुषमा से हर प्राणी को अनायास ही आकर्षित व सम्मोहित करती

है। इसी भूमि के क्रोड़ में स्थित है सोमेश्वर घाटी, जिसे पी. बैरन ने एशिया की सबसे सुंदर घाटी कहा था। शौर्य सौंदर्य और धन-धान्य से परिपूर्ण इस घाटी में शिक्षा की अलख जगा रहा है हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर। अपने शौर्य से अंग्रेजी साम्राज्य की ईट से ईट बजाने वाले यहां के असंख्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की लंबी कतार में से एक थे हुकुम सिंह बोरा, जिनके नाम पर 2006 में यह महाविद्यालय स्थापित हुआ। इस महाविद्यालय ने अपने स्थापना से अब तक कई पड़ावों को पार किया है। प्रारंभिक रूप में अस्थाई दो कमरों तथा 07 विद्यार्थियों के साथ वाणिज्य संकाय से शुरू हुआ यह महाविद्यालय आज भौतिक संसाधनों ही नहीं मानवीय संसाधनों से भी परिपूर्ण है। वर्तमान में महाविद्यालय के तीनों संकायों में लगभग 600 विद्यार्थी तथा 21 शोध छात्र-छात्राएं नामांकित हैं। प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ.) अवनीन्द्र कुमार जोशी जी के नेतृत्व में 24 विद्वान प्राध्यापकों के साथ 12 कर्मठ कर्मचारी, पढ़ने-पढ़ाने की संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ ही, महाविद्यालय की उन्नति हेतु सतत क्रियाशील हैं।

महाविद्यालय की गतिशीलता एवं क्रियाशीलता का परिचायक विद्यार्थियों की शैक्षणिक उन्नति के साथ साथ शिक्षणेत्तर गतिविधियां भी होती हैं। इन्हीं गतिविधियों में से एक है महाविद्यालय की पत्रिका का प्रकाशन, जो महाविद्यालय की उन समस्त गतिविधियों एवं कार्यकलापों को, जो फाइलों में अंकित होकर सिर्फ अधिकारी वर्ग तक सीमित हो जाती हैं, उन्हें अभिभावकों और आमजन तक पहुंचाती है, जो इसके मूल हितधारक हैं।

वस्तुत: पत्रिका महाविद्यालय के क्रियाकलापों का प्रतिबिंबन ही नहीं करती है वरन एक जागरूक और जिम्मेदार अभिभावक की भांति अपने पाल्यों का पूरा लेखा-जोखा रखती है। पत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य यही है कि विद्यार्थियों के मन में दबे सृजन के बीजों को अंकुरित होने का मौका मिले और अभिव्यक्ति का एक मंच भी। साहित्य का इतिहास जानता है कि हमारे कई बड़े साहित्यकारों जैसे पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, सुमित्रानंदन पंत आदि ने सर्वप्रथम विद्यालय या महाविद्यालय की पत्रिकाओं से ही अपने सृजन की यात्रा का शुभारंभ किया था। पत्रिका विद्यार्थियों को न सिर्फ सृजनशील बनाती है बल्कि चिंतनशील बनने का मौका भी देती है। उनकी आशाओं और आकांक्षाओं का दर्पण बनती है।

यह हमारे समय का सच है कि आज मोबाइल फोन और सोशल मीडिया के इस दौर में विद्यार्थी ही नहीं हर व्यक्ति पठन-पाठन से दूर जा रहा है। इंटरनेट पर सामग्री की बहुलता और सर्वसुलभता ने उसे मस्तिष्क के प्रयोग से लगभग दूर करना शुरू कर दिया है। कट- पेस्ट सामान्य प्रवृत्ति बनती जा रही है। मौलिक चिंतन- मनन से दूर होता हमारा विद्यार्थी सामग्री के सागर में गोते लगाकर मोती की

चाह में कितना निरर्थक सामान समेट रहा है इसकी जानकारी उसे भी नहीं है। ऐसे में यह हमारा दायित्व बनता है कि उसे कूड़े के सैलाब में से मोती की पहचान करवाई जाए।

अस्तु, ज्ञान मनुष्य के लिए सबसे बड़ा धन है, यह उसे सशक्त बनाता है और विचारों को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। हमारा उद्देश्य है कि हम अपने छात्रों में ज्ञान के विकास के साथ-साथ उस ज्ञान का सही उपयोग एवं उसकी अभिव्यक्ति करने की क्षमता भी विकसित करें। इस पत्रिका के माध्यम से, यही प्रयास रहा है कि सभी छात्रों को प्रोत्साहित किया जाय कि वे अपने विचारों, रचनाओं और प्रतिभाओं को साझा करें। यह न केवल उन्हें मंच प्रदान करेगा, बल्कि अन्य छात्रों को भी प्रेरित करेगा। साहित्य हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है। कविता, कहानी, संस्मरण और लेख न सिर्फ रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं वरन इनके माध्यम से समाज और संस्कृति की धरोहरों को सँजोने का कार्य भी करते हैं। आशा है 'कौशिकी' अपने इस प्रयास में सफल होगी।

साहित्य संस्कृति और सृजन की जीवनधारा 'कौशिकी' का यह संयुक्तांक आप सुधि पाठकों के करकमलों में सौंपते हुए महाविद्यालय परिवार हर्षित है। पत्रिका में समाहित सामग्री छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए व्यक्तित्व के लगभग सभी पक्षों पर केंद्रित हैं। स्थानीयता को महत्व देते कई आलेख इसमें सम्मिलित किए गए हैं। इसके साथ ही भावात्मकता व रचनाधर्मिता को प्रदर्शित करती कविताएं एवं कहानियाँ हैं तो ज्ञानात्मक पक्ष के संवर्धन हेतु विभिन्न तथ्यात्मक जानकारियाँ भी इसमें समाहित करने का प्रयास किया गया है। समाज में परिश्रम और लगन से जगह बनाने वाले यूथ आइकॉन के बारे में जानकारी जहाँ युवाओं को प्रेरित करेगी, वहीं विभिन्न विषयों में रोजगार की संभावनाएं वाले लेख छात्र-छात्राओं को उनके करियर के प्रति जागरूक कर दिशा दिखाने का कार्य करेंगे ऐसी आशा है।

सर्वप्रथम मैं आभारी हूँ, उन छात्र-छात्राओं की तथा लेखकीय सहयोग प्रदान करने वाले अपने प्रबुद्ध साथियों की जिन्होंने अपने सृजन से पत्रिका को अर्थवत्ता प्रदान की। कौशिकी एक जीवनधारा के इस संयुक्तांक के प्रकाशन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) ए. के. जोशी जी की सकरात्मकता और प्रेरणा का महत्वपूर्ण योगदान है। आपके कर्मठ एवं कुशल मार्गदर्शन के साथ ही संपादक मण्डल के सम्मानित सदस्यों डॉ. जगदीश प्रसाद, डॉ. सी.पी. वर्मा, डॉ. राकेश पांडे, डॉ. विवेक कुमार, डॉ. महेश कुमार, डॉ. विपिन चंद्र तथा श्री नीरज पांगती का मैं हृदयतल से विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग के बिना पत्रिका का यथासमय प्रकाशन संभव नहीं होता। वर्तनी शुद्धिकरण के यथासंभव प्रयासों के बावजूद अशुद्धियाँ रह गई हों तो इसके लिए क्षमा याचना के साथ पुनः सभी के सहयोग हेतु आभार।

डॉ. अमिता प्रकाश
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

विषय सूची

हिन्दी अनुभाग

1.	अभिभावक अभिमत		8
2.	रोजगार के विविध अवसर और हिंदी	डॉ. विपिन चंद्र , सहा. प्राध्यापक हिंदी	9
3.	डिजिटल क्रांति और युवा भारत	डा. सी.पी. वर्मा, सहा. प्राध्यापक- भूगोल	10
4.	बाप	डा. जगदीश प्रसाद, सहा. प्राध्यापक- रसायन विज्ञान	11
5.	एक विचार	डॉ. सुनीता जोशी, सहा. प्राध्यापक- शिक्षाशास्त्र	11
6.	असीम संभावनाओं का विज्ञान: मनोविज्ञान	प्रो. कमला डी. भारद्वाज, प्राध्यापक-मनोविज्ञान	12-13
7.	पैसे बर्बाद न करें, बचत और निवेश की एक आदत बनाएं	डॉ. विवेक कुमार आर्या, सहायक प्राध्यापक- वाणिज्य	14-15
8.	भारतीय संस्कृति	डा. अनिल सिंह भरड़ा, इतिहास विभाग	16-17
9.	देवीधुरा का बग्वाल मेला- ऐतिहासिक परिचय	डॉ. कंचन वर्मा, सहा. प्राध्यापक - इतिहास	18-19
10.	समान नागरिक संहिता	डा. नीता टम्टा, असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र	19-21
11.	उम्मीद	प्रेमा, शोध छात्रा- हिन्दी विभाग	21
12.	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं	डा. भावना, सहा. प्राध्यापक- हिंदी	22-23
13.	मैं चींटी हूँ (कविता)	धीरज चंद्र जोशी, स्नातकोत्तर हिन्दी, तृतीय सत्रार्ध	23
14.	मोबाइल का जादू (कविता)	दीक्षा आर्या, स्नातक पंचम सत्रार्ध	23
15.	महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता	डा. मुकेश चंद्र, इतिहास विभाग	24-25
16.	वक्त (कविता)	प्रो. कमला धौलाखंडी भारद्वाज, मनोविज्ञान विभाग	25
17.	लैंगिक समानता आज भी एक चुनौती	डॉ. पुष्पा भट्ट, सहा. प्राध्यापक- समाजशास्त्र	26-29
18.	आजादी की सुबह (कविता)	प्रो. कमला धौलाखंडी भारद्वाज, प्राध्यापक- मनोविज्ञान	29
19.	नारी शक्ति की मिसाल बसंती देवी	शोभा नयाल, एम. ए. तृतीय सत्रार्ध	30
20.	वैश्वीकरण	बबीता आर्या, बी.ए. प्रथम सत्रार्ध	31
21.	उदयपुर गोलू देवता का इतिहास	ज्योति रावत, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	32
22.	कुमाऊनी धरोहर- 'भिटौली'	बबीता नेगी, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	33-34
23.	बेटियां (कविता)	हिमानी नेगी, एम.ए. तृतीय सत्रार्ध, इतिहास	34
24.	अनपढ़ की समझदारी	तनुजा आर्या, बी.ए.प्रथम सत्रार्ध	35
25.	उत्तराखण्ड में कुली बेगार आन्दोलन	वंदना आल्मियां, बी.ए.तृतीय सत्रार्ध	36
26.	भारतीय संगीत की महान विभूतियां	विजिया जोशी, बी.ए.तृतीय सत्रार्ध	37-38
27.	समय अमूल्य धन है	नेहा कबडोला, स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्ध, इतिहास	39
28.	भारतीय महीने (कविता)	सुष्मिता भैंसोड़ा, बी.ए. पंचम सत्रार्ध	39
29.	सोमेश्वर घाटी	नीरज सिंह राणा, बी.कॉम. पंचम सत्रार्ध	40
30.	शहर से जुड़ा रास्ता	पूजा, शोधार्थी हिन्दी विभाग	41
31.	लक्ष्य सेन - एक परिचय	प्रेम प्रकाश, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	42
32.	नशा मुक्ति (कविता)	नीलम राणा, बी.ए.प्रथम सत्रार्ध	43
33.	महान है वह व्यक्ति (कविता)	नगमा परवीन, एम.ए. तृतीय सत्रार्ध इतिहास	43
34.	राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू: प्रेरणादायक व्यक्तित्व	दिया बोरा, बी.ए. प्रथम सत्रार्ध	44
35.	मानव विकास हमारे पूर्वज	प्रिया वर्मा, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	45-46
36.	बेरोजगारी की आग (कविता)	निकिता जोशी, बी.ए. प्रथम सत्रार्ध	46
37.	देशप्रेम	नेहा कबडोला, स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्रार्ध इतिहास	47
38.	सफलता के सोपान	रवीना काण्डपाल, स्नातकोत्तर प्रथम सत्रार्ध (इतिहास)	48
39.	उत्तराखण्ड के गाँधी (प्रमुख व्यक्ति)	पूजा गोस्वामी, स्नातकोत्तर प्रथम सत्रार्ध (इतिहास)	48
40.	उत्तराखण्ड की प्रमुख जनजातियाँ	हिमांशी बोरा, स्नातक तृतीय सत्रार्ध	49-50

41.	पर्यावरण	दीपक नाथ गोस्वामी, एम.ए. प्रथम सत्रार्ध इतिहास	51-52
42.	मतदाता दिवस (कविता)	अंजली बोरा, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	52
43.	सोबन सिंह जीना	कृष्णा महतोलिया, बी.एस.सी. पंचम सत्रार्ध	53
44.	कोविड -19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	बबीता नेगी, बी.ए.तृतीय सत्रार्ध	54-55
45.	गली-गली में बिक रहा है मौत का सामान (कविता)	दीपा देवी, शोधार्थी- शिक्षाशास्त्र विभाग	55
46.	स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत	सुष्मिता, बी.ए. द्वितीय सत्रार्ध	56
47.	उत्तराखण्ड के परम्परागत व्यंजन और उनकी विशेषताएं	दीप्ति कोरंगा, बी.एससी. प्रथम सत्रार्ध	57
48.	राष्ट्रीय मतदाता दिवस	दीप्ति कोरंगा, बी.एससी. प्रथम सत्रार्ध	58-59
49.	एक थी प्यारी बिटिया रानी (कविता)	आलोक नौटियाल, शोधार्थी हिन्दी विभाग	59
50.	भारतीय अर्थव्यवस्था	रिया बोरा, बी.ए. द्वितीय सत्रार्ध	60
51.	पहाड़ की नारी (कविता)	निशा नेगी, एम.ए. चतुर्थ सत्रार्ध	60
52.	एक नारी (कविता)	हिमानी भाकुनी, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	60
53.	शैलेश मटियानी	पूजा बिष्ट, बी.ए. पंचम सत्रार्ध	61
54.	आजकल का खानपान	वंदना अल्मियां, एम.ए. प्रथम सत्रार्ध	62-63
55.	चींटी	प्रिया खर्कवाल, बी.एस.सी. प्रथम सत्रार्ध	63
56.	आखिर कैसी शिक्षा की जरूरत है आज	बिनोद कुमार आर्या, शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग	64
57.	शकुन्तला देवी	टीना राणा, बी.एस.सी. षष्टम् सत्रार्ध	65-66
58.	समय है असोज का (कविता)	नेहा भारती, बी.कॉम. तृतीय सत्रार्ध	66
59.	स्वतंत्रता आंदोलन में बौरारो घाटी का योगदान	खुशी भाकुनी, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध	67-68
60.	बौरारो घाटी (कविता)	सपना आर्या, एम.ए. प्रथम सत्रार्ध (इतिहास)	68
61.	वनाग्नि	महिमा बिष्ट, बी.ए. द्वितीय सत्रार्ध	69
62.	कुछ विचार (कविता)	प्रिया वर्मा, बी.ए.तृतीय सत्रार्ध	69
63.	रुपए का इतिहास	तनुजा आर्या, बी.ए. प्रथम सत्रार्ध	70
64.	मैं भी पढ़ने जाऊंगी (कविता)	अंजलि रतूड़ी, बीएससी द्वितीय सत्रार्ध	70
65.	सबको आगे आना होगा (कविता)	लक्षिता लोहनी, स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्ध	71
66.	ऐसी दुनिया में (कविता)	दीपा जोशी, बी.एस.सी. प्रथम सत्रार्ध	71
67.	हिन्दी है जन-जन की भाषा (कविता)	महेश चन्द्र, सहा. प्राध्यापक. संस्कृत	72
68.	हमारा अस्तित्व क्या ?	उपेन्द्र कुमार, कनिष्ठ सहायक	72

English Section

1.	Contribution of Women in Mathematics Evolution	Dr. Rakesh Pandey, Asst. Prof. Mathematics	74
2.	Struggle of Forests and Animals	Dr. Prachi Tamta, Asst. Prof., Zoology	75-76
3.	Empowering Future: A Comprehensive Guide for College Students in Uttarakhand to Embrace Self-Employment	Dr. Sanjay Kumar, Asst. Prof., Botany	76-78
4.	The Impact of UPI on Tourism in Rural India	Dr. Shalini Thapa, Asst. Prof. - Commerce	78-79
5.	Career Opportunities In Home Science	Dr. Harsha Rawat, Asst. Prof., Home Science	79-81
6.	Change and Culture	Neeraj Singh Pangtey, Asst. Prof., English	82-83
7.	The Science of Cooking: How Physics Shapes Every Meal	Dr. Aanchal Sati, Asst. Prof. of Physics	84-85
8.	Economic Depression 1929	Akhilesh Kumar, PhD Scholar, Commerce	86-87
9.	Dr. S. Jaishankar	Kamlesh Bhatt, B.Sc. III Semester	87-88
10.	Traditional Dishes of Uttarakhand	Shraddha Kaira, B.A. II Semester	88-89
11.	Green Supply-Chain Management: A Drive to Sustainability	Bhawna Shah, Ph.D. Scholar, Commerce Deptt.	90-91
12.	Some Infinities Are Bigger Than Other Infinities	Suyash Bisht, Research Scholar, Mathematics	92-93
13.	Lal Bahadur Shastri: A Legacy of Leadership, Integrity & Vision	Uma Kaira, B.Sc. First Semester	93-94
14.	A Dream I Dream	Dr. Shalini Thapa, Asst. Prof., Commerce	94

विभागीय आख्याएं **95-122**

हिन्दी - अनुभाग

अभिभावक अभिमत

बड़े हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की पत्रिका ''कौशिकी'' का प्रकाशन हो रहा है। यह हमारे लिए भी गर्व का विषय है कि जिस महाविद्यालय में हमारे बच्चे अध्ययन कर रहे हैं, वह महाविद्यालय निरंतर प्रगति कर रहा है। पत्रिका के प्रकाशन में छात्रों, शिक्षकों एवं प्राचार्य जी का प्रयास रहा होगा, जो आज सफल हो रहा है। महाविद्यालय के स्थापित होने के बाद पत्रिका का प्रकाशन एक उपलब्धि है। मैं आशा करता हूं कि महाविद्यालय प्रतिवर्ष पत्रिका का प्रकाशन करेगा, क्योंकि इससे हमारे बच्चों को भी बहुत कुछ सीखने और करने की प्रेरणा मिलती है। धन्यवाद।

दीवान सिंह,
अभिभावक-वंदना अल्मियां

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महाविद्यालय अपनी पत्रिका निकाल रहा है, इस कार्य में जिन भी लोगों की मेहनत रही है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। छात्र-छात्राओं के लेख कहानी कविता आदि से युक्त पत्रिका सभी बच्चों के लिए लाभदायक होगी ऐसी उम्मीद है। महाविद्यालय निरंतर प्रगति कर रहा है यह हर्ष का विषय है। महाविद्यालय में पर्याप्त मात्रा में पुस्तक भी उपलब्ध होनी चाहिए। धन्यवाद।

महेश कुमार आर्य,
अभिभावक-बबीता आर्या

बड़े हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की पत्रिका ''कौशिकी'' का प्रकाशन हो रहा है। महाविद्यालय में पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिससे बच्चे लिखना और सोचना सीखते हैं। पत्रिका हर वर्ष निकलनी चाहिए इसके लिए महाविद्यालय के सभी कर्मचारी प्राध्यापक और प्राचार्य जी को मेरा बहुत-बहुत आभार।

केवलानन्द जोशी,
अभिभावक- कोमल जोशी

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि महाविद्यालय की अपनी पत्रिका ''कौशिकी'' का प्रकाशन हो रहा है। महाविद्यालय की पत्रिका से छात्र-छात्राओं की समझ बढ़ती है, तथा वे अपनी बात को लिखना जानते हैं। मैं अपेक्षा करता हूं कि इस पत्रिका में जो भी सामग्री प्रकाशित की जाएगी वह महाविद्यालय में समस्त विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। और मैं महाविद्यालय के पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूं।

रमेश सिंह बिष्ट,
अभिभावक-पूजा बिष्ट

मैं हुकुम सिंह बोरा महाविद्यालय सोमेश्वर का आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने मुझे इस अवसर (पत्रिका कौशिकी) पर अपने विचार साझा करने का मौका प्रदान किया, बच्चों द्वारा हमें अवगत कराया जाता है कि महाविद्यालय में कंप्यूटर कक्ष की सुविधा उपलब्ध है और उन्हें स्मार्ट बोर्ड की मदद से पढ़ाया जाता है जो कि आजकल की सुविधाओं और जरूरतों को देखते हुए एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है। कुछ ऐसी बातें जिन पर मुझे लगता है कि गौर करने की आवश्यकता है जैसे महाविद्यालय समय सारणी, अनुशासन, वेशभूषा और विद्यार्थी की कक्षाएं ना चल रहीं हों तो उन्हें एक्स्ट्रा को-करिकुलर नॉलेज भी दी जानी चाहिए जैसे सामान्य ज्ञान, खेलकूद, योग इत्यादि। इसी के साथ मैं महाविद्यालय-पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

नंदन सिंह कैड़ा,
अभिभावक- श्रद्धा कैड़ा

"शिक्षा ही वह सर्वश्रेष्ठ मजबूत हथियार है, जिससे आप जीवन का कोई भी रण जीत सकते हैं।"

रोजगार के विविध अवसर और हिंदी

● डॉ. विपिन चंद्र
सहा. प्राध्यापक हिंदी

मनुष्य और भाषा का संबंध युगों-युगों से रहा है, यद्यपि यह बात उतनी ही तार्किक है कि भाषा न केवल मनुष्य की बल्कि अन्य विशेष जीवधारी के लिए भी अपने संवेदना दुख-सुख और अन्य मनोभावों को विविध माध्यमों से प्रस्तुत करने का एक साधन रही है। मनुष्य ने भाषा की उत्पत्ति को लेकर अपने विविध तर्क, ऐतिहासिक ग्रंथ एवं वैज्ञानिक खोज के माध्यम से हमारे बीच समय-समय पर प्रस्तुत किए। आपसी संवाद एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक आवश्यकता बनी भाषा धीरे-धीरे बाजार और रोजगार को प्रभावित करने लगी। अंग्रेजों का भारत में आगमन जहां हमें एक विदेशी भाषा के ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ, वहीं क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक स्तर की भाषाओं के लिए कुछ समस्याएं भी उत्पन्न करता हुआ दिखाई दिया। किंतु समय सापेक्ष क्षेत्रीय भाषाओं तथा देश की भाषा ने भी अपने को बाजार और रोजगार के लिए परिमार्जित करने का कार्य किया। आज के वर्तमान समय में बाजारवाद और भौतिकवाद के इस बहुआयामी दौर में अंग्रेजी भाषा न केवल विचारों के आदान-प्रदान तक बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और ज्ञान का भी सूचक बनती जा रही है। इस कठिन समय में हिंदी में न केवल भारतीय स्तर पर बल्कि देश से बाहर भी अपने पैर मजबूत करने के कार्य किए हैं। अब यह भाषा केवल भारत के कुछ क्षेत्र की या उत्तरी भारत की भाषा न रहकर विश्व के अन्य देशों में भी सम्मान और पहचान की भाषा बन चुकी है। नई युवा पीढ़ी द्वारा विविध साहित्य की रचनाओं, सिनेमा में पटकथा लेखन एवं संवाद लेखन, समाचार पत्रों में संपादकीय एवं विविध आकर्षक लेख हेतु, सरकारी सेवाओं एवं सिविल सेवाओं में महत्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए तथा मंचीय कवियों के द्वारा अपने लेखन में प्रयोग होने से हिंदी ने न केवल अपने बाजार के क्षेत्र को बढ़ाया है बल्कि देश के युवाओं के सम्मुख रोजगार के विविध द्वार खोलने का कार्य भी किया है। यदि आज के समय में कोई व्यक्ति या छात्र हिंदी के माध्यम से अपने पठन-पाठन की स्थिति को सुधार करने में सक्षम है, तो वह न केवल देश में रोजगार प्राप्त कर सकता है, बल्कि वह भारत के बाहर अन्य देशों में भी विविध रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकता है। पिछले कुछ दशक से कई ऐसे उदाहरण देश में सामने आए हैं जब विज्ञान एवं तकनीकी की शिक्षा प्राप्त कर चुके युवाओं के द्वारा देश की सर्वोच्च सेवा मानी जा रही प्रशासनिक एवं सिविल सर्विसेज की परीक्षाओं हेतु हिंदी साहित्य को मुख्य विषय के रूप में चुना गया है।

आज हिंदी विषय के माध्यम से हम न केवल एक शिक्षक के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं बल्कि समाचार पत्र में, न्यूज एंकर के रूप में, रेडियो या चलचित्र में संवाद लेखन के रूप में, ऑनलाइन माध्यम में, सोशल मीडिया के माध्यम से तथा अन्य विविध माध्यमों से अपने सशक्त हिंदी ज्ञान का लाभ उठाकर सामाजिक प्रतिष्ठा और रोजगार को प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी के रोजगार का क्षेत्र अब न केवल टंकण तक सीमित रह गया है बल्कि यह नई तकनीकियों में भी खूब भली-भांति प्रयुक्त हो रहा है। देश के कई प्रतिष्ठित पत्र और पत्रिकाएं अपने लेखों से हिंदी के ज्ञान को मजबूत कर रही है। आज भारत के बाहर अन्य देशों में भी यह भाषा रोजगार के कई अवसर खोल रही है।

अत: हमें हिंदी भाषा को न केवल अपने ज्ञान तक सीमित रखना है बल्कि इसके ज्ञान के माध्यम से रोजगार और बाजार को भी समझना है। बाहर की कई उत्पाद निर्माता कंपनियां बहुत अच्छी और सुंदर विज्ञापन की तकनीक से इस भाषा का प्रयोग करते हुए देश के क्रेताओं को अपनी तरफ आकर्षित करने में सफल रही हैं। विविध खेल के मैदानों से सीधे प्रसारण के माध्यम से भी कई इस भाषा के विद्वान निरंतर अपने ज्ञान की आभा देश-विदेश तक पहुंचाने में सफल हुए हैं। हमारे देश के सांसद तथा विधानसभा और विधान परिषदों में बैठने वाले चयनित नेता भी अपने किसी मुख्य सभा का संवाद या भाषण इस भाषा में पारंगत विषय विशेषज्ञ से तैयार करवा कर हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

अंतत: हम यह कह सकते हैं कि कोई भी भाषा कमजोर नहीं होती है। हमें उसके ज्ञान के स्तर को उच्च सोपान तक पहुंचाना होता है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा तकनीकी, विज्ञान और नवीन उपकरणों के प्रयोग के साथ अन्य भाषाओं और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के साथ लगातार कदम से कदम मिलाकर चल रही है।

डिजिटल क्रांति और युवा भारत

● डॉ. सी.पी. वर्मा
सहा. प्राध्यापक- भूगोल

यूपीआई अर्थात यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस जो कि 11 अप्रैल 2016 को भारत में शुरू हुआ तथा 25 अगस्त 2016 को इसे गूगल प्ले स्टोर द्वारा भारतीय बैंकों ने ऐप आधारित शुरुआत की, इसे नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) द्वारा शुरू किया गया था। आज डिजिटल क्रांति के इस दौर में भारत की डिजिटल क्रांति की सराहना हो रही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट बताती है, कि पिछले वर्षो में छोटे उद्योगों को यूपीआई द्वारा मजबूती देकर भारत को डिजिटल क्रांति और विकास के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को कितना फायदा पहुंचाया गया है। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के अनुसार किसी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए छोटे से छोटे उद्योगों को मजबूत करना गांव-गांव में डिजिटल क्रांति को पहुंचाना बहुत आवश्यक है, क्योंकि कोई भी विकास अपने वास्तविक उद्देश्य को तब तक पूरा नहीं कर सकता जब तक कि वह कमजोर से कमजोर वर्ग के लिए फायदेमंद एवं मददगार ना हो, आज देश के करीब 53 करोड़ जनधन खातों, 138 करोड़ आधार कार्ड धारक, 117 करोड़ मोबाइल उपभोक्ता के आपस में जुड़ने से आम उपभोक्ता और आम जन डिजिटल दुनिया से जुड़ चुके हैं जो आज 94 करोड़ ब्रॉडबैंड कनेक्शन धारी हैं, जबकि आज से 10 साल पूर्व केवल 6 करोड़ तक सीमित थे।

भारतीय यूपीआई भारत में तो ऑनलाइन भुगतान का माध्यम है ही, जबकि कई अन्य देश इसका भी लाभ उठा रहे हैं। यूपीआई के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकिंग सेवा का अत्यधिक लाभ पहुंचा है। ई-कॉमर्स प्लेटफार्म द्वारा छोटे व्यापारी, ग्रामीण व्यापारी को विश्व का पूरा बाजार उपलब्ध करा दिया है।

डिजिटल भुगतान का एक नकारात्मक पहलू यह भी है कि अब लूट भी ऑनलाइन हो गई है। साइबर ठगी करने वाले बहुत बड़ा खतरा भी बन गए हैं। 2024 के प्रारंभ में ही 11000 करोड़ रुपए साइबर अपराधियों द्वारा लूट लिए गए।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट द्वारा वर्ष 2023-24 में 13150 करोड़ रुपए और और वर्ष 2024-25 में दिसंबर 24, तक 11000 करोड़ लगभग हो चुका था। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2029-30 तक यह बढ़कर लगभग 50000 करोड़ रूपया हो जाएगा।

बहुत कुछ सतर्कता के साथ डिजिटल लेनदेन व्यापार और प्रगति के मामले में विकसित ही माना जाएगा। भारत देश में डिजिटल क्रांति विगत 8 वर्षो से सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का मजबूत आधार बनी है। समाज के अंतिम छोर में खड़ा व्यक्ति भी आजकल भारत की मुख्य धारा से जुड़ रहा है। भारत तकनीक के एक बड़े पॉवर हाउस के रूप में उभर रहा है। भारत अब 'जय जवान जय किसान' के साथ-साथ 'जय विज्ञान' के महत्व को भली-भांति समझने लगा है। हम आज के सभी युवा बहुत जल्दी ही भारत को विकसित देशों की श्रेणी में वैज्ञानिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति, अंतरिक्ष क्रांति, डिजिटल क्रांति, एवं आध्यात्मिक क्रांति के द्वारा विश्व पटल पर विकसित देशों में खड़ा कर देंगे और भारत बहुत जल्द महाशक्ति के रूप में विकसित देशों के साथ खड़ा दिखाई देगा।

वित्तीय वर्ष	मात्रा (करोड़ में)
2017-18	2,071
2018-19	3,134
2019-20	4,572
2020-21	5,554
2021-22	8,839
2022-23	13,462
2023-24	11,660
(11 दिसम्बर तक)	

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई), भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) और डिजीधन पोर्टल

बाप

●डॉ. जगदीश प्रसाद
सहा. प्राध्यापक- रसायन विज्ञान

जो बिन आँसू, बिन आवाज के रोता है
वो बाप होता है
जो बच्चों की किस्मत के छेद
अपनी बनियान में पहन लेता है
वो बाप होता है।

माँ रखती है नौ महीने कोख में हमें
पर नौ महीने जो दिमाग में ढोता है
वो बाप होता है।

घर में जब सबके जूते आते हैं
बाप के तलवे घिस जाते हैं
जो अपनी आँखों में सबके
सपने सँजोता है
वो बाप होता है।

दुनिया में नहीं देखना चाहता
कोई किसी को खुद से आगे
जो तुम्हें अपने से आगे देख
खुश होता है
वो बाप होता है।

होता है विवाह जब उसकी लाड़ली का
सारे लोग मस्ती में झूमे रहते हैं,
एक कोने में चुपचाप जाके
जो सिसकियाँ लेता है
वो बाप होता है।

अपने शौक को दबाकर
वक्त की सन्दूकची में
तुम्हारे शौक पूरे करता है
वो बाप होता है।

जिसे नहीं परवाह अपने समय की
पर तुम्हारे हर काम समय पर
करता है शिद्दत से
वो बाप होता है।

बाप रखवाला होता है, बाप निवाला होता है
बाप अपनी औलाद से हारकर
मुस्कुराने वाला होता है
बाप करता है कहता नहीं
बाप चलता है, रुकता नहीं, थकता नहीं
और जब बाप समझ में आए
तब तक बाप रहता नहीं।

❖❖❖

एक विचार

●डॉ. सुनीता जोशी
सहा. प्रा.- शिक्षाशास्त्र

आज अनायास उत्पन्न हो गई कविता,
मन है उदास और हृदय में दुविधा।
क्या हुआ, जो आज रात्रि के अन्धकार ने घेरा है,
स्मरण रख!
हर रात्रि के बाद अवश्यंभावी स्वर्णिम सवेरा है।
क्यों हुआ उदास? जो न पूर्ण हुआ मनोरथ,
विश्वास रख, सम्पूर्ण है तुझमें सामर्थ्य।
चिंतन कर, कर विश्लेषण,
प्रतिभाएं हैं तुझमें, अनंत विलक्षण।
कर ऊर्जा संचित, समस्त स्रोतों से,
उठा भरोसा, कर की रेखाओं से।
विस्मृत कर ग्रह, ग्रह-पत्रिका के,
कर्तव्य पथ पर हो अग्रसर,
नित्य निरंतर! नित्य निरंतर!
प्रयास प्रगाढ़ जितने होंगे,
सबल सफलता के रंग उतने होंगे!!

असीम संभावनाओं का विज्ञान: मनोविज्ञान

● प्रो. कमला डी. भारद्वाज
प्राध्यापक-मनोविज्ञान

मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसमें मानव व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। जैसे- जैसे समाज विकसित हो रहा है, मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा, कार्यस्थल, और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। यह क्षेत्र न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक विकास के लिए भी आवश्यक है। यदि आप इस क्षेत्र में करियर बनाने की सोच रहे हैं, तो यही सही समय है कि आप मनोविज्ञान (Psychology) विषय का अध्ययन आरंभ करें और नए नए कौशल अर्जित करें। इसके अंतर्गत जो वर्तमान में अवसर मौजूद हैं, वो निम्नवत हैं -

1. मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं- मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की बढ़ती संख्या के कारण, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं जैसे मनोवैज्ञानिक परामर्श और चिकित्सा सेवाओं की मांग बढ़ रही है। यह क्षेत्र मनोचिकित्सकों, काउंसलरों और थेरेपिस्ट्स के लिए अवसर प्रदान करता है। साथ ही डिजिटल प्लेटफार्मों पर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, जैसे कि टेलीथेरेपी, लोगों तक पहुँचने के नए तरीके प्रस्तुत करता है।

2. शिक्षा और विकास- शैक्षिक मनोविज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले मनोवैज्ञानिक विद्यालयों और कॉलेजों में विद्यार्थियों की समायोजन सम्बन्धी तथा सीखने की अयोग्यता जैसी समस्याओं के समाधान में मदद करते हैं। उनकी सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने तथा उनकी उपलब्धि के स्तर को बढ़ाने में भी सहयोग करते हैं। विशेष आवश्यकताओं वाले (Specially abled) विद्यार्थियों की विशेष शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता भी बढ़ रही है, जिससे इस क्षेत्र में नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

3. औद्योगिक-आर्थिक मनोविज्ञान- संगठनों में कार्यस्थल पर कर्मचारियों की भलाई और उत्पादकता बढ़ाने के लिए औद्योगिक-आर्थिक मनोविज्ञान में अवसर बढ़ रहे हैं। साथ ही टीम डायनामिक्स 'टीम सहयोग और संचार को बेहतर बनाने के लिए मनोवैज्ञानिक अनुसंधान महत्वपूर्ण निभा रहा है'।

4. दैनिक स्वास्थ्य प्रबंधन- स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों को समझने और प्रोत्साहित करने के लिए स्वास्थ्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशेषज्ञता की आवश्यकता बढ़ रही है, जैसे कि धूम्रपान की रोकथाम, वजन प्रबंधन आदि। इसके अतिरिक्त जीवनशैली परिवर्तन के द्वारा लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने में मदद करने के लिए मनोवैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है और वेलनेस सेंटर विकसित किये जा रहे हैं।

5. सामाजिक मनोविज्ञान- सामाजिक मुद्दों, जैसे कि पूर्वाग्रह, भेदभाव, और सामुदायिक संबंधों को समझने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान में अनुसंधान की आवश्यकता है। विभिन्न संस्कृतियों के बीच मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

मनोविज्ञान के क्षेत्र में भविष्य की संभावनाएं

1. अनुसंधान और विकास- मनोविज्ञान में नए शोध क्षेत्रों का उदय हो रहा है, जैसे कि न्यूरोसाइंस और सकारात्मक मनोविज्ञान। अनुसंधान में करियर के अवसर बढ़ रहे हैं।

2. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI): AI का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पहचान और उपचार में किया जा रहा है। मनोवैज्ञानिकों को तकनीकों के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

डाटा एनालिटिक्स के क्षेत्र में भी बड़े डेटा का विश्लेषण करके मानव व्यवहार को समझने और पूर्वानुमानित करने के लिए नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

3. ग्लोबलाइजेशन- वैश्वीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियों के बीच मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए अधिक अवसर उपलब्ध होंगे।

4. सामाजिक मीडिया का प्रभाव- सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों का मानव व्यवहार पर प्रभाव के अध्ययन के लिए एक नया क्षेत्र खुल रहा है।

5. पारिवारिक और सामुदायिक मनोविज्ञान- परिवारों और समुदायों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को समझने और समाधान खोजने के लिए कार्यक्रम विकसित किए जा रहे हैं। सामुदायिक समर्थन नेटवर्क का विकास करने में भी मनोवैज्ञानिकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।

6. तकनीकी नवाचार- डिजिटल तकनीकी जैसे कि टेलीथेरेपी और ऐप्स का उपयोग करके मनोवैज्ञानिक सेवाएं अधिक सुलभ हो रही हैं। यह क्षेत्र नए शोध और विकास के लिए अवसर प्रदान करेगा।

7. क्लीनिकल साइकोलॉजी- भविष्य में उभरते अवसरों के रूप में मनोविज्ञान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र नैदानिक मनोविज्ञान (क्लीनिकल साइकोलॉजी) है। अच्छी संभावनाओं और प्रतिष्ठा के लिए क्लीनिकल साइकोलॉजी को कॅरियर के रूप में चुन सकते हैं। क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट का काम मरीज की सोच और व्यवहार से उसके जीवन में आने वाले प्रभावों पर केंद्रित होता है। उन्हें मेडिसिन देने का अधिकार नहीं होता, पर वे मनोचिकित्सा के गंभीर मामलों, जैसे सिजोफ्रिनिया, ओसीडी आदि में मनोवैज्ञानिक टेस्ट्स, थेरेपी आदि से संबंधित सेवाएं देते हैं।

मनोविज्ञान में करियर बनाने की राह

मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) में पी.जी. डिग्री, एक साल का प्रोफेशनल डिप्लोमा या चार साल की डाक्टर ऑफ साइकोलॉजी डिग्री लेकर साइकोलॉजिस्ट के रूप में कार्य कर सकते हैं। एम.ए. साइकोलॉजी या संबंधित स्पेशलाइजेशन में एम.ए. के बाद काउंसलर और किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ के तौर पर प्रैक्टिस शुरू कर सकते। कम से कम 1 साल की इंटर्नशिप या प्रैक्टिस भी करना जरूरी है।

इन दिनों कुछ विशेषज्ञता क्षेत्रों की मांग बहुत हुई है, जैसे मैरिज एंड फैमिली ' थेरेपिस्ट कॉउन्सलरों का करियर' नशीली दवाओं या किसी प्रकार की लत छुड़ाने वाले एडिक्शन रिकवरी थेरेपिस्ट भी इन दिनों बहुत मांग में हैं। क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट के लिए कुछ समय की ट्रेनिंग अनिवार्य है, जिसमें क्लीनिक्स (अस्पतालों) में साइकियाट्रिस्ट के साथ काम करना होगा। स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए रिहैबिलिटेशन काउंसिल ऑफ इंडिया में रजिस्ट्रेशन कराना होगा, तभी भारत में प्रैक्टिस कर सकते हैं।

काउंसलिंग साइकोलॉजिस्ट या काउंसलर- जीवन के कई क्षेत्रों में परामर्श प्रदान करते हैं। सामान्य जीवन में रिश्तों की समस्याओं, करियर, भावनाओं के प्रबंधन आदि से संबंधित समस्याओं के लिए सलाह देते हैं, जैसे- मैरिज काउंसलर्स, इंडस्टीरियल-ऑर्गेनाइजेशनल साइकोलॉजिस्ट का काम भी तेजी पकड़ रहा है, क्योंकि अब हर ऑर्गेनाइजेशन में इनको रखना अनिवार्य होता जा रहा है।

प्रमुख कोर्स

डिग्री कोर्स

- साइकोलॉजी में बी.ए., बी.एस.सी, एम.ए., एम.एस.सी. क्लीनिकल साइकोलॉजी में एम.ए., एम.एस.सी.
- एप्लाइड साइकोलॉजी में एम.ए., एम.एस.सी. क्लीनिकल साइकोलॉजी में एम.फिल.

डिप्लोमा कोर्स

क्लीनिकल साइकोलॉजी, रिहैबिलिटेशन थेरेपी, फैमिली थेरेपी, चाइल्ड थेरेपी, काग्निटिव बिहेवियर थेरेपी में पोस्ट ग्रेजुएशन डिप्लोमा।

प्रमुख संस्थान-

- कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
- एस.एस.जे. विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा
- रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च, बेंगलुरु

पैसे बर्बाद न करें, बचत और निवेश की एक आदत बनाएं

●डॉ. विवेक कुमार आर्या
सहायक प्राध्यापक- वाणिज्य

आज हर विद्यार्थी के लिए यह समझना बहुत आवश्यक हो गया है कि किस प्रकार यदि हम कम आयु में ही बचत और निवेश करना प्रारम्भ कर दें तो निश्चित रूप से हम अपने भविष्य के वित्तीय लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकेंगे। इस लेख को पढ़कर कई विद्यार्थियों के मन में यह भाव भी जरूर आएंगे कि हमारा बचत एवं निवेश से क्या लेना-देना है क्योंकि हम तो अभी कमाते ही नहीं है और जो कुछ पैसे माता-पिता से मिलते भी हैं वह भी बहुत कम हैं । इसके अलावा सबसे गलत धारणा यह है कि अभी तो हम जवान हैं और बहुत समय पड़ा है। हमारे पास बचत और निवेश का ....तो फिर चिंता किस बात की। आज के युवा अच्छी शिक्षा, नौकरी, स्वास्थ्य, गाड़ी, एक सुखी परिवार, अपने खुद के घर तथा बेफिक्र रिटायरमेंट लाइफ की इच्छा तो जरूर रखते हैं, परंतु हालात यह है कि देश में लगभग 50 प्रतिशत युवा अपनी पूरी कमाई यहाँ तक कि इससे ज्यादा भी, महंगे फोन, कपड़ों, रेस्टोरेन्ट में खाने, ऑनलाइन गेमिंग, मनोरंजन आदि में खर्च कर देते हैं। जबकि कुछ युवा ऐसे भी हैं जो छात्र जीवन से ही बचत और निवेश के महत्व को समझ कर आज वित्तीय रूप से सुदृढ़ हैं। जरा हट के सोचिए, आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि यदि आप 18 वर्ष की आयु से हर सप्ताह 5 रु0 निवेश करते हैं और मान लीजिये कि ब्याज दर 8% है तो जब आप 65 वर्ष के होंगे तब आप के पास कुल 1,34,000 रु0 होंगे। युवाओं के पास हमेशा से अन्य आयु वर्ग के लोगों की तुलना में ज्यादा समय होने के कारण अपने सपनों और वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की ज्यादा संभावनाएँ होती हैं।

किसी व्यक्ति के लिए स्वयं और अपने परिवार के लिए बचत और निवेश करने के बहुत से कारण हो सकते हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कारण होता है, एक आरामदायक और सुरक्षित रिटायरमेंट लाइफ। जब व्यक्ति वृद्धावस्था में हो और उसके पास दिन-प्रतिदिन के खर्चों, बढ़ती महंगाई, बिगड़ते स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त वित्त व्यवस्था ना हो तब इन बचतों और निवेशों का महत्व पता लगता है। क्योंकि यह एक कटु सत्य है कि भविष्य अनिश्चित है और न जाने कब किसे कहाँ किसी आपात स्थिति या संकटकाल में पैसों की जरूरत पड़ जाए। यह जानने के बाद भी कि बढ़ती महंगाई के साथ वर्तमान की तुलना में भविष्य के जीवन निर्वाह की लागत बहुत ज्यादा होगी फिर भी हम गैर-जरूरी चीजों पर अत्यधिक खर्च करते ही जा रहे हैं । आज बाजार में आपकी जरूरतों के हिसाब से विभिन्न अल्प, मध्यम एवं दीर्घकालीन बचत एवं निवेश विकल्प उपलब्ध हैं जिनसे उचित ब्याज एवं अन्य लाभ (रिटर्न) प्राप्त कर सकते हैं । जैसे बैंक जमा, पोस्ट ऑफिस जमा, बॉन्ड, स्टॉक मार्केट, म्यूचुअल फंड तथा अन्य सरकारी निवेश योजनाएँ आदि। इनमें से कई विकल्प जोखिम रहित एवं जोखिम सहित भी होते हैं जिनमें सोच समझकर निवेश करना होता है। तो अपनी आदत बदलिए और मुद्रा के समय मूल्य की ताकत को पहचानें और अपना जीवन आनंदमय बनायें । 'पहले बचत करें फिर खर्च' अर्थात् आय प्राप्त होते ही पहले बचत की राशि अलग कर लें और उसके बाद ही शेष बची राशि को खर्च करें । पहली प्राथमिकता खुद के वित्तीय लक्ष्यों और सपनों को पूरा करने को दें न कि फिजूलखर्ची को। नीचे दी गयी सारणी के अनुसार आप जल्दी बचत और निवेश करने के लाभ और मुद्रा के समय मूल्य की ताकत को आसानी से समझ सकते हैं।

मुद्रा का समय मूल्य

निवेशक 'अ' 25 वर्ष की आयु में प्रति वर्ष 10 वर्ष के लिए 2000 रु0 निवेश करता है, जबकि निवेशक 'ब' 10 वर्ष इंतजार करने के बाद, फिर 31 वर्षो तक प्रतिवर्ष 2000 रु0 निवेश करता है। आप स्वयं तय कीजिये की कौन ज्यादा फायदे में रहा। मान लीजिए कि चक्रवृद्धि ब्याज की निश्चित दर 9 प्रतिशत मासिक है और सभी ब्याज खाते में प्रत्येक माह क्रेडिट कर दिया जाता है ताकि ब्याज पर ब्याज कमाया जा सके।

निवेशक 'अ'				निवेशक 'ब'			
आयु	वर्ष	निवेश	वर्ष के अन्त में मूल्य	आयु	वर्ष	निवेश	वर्ष के अन्त में मूल्य
25	1	2000	2,188	25	1	0	0
26	2	2000	4,580	26	2	0	0
27	3	2000	7,198	27	3	0	0
28	4	2000	10,161	28	4	0	0
29	5	2000	13,192	29	5	0	0
30	6	2000	16,617	30	6	0	0
31	7	2000	20,363	31	7	0	0
32	8	2000	24,461	32	8	0	0
33	9	2000	28,944	33	9	0	0
34	10	2000	33,846	34	10	0	0
35	11	0	37,021	35	11	2000	2,188
40	16	0	57,963	40	16	10,000	16,617
45	21	0	90,752	45	21	10,000	39,209
50	26	0	1,14,089	50	26	10,000	74,580
55	31	0	2,22,466	55	31	10,000	1,29·961
60	36	0	3,48,311	60	36	10,000	2,16,670
65	41	0	5,45,344	65	41	10,000	3,52,427
रिटायरमेंट पर प्राप्त कुल धनराशि			**5,45,344**	रिटायरमेंट पर प्राप्त कुल धनराशि			**3,52,427**
(–) आपका निवेश			**20,000**	(–) आपका निवेश			**62,000**
शुद्ध प्राप्ति			**5,25,344**	शुद्ध प्राप्ति			**2,90,427**

तो देखा आपने किस प्रकार 'अ' ने कम आयु में निवेश प्रारम्भ कर कुल 10 वर्षों में ही, मात्र 20,000 के निवेश से अपने रिटायरमेंट पर 5,25,344 रु0 अर्जित कर लिए जबकि 'ब' कुल 31 वर्षों तक निवेश करने के बाद भी 62,000 रु0 (अ की तुलना में 42,000 रु0 अधिक) जमा कर केवल 2,90,427 रु0 ही अर्जित कर पाया।

भारतीय संस्कृति

● डॉ. अनिल सिंह भरड़ा
इतिहास विभाग

संस्कृति शब्द सम उपसर्ग के योग से संस्कृत की कृ धातु के साथ क्तिन प्रत्यय जुड़ने से बनता है, जिसका अर्थ है – शुद्धि, परिष्कार या सुरूचिपूर्ण आचार विचार। हिंदी में यह शब्द अंग्रेजी के कल्चर शब्द का पर्याय माना जाता है। संस्कृति शब्द विभिन्न समय में भिन्न-भिन्न अर्थो में प्रयुक्त हुआ है। जहाँ एक ओर कवि व कलाकार के लिए सौंदर्य चेतना के विकसित और जटिल रूप संस्कृति के आवश्यक अंग हैं तो वहीं नीतिशास्त्र के ज्ञाताओं के लिए सदाचार एवं सद्व्यवहार संस्कृति का अनिवार्य अंग है। मनुष्य का समस्त सीखा हुआ व्यवहार सामाजिक परंपरा से प्राप्त होता है। इस अर्थ में संस्कृति को सामाजिक प्रथा का पर्याय भी कहा जा सकता है।

संस्कृति का सम्बन्ध संस्कारों से है, और संस्कार मनुष्य को शुद्ध एवं परिष्कृत करते हैं। इस तरह संस्कृति उन गुणों का समुदाय भी है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाते हैं। संस्कृति शब्द अत्यंत व्यापक है। सभी प्रकार के आचार, व्यवहार, संगीत, कला, लोकगीत, धर्म, दर्शन इत्यादि संस्कृति के अर्न्तगत निहित रहते हैं। संस्कृति केवल व्यक्ति विशेष के द्वारा नहीं बल्कि समूह द्वारा किये गये प्रयासों से बनती है। मानव सदैव विभिन्न स्थानों पर रहते हुए कई प्रकार के सामाजिक वातावरण, लिपि, भाषा, धर्म एवं कलाओं का विकास कर संस्कृति का निर्माण करता है। इस प्रकार संस्कारों से संस्कृति निर्मित होती है। प्रत्येक राष्ट्र ने अपने राष्ट्र के उन्नयन हेतु कितना प्रयास किया है इसका पता संस्कृति से ही चलता है। संस्कृतियों का आदान-प्रदान, मिलन आदि होता रहता है। यह इतिहास की विशेषता रही है। मध्ययुग में अरबों ने भारत की चिकित्सा पद्धति को अपनाया, हमने उनके अंको, बीजगणित इत्यादि को अपनाया। संस्कृति को विकसित व संचित करने में लंबा समय व्यतीत होता है।

भारतीय संस्कृति युगों-युगों से अविच्छिन्न है। भारतीय संस्कृति ने अपनी समकालीन संस्कृतियों-सभ्यताओं, जैसे- रोम, यूनान, मिस्र, बेबीलोन आदि से भी कुछ न कुछ ग्रहण किया व उन्हें भी कुछ न कुछ दिया। देखने लायक बात यह है कि जहाँ अन्य संस्कृतियों में बहुत अधिक परिवर्तन हुए, वहीं भारतीय संस्कृति अपने मूल रूप में अभी तक जीवित है एवं अनेक गुणों जैसे- उदारता, विश्वबंधुत्व आदि के कारण उसकी नवीनता सदैव बनी रहती है। चाहे हिमालय की चोटी हो या गंगा के कछार, विंध्याचल की घाटियों में व कावेरी के तटों में हमेशा पुरातन संस्कृति के प्रतीक दिखाई देते है।

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के निर्माण एवं विकास की भिन्न-भिन्न परम्परा रही है। चाहे बौद्धों का अहिंसावाद हो या जैनों का जीवनवाद इनको वैष्णव धर्मानुयायियों ने पूरी तरह अपनाया है यह भी स्वयं में उदाहरण है संस्कृति प्रसार का। वस्तुत: देखा गया है कि भारतीय संस्कृति ही वैदिक संस्कृति के रूप में विकसित हुई। यह संस्कृति इतनी पुरातन, व्यापक व समृद्ध, है कि उसमें विश्व संस्कृति के तत्वों का दर्शन किया जा सकता है। उसमें खस, किरात, यवन, फारसी, यहूदी और ईसाई संस्कृति का समावेश होता गया। इसी परिवेश के कारण भारतीय संस्कृति व्यापक बनी हुई है।

प्राचीन काल में भारतभूमि में प्रवेश करने वाली जातियों में नीग्रो का वर्णन आता है जिसने प्रस्तर युग में भारत में प्रवेश किया। नीग्रो के पश्चात आस्ट्रिक जाति व एशिया माइनर की अर्मनाइड जातियों ने विलय होकर नई संस्कृति को विकसित किया, धीरे-धीरे समस्त भारत में यह फैल गया। हड़प्पा व मोहनजोदाड़ो की संस्कृति निर्माण में द्रविड़ लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हड़प्पा के पश्चात आर्य, वैदिक धर्म के अनुयायी थे। वैदिक परम्पराओं को न मानने के कारण ही उन्होंने अन्य लोगों को अनार्य नाम दिया। भारत

में वैदिक संस्कृति के निर्माण में भरत जन को विशेष सहयोग मिलता है। दुष्यंत व शकुंतला के पुत्र भरत के नाम से ही देश का नाम भारत कहलाया। भरत जन के दो मुख्य राजाओं देवोदास व सुदास का वर्णन वैदिक साहित्य में उपलब्ध है। अपनी वीरता, पराक्रम से अपनी विरोधी आर्यजनों व दास-दस्यों को पराजित किया। भरतों ने ही इस देश में आर्यो की अन्य शाखाएं बनाई।

उत्तर वैदिक काल में परिस्थितियां परिवर्तित हुई और नारद पुराण के प्रसंग से ज्ञात होता है कि कंठगत ज्ञान विस्मृत होने लगा। परम्परागत वैदिक ज्ञान को सुरक्षित रखने तथा ज्ञान के नये प्रकारों को गतिबद्ध करने के लिए तत्कालीन विद्वानों ने अनेक प्रयत्न किये। सूत्रग्रंथो का निर्माण इन्हीं में से एक है। भोजपत्र व ताम्रपत्रों पर ग्रंथ लेखन की परंपरा सूत्रग्रंथों से ही आरंभ हुई। इसी क्रम में विद्वानों ने ऋग्वेद को सबसे प्राचीन ग्रंथ माना।

भारत के प्राचीन आर्यो ने अपने सांस्कृतिक विकास व प्रसार में जाति, द्वेष, वैमनस्य को कभी स्थान नहीं दिया। वैदिक उपनिषद काल के पश्चात तंत्र युग में लोकसंस्कृति को अत्यधिक बल प्राप्त हुआ। भारतीय लोकसंस्कृति की व्यापकता एवं महत्व को सूफी मत ने भी स्वीकार किया है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के विकास की तुलना उस महानदी से की जा सकती है जो अपने गंतव्य स्थान में पहुंचने से पहले असंख्य छोटी-छोटी नदियों को आत्मसात करते हुए बहती है। समग्र रूप से देखा जाए तो वैदिक कालीन सामाजिक जीवन के पांच आधार स्तंभ थे। जैसे - पारिवारिक जीवन, ऋण, वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, चार वर्ग तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरूषार्थ। इस प्रकार भारतीय संस्कृति सर्व कल्याणकारी रही। इसके द्वारा न केवल अपने अनुयायियों के लिए वरन समस्त मानवों के लिए पोषक एवं मंगलकारी प्रभाव उत्पन्न होता है।

सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया।

भारतीय संस्कृति की अवधारणा है कि प्रत्येक कार्य का प्रभाव, कर्ता तक ही सीमित न रहकर समस्त ब्रह्मांड पर पड़ता है। जिस प्रकार सरोवर के जल में पत्थर फेंकने या हलचल करने से उसमें उत्पन्न तरंगें समस्त सरोवर में फैलकर सम्पूर्ण जलराशि को प्रभावित करती हैं, उसी प्रकार समस्त जीवों, जीवों की देह व इन्द्रियों आदि की समस्त हलचलें वायुमण्डल में फैलकर सर्वत्र व्याप्त हो जाती हैं। जीवन के आशावादी दृष्टिकोण के परिचायक अनेक सन्दर्भ वेदों तथा वैदिक साहित्य में देखने को मिलते हैं। संकीर्णता, हीनता आदि भावों से अछूता रहकर वह सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहने की सदा इच्छा करता है।

भारतीय सामाजिक जीवन हमेशा से पारस्परिक एकता, सहयोग, सदभाव व संगठन पर आधारित रहा है। बौद्ध धर्म ने आर्यावर्त के जातीय बंधनो को तोड़कर एकरूपता प्रदान करने में योगदान दिया। भगवान बुद्ध ने जातिवाद की निंदा करके ब्राह्मणों के प्रभुत्व का विरोध किया। बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति को विस्तार प्रदान करने में सहायक हुआ व भारतीय संस्कृति में उदारता व सहिष्णुता आई। लोकसंस्कृति के बीज का आरोपण बौद्धधर्म से ही शुरू हुआ। बुद्धकालीन भारत में ग्राम भारतीय समाज का केन्द्र बिन्दु था।

भारतीय संस्कृति एक ऐसा संगम है, जिसमें पुरातन और आधुनिक काल का एक साथ समन्वय देखने को मिलता है। जिसने वैदिक आदर्शो पर चल कर अपना विकास किया तथा सभी अन्य संस्कृतियों को अपने भीतर समेटा। मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति की परम्परा को उजागर करने में हिन्दू राजाओं ने योगदान दिया, व भारतीय संस्कृति की रक्षा और उन्नति को उन्होनें अपनी गौरव वृद्धि के रूप में देखा। मुगलों के बाद देश पर अंग्रेजों का शासन हुआ। इस काल खण्ड में हिन्दू- इस्लामी समन्वय की धारा अवरूद्ध हो गयी और संस्कृति की परम्परागत प्रगति भी बाधित हुई। नई शिक्षा ने शिक्षार्थी को अतीत से दूर कर दिया। किन्तु संस्कृति रक्षा के लिए ब्रह्म समाज, आर्यसमाज आदि का जन्म हुआ। इस प्रकार भारतीय संस्कृति को प्राचीन भारत में अनेक पहलुओं ने प्रभावित किया।

❖❖❖

देवीधुरा का बग्वाल मेला- ऐतिहासिक परिचय

● डॉ. कंचन वर्मा
सहा. प्राध्यापक - इतिहास

श्रावण मास में हजारों श्रद्धालुओं को आकर्षित करने वाला पौराणिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक स्थल देवीधुरा अनूठे तरह के पाषाण युद्ध मेले (बग्वाल) के लिए भारतवर्ष में प्रसिद्ध होता जा रहा है। जहाँ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को बीसियों हजार दर्शक पाषाण युद्ध देखने आते हैं।

मध्य हिमालय की सुन्दर उपत्यकाओं के बीच स्थित कुमाऊं मण्डल के चंपावत जनपद मुख्यालय से लगभग 50 किमी दूरी पर बसे देवीधुरा क्षेत्र में स्थित है -माँ बाराही देवी धाम। यह स्थान एक ओर पौराणिक संस्कृति तथा आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र है, वहीं अनेकों ऐतिहासिक मान्यताओं से जुड़ा होने के कारण महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इसके चारों ओर जो अनेक गढ़-डगरोकोट, मूलाकोट, कानीकोट, फुलाराकोट, कालजाकोट, सुनकोट, तथा रौतेलाकोट आदि से इसके मध्य में तथा सर्वोच्च गढ़ की स्थिति होने का भी बोध होता है।

बाराही शक्ति माँ आद्याशक्ति का प्रतीक है। भगवान विष्णु के बाराह अवतार के दौरान उनके वामांग में स्थान पाने से बाराही माँ कहलायी। आधुनिक चकाचौंध से दूर यह स्थान प्राचीन काल में गुह्य काली का उपासना केन्द्र था। पौराणिक कथाओं के अनुसार देवीगणों को शान्त करने के लिए चीनासार पद्धति से नरबलि दी जाती थी। ये पद्धति बाद में एक प्रथा के रूप में प्रचलित हो गयी। तत्पश्चात यहां रहने वाले चार खामों- वालिक, लमगड़िया, चम्याल, गहड़वाल से प्रति वर्ष एक बलि दी जाने लगी। ऐसा माना जाता है कि चम्याल खेमे की एक बृद्धा के पौत्र की बारी आयी, जो उसके वंश का अकेला वारिस था तो बृद्धा ने देवी माँ की आराधना की। माँ ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन देकर कहा कि देवी गणों को प्रसन्न करने के लिए कोई अन्य उपाय सोचो। तब चारों खामों के प्रधानों ने मिलकर विचार विमर्श किया और नरबलि बंद करवाकर बग्वाल प्रारम्भ की जाय ताकि पत्थरों से लगने वाली चोट से एक व्यक्ति के रक्त के बराबर रक्त बहे और देवीगण प्रसन्न हो जायें।

बग्वाल मेला श्रावण मास के शुक्लपक्ष एकादशी से भाद्रपद कृष्ण द्वितीया तक चलता है। प्रतिवर्ष श्रावणी शुक्ल एकादशी को मंगलाचरण, स्वस्तिवाचन, सिंहासन डोला, सांगी पूजन से प्रारम्भ होता है। यहां तांबे के संदूक में तीन मूर्तियां - सरस्वती, बाराही तथा काली माँ की हैं। तांबे का यह सन्दूक मुख्य मंदिर में रखा गया है। यह संदूक वर्ष भर बंद रहता है। बंद ताले में ही इनकी पूजा होती है। किसी ने भी बाराही माँ की प्रतिमा को नहीं देखा है और ना ही इन्हें देखने का साहस किसी को है। बग्वाल के दिन माँ की इन मूर्तियों को संदूक से बाहर निकाल कर इनकी पूजा अर्चना कर इन्हें फिर संदूक में रख दिया जाता है। पूर्णिमा के दिन चार खेमों व सात तोकों के प्रधान, पुजारी व आचार्यो की उपस्थिति में मिलते हैं। तदुपरान्त आद्याशक्ति माँ बाराही का डोला मंदिर प्रागंड़ में रखा जाता है। फिर प्रसाद वितरण होता है। प्रसाद वितरण के पश्चात चारों खेमों के प्रधान अपनी-अपनी पोषाकों में बाराह वाहिनी के साथ खोलखाड़ दुर्वाचौड़ को प्रस्थान करते हैं। दुर्वाचौड़ पहुंचने के पश्चात कोरी बग्वाल प्रारम्भ होती है। बग्वाल के दौरान चारों खामों के बीच भीषण पाषाण युद्ध होता है दूसरी ओर पुजारी देवी की पूजा जारी रखते हैं। पत्थर की चोट में एक मानव के बराबर रक्त निकल जाने पर पुजारी को दैवीय प्रेरणा से बग्वाल बंद किये जाने का संकेत मिल जाता है। पुजारी जी के युद्ध के मैदान में आते ही बग्वाल बंद हो जाती है। तभी मैदान में उपस्थित रणबांकुरे आपस में गले मिलते हैं और एक दूसरे को बग्वाल के दौरान आयी चोटों का उपचार बिच्छु घास से करते हैं।

देवीधुरा में बाराही देवी का मंदिर आस्था का केन्द्र है। जहां एक ओर यह महत्वपूर्ण स्थान पाण्डवों के वनवास से लेकर बौद्धों के हीनयान व महायान धर्म के प्रमाणों से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी ओर यह स्थान सनातन धर्म के प्रचारक एवं चार धामों के संस्थापक जगतगुरू शंकराचार्य द्वारा देवी कीलक की कथा को समेटे हुए है। यह स्थान अपने आप में अनेक आध्यात्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक साक्ष्यों को समेटे हुए हैं।

❖❖❖

समान नागरिक संहिता

●डॉ. नीता टम्टा
असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र

समान नागरिक संहिता भारत में एक अत्यधिक विवादित और राजनीतिक रूप से ज्वलंत मुद्दा रहा है। पूर्व में विधि आयोग ने समान नागरिक संहिता के लिए कहा था। ''न तो आवश्यक है ना ही वांछनीय।''

समान नागरिक संहिता का उल्लेख संविधान के 44वें अनुच्छेद में किया गया है जो राज्य के नीति निदेशक तत्वों का अंग है। अनुच्छेद 44 में वर्णित है कि, राज्य भारत के समस्त राज्य क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता बनाने करने का प्रयास करेगा। समान नागरिक संहिता का कुछ लोगों द्वारा इसलिए समर्थन किया गया कि यह राष्ट्रीय अखंडता और लैंगिक न्याय को बढ़ावा देता है। और कुछ लोगों द्वारा इसलिए विरोध किया गया कि यह धार्मिक स्वतंत्रता और विविधता के लिए खतरा है।

भारतीय संविधान में गोवा को विशेष राज्य का दर्जा मिला हुआ है संसद द्वारा गोवा को पुर्तगाली सिविल कोर्ट लागू करने का अधिकार दिया गया था। अतः गोवा देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां समान नागरिक संहिता लागू है, शेष भारत में वर्तमान समय में भी धार्मिक या सामुदायिक पहचान के आधार पर विभिन्न पर्सनल लॉज का पालन किया जाता है जैसे -मुस्लिम, हिंदू, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी और यहूदी अपने पर्सनल लॉज का पालन करते हैं।

समान नागरिक संहिता का ड्राफ्ट तैयार करने वाली पांच सदस्य समिति की रिपोर्ट के अनुसार सऊदी अरब, तुर्की, इंडोनेशिया, नेपाल, फ्रांस, अजरबैजान, जर्मनी, जापान और कनाडा आदि देशों में समान नागरिक संहिता लागू है। हमारे देश में समान नागरिक संहिता लागू करने में बहुत सी समस्याएं आ रही है। भारत विविध धर्मों, संस्कृतियों और परम्पराओं का देश है। प्रत्येक समुदाय के अपने व्यक्तिगत कानून और रीति-रिवाज हैं। ऐसी विविधता के बीच समान नागरिक संहिता लागू करना अत्यंत कठिन एवं जटिल है। बहुत से धार्मिक एवं अल्पसंख्यक समूह समान नागरिक संहिता को अपने धार्मिक और सांस्कृतिक स्वायत्तता के विरुद्ध मानते हैं। उनका मानना है कि यदि देश में समान नागरिक संहिता लागू होती है तो उनकी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान की उपेक्षा होगी और साथ ही अनुच्छेद 25 (अनुच्छेद 25- अंत:करण की और धर्म को अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।) के अंतर्गत उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करेगी।

समान नागरिक संहिता को लागू करने के संबंध में सरकार, विधायिका, न्यायपालिका और समाज के बीच राजनीतिक इच्छा शक्ति एवं सर्वसम्मति की कमी है। यह भी आशंका व्यक्त की गई है कि समान नागरिक संहिता समाज में सांप्रदायिक तनाव को पैदा कर सकती है।

समान नागरिक संहिता के बहुत से फायदे हैं। समान नागरिक संहिता सभी नागरिकों के बीच एक समान पहचान

और अपनेपन की भावना पैदा करके राष्ट्रीय एकता एवं धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देगी। समान नागरिक संहिता लागू होने से सांप्रदायिक और पंथ-संबंधी विवादों में कमी आएगी। यह सभी नागरिकों के लिए समानता, बंधुता और गरिमा के संवैधानिक मूल्यों को भी संतुष्ट करेगी।

समान नागरिक संहिता लागू होने से महिलाओं के साथ होने वाला भेदभाव और उत्पीड़न दूर होगा, उन्हें लैंगिक न्याय व समानता प्राप्त होगी। विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, गोद लेने, भरण-पोषण आदि मामलों में महिलाओं को समान अधिकार और दर्जा प्राप्त हो सकेगा। समान नागरिक संहिता द्वारा महिलाएं सशक्त होंगी व उनके मूल अधिकारों की रक्षा होगी तथा पितृ सत्तात्मक और प्रतिगामी प्रथाओं को चुनौती देने में सक्षम होंगी।

समान नागरिक संहिता विभिन्न पर्सनल लॉज की जटिलताओं और विरोधाभासों को दूर करके कानूनी प्रणाली को सरल और युक्ति संगत बनाएगी। समान नागरिक संहिता के द्वारा प्राचीन एवं प्रतिगामी प्रथाओं का आधुनिकरण होगा व इनमें सुधार आएगा। समान नागरिक संहिता के द्वारा प्राचीन प्रथाओं जैसे- तीन तलाक, बहु विवाह, बाल विवाह आदि जो संविधान में वर्णित मानव अधिकारों और मूल्यों के विरुद्ध है, को समाप्त किया जा सकता है।

समान नागरिक संहिता का इतिहास लगभग 100 साल से भी ज्यादा पुराना है 19वीं शताब्दी में शासकों ने अपराधों, सबूत और अनुबंधों से संबंधित भारतीय कानून के संहिताकारण में एकरूपता की आवश्यकता पर बल दिया था। किंतु तब हिंदुओं और मुसलमानों के व्यक्तिगत कानून को इस तरह के कानून से बाहर रखे जाने की सिफारिश की गई थी। अंग्रेजों ने 1861 में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और 1882 में अपराध प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) बनाकर अपराध कानून के मामले में सभी को बराबर बना दिया था। विधवा-विवाह, बाल-विवाह, निषेध के लिए भी कानून बनाएं, किंतु यह मामले अधिक संवेदनशील होने के कारण उन्होंने इसमें अधिक रुचि नहीं दिखाई।

स्वतंत्रता के पश्चात लोगों का समान नागरिक संहिता की ओर विशेष ध्यान आकर्षित हुआ किंतु इसके लिए भी देश में अलग-अलग तरह के विचार थे। डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने समान नागरिक संहिता का पुरजोर समर्थन किया ताकि स्त्रियों एवं दलितों को समाज में बराबरी का हक मिल सके। समान नागरिक संहिता पर संविधान निर्माताओं ने भी विचार-विमर्श किया था। भारत के पहले कानून मंत्री भीमराव अंबेडकर जिन्हें 'संविधान का जनक' कहा जाता है ने समान नागरिक संहिता के समर्थन में कहा कि 'समान नागरिक संहिता' में कुछ भी नया नहीं है। विवाह, उत्तराधिकार के क्षेत्र को छोड़कर देश में पहले से ही एक कॉमन सिविल कोड मौजूद है जो संविधान के मसौदे में समान नागरिक संहिता का भी मुख्य लक्ष्य है।

डॉ. अंबेडकर ने यह भी तर्क दिया कि आखिर हमें यह आजादी किसलिए मिल रही है? हमें यह स्वतंत्रता अपनी सामाजिक व्यवस्था को सुधारने के लिए मिल रही है जो असमानताओं, भेदभावों और अन्य चीजों से इतनी भरी हुई है, जो हमारे मौलिक अधिकारों के साथ टकराव करती है। इसलिए किसी के लिए भी यह कल्पना करना बिल्कुल असंभव है कि पर्सनल लॉ को राज्य के अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा जाएगा।

आजादी के बाद बनी सरकार में कानून मंत्री डॉ. अंबेडकर ने हिंदू समाज के कानूनों में संशोधन हेतु हिंदू कोड बिल बनाया और इसे पारित करने के लिए बहुत प्रयास किया। 1951 के आम चुनाव में नेहरू जी ने यह मुद्दा जनता के सामने रखा और चुनाव जीतने के बाद 1955-56 में हिंदू कोड बिल को चार कानूनों के रूप में पारित किया। हिंदू मैरिज एक्ट 1955, हिंदू सक्सेशन एक्ट 1956, किन्तु मुस्लिम समाज का शरीयत एप्लीकेशन एक्ट 1937 बरकरार रहा जो कि चार निकाह, तीन तलाक और हलाला जैसी प्रथाओं को वैध बताता है। ये प्रथाएं 1400 वर्ष पुरानी हैं। संविधान सभा में वल्लभभाई पटेल और डॉ. अंबेडकर ने समान नागरिक संहिता को ऐच्छिक रखने की सहमति जाहिर की थी।

21वें विधि आयोग ने 2018 में समान नागरिक संहिता की रिपोर्ट में परिवार कानूनों और पर्सनल लॉ में भेदभाव को ठीक करने के लिए चरणबद्ध तरीके से कानूनी बदलाव पर जोर दिया। 22वें विधि आयोग ने समान नागरिक संहिता के विषय में 19 लाख से ज्यादा सुझाव प्राप्त किए हैं। संसदीय समिति, विधि आयोग व विधि मंत्रालय ने मिलकर यह निर्णय लिया है कि समान नागरिक संहिता के अंतर्गत आदिवासी समूह के रीति-रिवाज को सुरक्षित रखा जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने कई निर्णय में सरकार से समान नागरिक संहिता को लागू करने का आह्वान किया है जैसे- शाहबानो, सरला मुदगल, डेनियल लतीफी, शायरा बानो और जोश पाउलो आदि।

उत्तराखण्ड सरकार ने मई 2022 में समान नागरिक संहिता को लेकर ड्राफ्ट तैयार करने के लिए सुप्रीम कोर्ट की रिटायर्ड जज रंजना प्रकाश देसाई की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय समिति का गठन किया। इस समिति ने 2 फरवरी 2024 में सरकार को अपनी 740 पेज की चार खंड वाली एक रिपोर्ट सौंपी। इसके पश्चात कैबिनेट से मंजूरी मिलने के बाद 7 फरवरी को यह विधेयक विधानसभा में सर्वसम्मति से पारित हुआ। इसके बाद राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने इसे केंद्र सरकार के जरिए राष्ट्रपति भवन भेज दिया। 13 मार्च को इस विधेयक को राष्ट्रपति की मंजूरी प्राप्त हो गई। इस प्रकार समान नागरिक संहिता अब कानून का रूप ले चुका है किंतु किसी भी कानून को लागू करने के लिए स्पष्ट नियमों का होना बेहद जरूरी है। इस कार्य के लिए सरकार द्वारा पूर्व मुख्य सचिव शत्रुघ्न सिंह की अध्यक्षता में सात सदस्यीय कमेटी का गठन किया जा चुका है। नियमावली को प्रदेश कैबिनेट से मंजूरी मिलने के बाद ही समान नागरिक संहिता व्यावहारिक तौर पर लागू हो पायेगी। अगर उत्तराखण्ड में समान नागरिक संहिता लागू हो जाती है तो यह देश का पहला राज्य होगा जहां समान नागरिक संहिता लागू होगी।

❖❖❖

उम्मीद

●प्रेमा
शोध छात्रा- हिन्दी विभाग

घर से आई बड़ी उम्मीद लेकर,
सोचा शहर में उम्मीदों को पंख मिलेंगे
मन लगाकर पढ़ेंगे।
गाँव में जो नहीं कर पायी शायद,
यहाँ आकर सपने पूरे होंगे।
पहाड़ छोड़ा, छोड़े माँ-बाप
स्वयं को तराशने चली अपने आप।
जैसे-जैसे सफर आगे चला,
घर याद बहुत आने लगा।
सुबह की ठंडी ठिठुरन में, जब माँ साथ में आई थी।
आंखों में आंसू, आंचल में प्यार, मुझे भिगोने आई थी।
आंखों में अभी भी यह उम्मीद लिए,
शायद अबकी बार नौकरी लग जाएगी।
रोज फोन करके पूछती
कहती, हार न मान तू अवश्य कर पाएगी।
किराये के मकान में जब, खुद को अकेला पाती हूँ।
किताबों को लगा सीने से, मैं फिर रोने लग जाती हूँ।
खुद को झूठी तसल्ली देकर, माँ से कहा करती हूँ
हाँ, हो जाएगा माँ,
पर क्या करूँ? कैसे कह दूँ, कुछ कर अभी नहीं पाई माँ।
इन डिग्रियों का भी क्या करना, जब मंजिल मैं पा न सकी।
क्या हार गई मैं? जो, माँ को भी थोड़ी खुशी दिला न सकी।
फिर से खुद को दिलासा देकर, मैं रोज प्रयास करती हूँ।
आवाज माँ की सुनकर नित्य, मन में उमंग भरती हूँ।
कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ूं, संघर्ष हमेशा करती चलूँ।
मंजिल मिले देर से सही, जीवन का अनुभव लेती चलूँ।

❖❖❖

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं

●डॉ. भावना
सहा. प्राध्यापक – हिंदी

अनुवाद को एक सेतु की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि यह सेतु के समान दो भिन्न देशों, उनकी भाषाओं व उनकी संस्कृतियों को आपस में जोड़ने का कार्य करता है। अनुवाद का संसार अत्यंत विस्तृत है। किसी एक भाषा में कही गई बात को जब हम किसी दूसरी भाषा में कहते हैं तो वह अनुवाद कहलाता है। उदाहरण के लिये हिंदी भाषा में कही गयी किसी बात को जब हम अंग्रेजी में अनुवाद करके कहेंगे तो वह अनुवाद कहलायेगा। अनुवाद का इतिहास काफी पुराना है किंतु वर्तमान में बाजारवाद के दौर में अनुवाद की यह प्रक्रिया दिन प्रतिदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर है, क्योंकि जब दो भिन्न भाषा के लोग या देश आपस में संचार एवं व्यापार करेंगे तो स्वाभाविक सी बात है कि अनुवाद की भूमिका और भी बढ़ेगी ही। आज विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है। कम्प्यूटर के माध्यम से ट्रांसलेशन काफी हद तक आसान भी हो गया है लेकिन इसके वाबजूद भी अनुवाद के लिए हम पूरी तरह से मशीन पर निर्भर नहीं रह सकते हैं। क्योंकि मशीन के द्वारा हम लगभग 70% अनुवाद ही कर सकते हैं व बाकी 30% को पूरा करने के लिए व्यक्ति की जरूरत पड़ती है। अभी तक कंप्यूटर द्वारा अनुवाद बहुत कम देखने को मिल रहा है और अनुवाद करवाने वाले अधिकांश संगठन कम्प्यूटर से ट्रांस्लेशन कराने के बजाय किसी व्यक्ति से अनुवाद करवाना पसंद करते हैं। अनुवाद करने वाला व्यक्ति अनुवादक कहलाता है। अनुवाद करने के लिए उचित वेतन दिया जाता है। यदि किसी व्यक्ति की एक से अधिक भाषाओं पर अच्छी पकड़ है तो वह एक क्षेत्र/फील्ड में अपना अच्छा कैरियर बना सकता है।

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की बहुत अच्छी सम्भावनाएं हैं। अनुवादक के लिए वर्तमान बाजारवादी युग में रोजगार के अनेक विकल्प मिल जाते हैं। आज चाहे सरकारी क्षेत्र हो या निजी हर क्षेत्र में अनुवादक की आवश्यकता है। आज बाजारवाद के इस दौर में हम ट्रांसलेशन के क्षेत्र में रोजगार के अनेक विकल्प देख सकते हैं। अनुवाद किसी भी दो भाषाओं का हो सकता है। लेकिन हम भारतीय परिप्रेक्ष्य को ध्यान रखते हुए हिंदी भाषा से अंग्रेजी और अंग्रेजी भाषा से हिंदी में अनुवाद को लेंगे। अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं का होता है। उदाहरण के लिए यदि हम अंग्रेजी में कोई भाषण देते हैं तो उसके अनुवाद स्वरूप दूसरा अनुवादक उसे हिंदी में अनुवाद करके बताता है। ऐसे ही अन्य अनुवादक उसे किसी तीसरी भाषा में अनुवाद करके बताएगा। आज लगभग सभी विभागों में अनुवादक की पोस्ट होती हैं। संसद और विधानसभा में इंटरप्रेटर की पोस्ट भी होती है जिनका काम भाषण दे रहे लीडर की बातों को साथ-साथ अनुवाद करना होता है।

आज लगभग सभी विभागों में अनुवादक की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। अनुवादक का काम है कि वह सभी सरकारी दस्तावेजों का अनुवाद दूसरी भाषा में करके दे। राजभाषा अधिनियम के तहत आज हमारे देश में सभी सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी और हिंदी भाषा में होना अनिवार्य है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर आने वाले सभी समाचार किसी एक भाषा में नहीं बल्कि कई भाषा में होते हैं यह काम भी अनुवाद का ही होता है। यदि कोर्ट की बात करें तो कोर्ट में भी अनुवादक के लिए रोजगार के विकल्प मौजूद है जो कानूनी मामलों का ट्रांसलेशन करते हैं। ऐसे ही यदि बैंकों की बात की जाये तो बैंकों में अनुवादक की पोस्ट होती है जो कि वाणिज्य से सम्बंधित सभी नियमों का अनुवाद करते हैं।

इसके अलावा कोर्ट में भी अनुवादक के लिए रोजगार के विकल्प मौजूद है जो कानूनी मामलों का ट्रांसलेशन करते हैं। न्यूज मीडिया ट्रांसलेशन के बिना अपूर्ण माना जाता है। आज अखबार व टीवी के द्वारा देश विदेश की खबर अपने लोगों तक पहुचाने के लिए भी एक अनुवादक ही काम आता है। विज्ञापन में भी हमें कई भाषाओं के विज्ञापन देखने को मिल जाते हैं जो की अनुवादक के द्वारा ही संभव है। आज फिल्म जगत में भी डबिंग और रिमेक का चलन काफी बढ़

गया है। फिल्म की दुनिया में भी एक सफल अनुवादक की आवश्यकता होती है। ऐसे में जैसे ही कोई अंग्रेजी फिल्म आती है उसे हम हिंदी में देख रहे हैं या अन्य भाषा में भी देख सकते हैं। जब कोई लेखक किसी भाषा में अपनी किताब लिखता है और उस किताब को उसे दूसरी भाषा के लोगों तक पहुंचाना होता है तो ऐसे में भी प्रकाशक अनुवादक का ही सहारा लेता है और किताब का अनुवाद कराता है। कोविड के समय से जब वर्क फ्रॉम होम का दौर चल रहा है तो ऐसे में अनुवादक के रूप में आप घर पर बैठकर भी अनुवाद का काम कर सकते हैं। हालांकि घर बैठे-बैठे अनुवाद का कार्य करने का चलन कोविड से पहले से भी चला आ रहा है। हिंदी भाषा को अंग्रेजी में तथा अंग्रेजी भाषा को हिंदी में अनुवाद करने का कार्य दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। निजी क्षेत्र में भी अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें अनुवादक की आवश्यकता होती है। इस प्रकार आज अनेकों युवा वर्ग के लोग इस अनुवाद के क्षेत्र में अपना कैरियर बना रहे हैं तथा देश के बाहर विदेशों में तक रोजगार पा रहे हैं।

❖❖❖

मैं चींटी हूँ

●धीरज चंद्र जोशी
स्नातकोत्तर हिन्दी, तृतीय सत्रार्ध

कद में छोटी हूँ,
हौसले बुलंद रखती हूँ,
सुबह से शाम तक
जीवन मेरा संघर्ष से भरा है,
कोई मुझे कुचल देता
तो कोई मसल देता है
फिर भी हार नहीं मानती हूँ ।
अपने से बड़ी चीजों को लेकर
जीवन यापन करती हूँ
संघर्ष मेरा जीवन है
मैं चींटी हूँ हार नहीं मानती।

❖❖❖

मोबाइल का जादू

●दीक्षा आर्या
स्नातक पंचम सत्रार्ध

मोबाइल ने सब कुछ ही मोबाइल बना दिया,
टिकना कहीं पल भर, दूभर बना दिया।

उंगलियां ही निभा रहीं हैं रिश्ते आजकल
मन को और भी चलायमान बना दिया।

सब टच में व्यस्त हैं, पर टच में कोई नहीं,
सब बचने की देते सलाह, बच पाया कोई नहीं।

स्मार्ट बना ये देखो किस कदर और कैसे?
घड़ी, चिट्ठी, टॉर्च खा गया हमारी जैसे-जैसे।

किताबें खा गया, खा गया बरसों की दोस्ती
मेल मिलाप खा गया, न रहा वक्त कोई कीमती।

रातों की नींद दिन का सुकून दिलरुबा हो गया,
खो गया अस्तित्व ही यदि मोबाइल खो गया।

जब तक बंधा था वायर से, इंसान आजाद था,
आज खुद बनकर मोबाइल इंसान को बांध गया।

बदलते वक्त में देखो तो जरा तेवर यारों,
इंसान को बनाकर पागल खुद स्मार्ट हो गया।।

❖❖❖

"स्टेट्स लगाना आसान है लेकिन बनाना मुश्किल।"

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता

●डॉ. मुकेश चंद्र
इतिहास विभाग

वर्तमान युग के झंझावात ने ऐसी परिस्थितियां निर्मित की है, जिनमें आज का मानव स्वयं को असहाय तथा थका हुआ अनुभव कर रहा है। अस्तु यह आवश्यक है कि एक समन्वयवादी सोच के प्रति सामान्य जन की आस्था को पुष्टित करे, साथ ही वैज्ञानिक सत्यों को स्वीकार करते हुए जीवन के उदार मूल्यों को अंगीकार कर सकें। महात्मा बुद्ध ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत में एक नवीन धार्मिक क्रांति को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारत में बौद्ध धर्म की स्थापना हुई। प्राचीन वैदिक धर्म में जो बहुत सी विकृतियां आ गयी थी, उन्हें दूर कर उन्होंने सच्चे आर्य धर्म का पुनरुद्धार करने का प्रयत्न किया। अपने मन्तव्यों और सिद्धान्तों के विषय में उन्होंने बार-बार कहा है- 'एस धम्मो सनातनो' अर्थात् यही सनातन धर्म है। वह यह दावा नहीं करते थे, कि वे किसी नवीन धर्म का प्रतिपादन कर रहे हैं। उनका यही कथन था कि, ''मैं सनातन काल से चले आ रहे धर्म का ही स्थापन कर रहा हूं।''

बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

महात्मा बुद्ध के उपदेशों का सार ही उनकी शिक्षाएं है। बुद्ध का धर्म अत्यन्त ही व्यावहारिक था, जो मानव के चरमोत्कर्ष का साधन था। बौद्ध धर्म सुबोध, सुगम्य होते हुए जनवादी था और उसके द्वार सभी के लिए खुले हुए थे। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की वर्तमान समाज में प्रासंगिकता को निम्न तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. महात्मा बुद्ध व मध्यम मार्ग

बुद्ध ने अपने धर्म के मार्ग को मध्यम मार्ग कहा है। वह कहते थे- ''भिक्षुओं! इन दो चरम कोटियों (अतियों) का सेवन नहीं करना चाहिए, भोग विलास में लिप्त रहना और शरीर को व्यर्थ कष्ट देना। इन दोनों अतियों का त्याग कर मैंने मध्यम मार्ग निकाला है, जो कि आंख देने वाला, ज्ञान कराने वाला और शांति प्रदान करने वाला है।'' वस्तुतः मध्यम मार्ग मनुष्य के जीवन में किसी भी प्रकार की अति का निषेध करता है जैसे- अत्यधिक भोजन करना या उसके विपरीत अत्यल्प भोजन करना, अत्यधिक बोलना या बिल्कुल भी ना बोलना, अत्यधिक प्रसन्न होना या अत्यधिक दुखी हो जाना। इस प्रकार मध्यम मार्ग सन्तुलन का मार्ग है, जिसे जीवन में अपनाकर मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है।

वर्तमान सन्दर्भ में बुद्ध के मध्यम मार्ग का सिद्धान्त उतना ही प्रासंगिक है जितना कि बुद्ध के समय था। वह कहते थे, ''वीणा के तार को उतना नहीं खींचना चाहिए कि वह टूट ही जाए या फिर उतना ही उसे ढीला नहीं छोड़ा जाना चाहिए कि उससे स्वर ध्वनि ही न निकले।'' मध्यम मार्ग में न तो अधिक भोग विलास और आसक्ति से रहने का आदेश था और न अधिक कठोर शारीरिक यातनाएं और तप, उपवास, व्रत आदि से शुष्क निर्मम जीवन व्यतीत करने का ही उपदेश था। इस धर्म में बीच का मार्ग (मध्यम मार्ग) था। साधारण लोगों के लिए यह मध्यम मार्ग सुगम, सादा और अनुकरणीय था।

2. महात्मा बुद्ध व अहिंसा

महात्मा बुद्ध के सिद्धान्तों में अहिंसा का स्थान महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बुद्ध ने सभी प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखने पर बल दिया, वह पशु हिंसा के अत्यधिक विरोधी थे। उन्होंने यज्ञों में होने वाली पशु हिंसा का अत्यधिक विरोध किया। बुद्ध द्वारा समाज में अहिंसा के द्वारा शांति का मार्ग प्रशस्त किया।

वर्तमान सन्दर्भ में जहां समाज में चारों ओर हिंसा व भय का वातावरण बना हुआ है, उसे बुद्ध के अहिंसा के मार्ग की नितान्त आवश्यकता है। विश्व में व्याप्त घृणा, हिंसा व उन्माद को नियन्त्रित करने के लिए बुद्ध की अहिंसा ही इस

समय सर्वोत्कृष्ट माध्यम हो सकती है। आज समाज में पशुओं के प्रति जो क्रूरता का व्यवहार किया जा रहा है, जो उनका धर्म और राजनीति के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है उससे बुद्ध की शिक्षाओं से ही बचा जा सकता है।

3. महात्मा बुद्ध व सामाजिक समानता का मार्ग

महात्मा बुद्ध समाज में ऊंच-नीच के कट्टर विरोधी थे, उनकी दृष्टि में कोई मनुष्य नीच व अछूत नहीं था। उनके शिष्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, श्रेष्ठि, शूद्र, वैश्य, नीच समझी जाने वाली जातियों के मनुष्य सभी एक समान स्थान रखते थे। बौद्ध साहित्य में एक कथा का उल्लेख है कि, वासत्थ और भारद्वाज नामक दो ब्राह्मण बुद्ध के पास आए और उनसे पूछा- हम दोनों में इस प्रश्न पर विवाद हो गया है कि कोई व्यक्ति जन्म से ब्राह्मण होता है या कर्म से। बुद्ध ने इस पर उत्तर दिया - हे! वासत्थ मनुष्यों में जो गायों को चराता है, उसे हम चरवाहा कहेंगे ब्राह्मण नहीं। जो मनुष्य कला सम्बन्धी बातों से अपनी आजीविका चलाता है, उसे हम कलाजीवी कहेंगे, ब्राह्मण नहीं। जो आदमी शस्त्र धारण कर अपनी आजीविका चलाता है उसे हम सैनिक कहेंगे ब्राह्मण नहीं। किसी विशेष माता के गर्भ से जन्म होने के कारण मैं किसी को ब्राह्मण नहीं कहूंगा।" अतः बुद्ध जन्म से ही व्यक्ति को श्रेष्ठ मानने के विरोधी थे, वह तो कर्म के अनुसार ही व्यक्ति की श्रेष्ठता का निर्धारण करते थे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखे तो समाज में हर जगह असमानता, छूआ-छूत, नस्ल भेद, ऊँच-नीच, जातिगत श्रेष्ठता आदि पूर्ण रूप से अपनी जड़ें गहरी कर चुका है।

4. महात्मा बुद्ध का आचरण की महत्ता पर बल

महात्मा बुद्ध ने मनुष्य की श्रेष्ठता के लिए व्यक्ति के आचरण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है। बुद्ध ने व्यक्ति की जातिगत श्रेष्ठता, सामुदायिक श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं किया और व्यक्ति के चरित्र को ही श्रेष्ठता का मापदण्ड स्वीकार किया था। यहां तक कि रूप, धन, सम्मान आदि की श्रेष्ठता को भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। वह शास्त्रों में निपुण व्यक्ति को भी तभी महत्व प्रदान करते थे जब वह पवित्र आचरणयुक्त विवेकी व्यक्ति हो।

5. महात्मा बुद्ध व कर्मवाद का सिद्धान्त

बुद्ध के कर्मवाद के सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य जैसे कर्म करता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। कर्मो के द्वारा ही व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण करता है। बुद्ध दर्शन में इसीलिए व्यक्ति को अत्यधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि वह अपने श्रेष्ठ कर्मो के द्वारा निर्वाण प्राप्त कर सकता है। बुद्ध का कर्मवाद मनुष्य को कर्मठता का संदेश देता है, जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी है।

6. महात्मा बुद्ध व आत्म संयम

बुद्ध ने अपने जीवन में आत्म संयम को अत्यधिक महत्व दिया था वह मानते थे कि संयम के बिना जीवन में कोई साधना फलीभूत नहीं होती है। बुद्ध ने अपने शिष्यों को भी संयमित व अनुशासित होने का आदेश दिया था, वह इन्द्रिय लोलुपता के घोर विरोधी थे।

❖❖❖

वक्त

●प्रो. कमला धौलाखंडी भारद्वाज
मनोविज्ञान विभाग

'वक्त' जो हाथों से
फिसल चुका है
उसके पीछे दौड़ने से भी
क्या कभी प्रगति हो पायेगी ?

'वक्त' जो सांसों के रूप में
तेरे साथ चल रहा है
उसे कल्पनाओं का जामा पहनाकर
जिन्दगी कठपुतली के सिवा क्या रह जायेगी ?

'वक्त' के कुछ पल
जो भविष्य की निधि में सुरक्षित है
उन्हें एक-एक कर जीने से ही
जिन्दगी-जिन्दगी बन पायेगी।

लैंगिक समानता आज भी एक चुनौती

●डॉ. पुष्पा भट्ट
सहा. प्राध्यापक – समाजशास्त्र

किसी भी राष्ट्र के सतत विकास हेतु लैंगिक समानता एक आवश्यक तत्व है। विभिन्न क्षेत्रों में महिला व पुरुषों की समान सहभागिता एवं साझेदारी सुनिश्चित करके ही राष्ट्र संतुलित एवं सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यह बात नैसर्गिक सिद्धांत एवं पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। परंतु यह विडंबना ही रही है कि समाज में उनको बराबरी का दर्जा शायद ही कभी मिला हो। सीमोन द बुवा नारीवादी लेखिका का कथन– 'नारी पैदा नहीं होती बल्कि बनाई जाती है' सही प्रतीत होता है। यदि समग्र परिवेश में महिलाओं की स्थिति को अवलोकित किया जाय तो पाएंगे कि उनके पहनावे से लेकर कार्य करने का क्षेत्र, करियर सब कुछ लैंगिक आधार पर निर्धारित कर दिया गया है। लैंगिक भेदभाव के परिणास्वरूप समाज में महिलाओं की स्थिति पुरुष प्रधान समाज की देन है।

हाल में ही विश्व आर्थिक मंच द्वारा वैश्विक लैंगिक अंतराल 2023 रिपोर्ट जारी की गई जिसमें भारत 146 देशों की सूची में 127 स्थान पर है। जबकि बीते वर्ष 2022 में भारत 146 देशों में 135वें स्थान पर था। यद्दपि स्थिति में आठ स्थान का सुधार आया है परन्तु सुधार की दर बहुत कम है। यह रिपोर्ट लैंगिक समानता को लेकर महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि, आर्थिक सहभागिता, राजनीतिक भागीदारी एवं स्वास्थ्य आदि के संदर्भ में विभिन्न देशों द्वारा किये जा रहे प्रयासों की स्थिति के सम्बन्ध जारी होती है। लैंगिक समानता के मामले में दक्षिण एशिया प्रांत में भारत अपने पड़ोसी देशों (बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका) से काफी पीछे है। रिपोर्ट के अनुसार देश को लैंगिक असमानता समाप्त करने में लगभग 131 वर्ष का समय लग लग सकता है। यह तथ्य बहुत ही चिंताजनक है। आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत सम्पूर्ण शिक्षा में नामांकन स्तरों में लैंगिक समानता हासिल करने में बेहतर प्रदर्शन (146 देशों में 26वां स्थान) कर रहा है। महिलाएं आगे बढ़ने के लिए शिक्षा का सहारा ले रही हैं, परंतु स्टेम (विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग एवं गणित) के क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं की भागीदारी लगभग 29.2 प्रतिशत है जो कि बहुत कम है, जबकि इस क्षेत्र में पढ़ाई करने वाली महिलाओं की संख्या में पूर्व की अपेक्षा वृद्धि दर्ज हुई है। आर्थिक भागीदारी के क्षेत्र में प्रगति भारत के लिए अभी भी एक चुनौती बनी हुई है, क्योंकि देश आर्थिक भागीदारी में 36.7 फीसदी समानता ही हासिल कर पाया है साथ ही उच्च पदों और तकनीकी भूमिकाओ में महिलाओं की भागीदारी में पिछले वर्षों की तुलना में कमी भी देखी गई है। राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में भारत द्वारा 25.3 फीसदी लैंगिक समानता को हासिल किया गया है। वर्तमान में संसद में कुल सांसदों में महिला सांसदों का प्रतिनिधित्व 15.1 है जो की विश्व आर्थिक मंच के 2006 की आरंभिक रिपोर्ट के बाद से सबसे अधिक है। रिपोर्ट में स्वास्थ्य के क्षेत्र में लिंगानुपात के सन्दर्भ में यह दर्शाया गया है कि एक दशक से भी अधिक की धीमी प्रगति के बाद भारत में जन्म के समय लिंगानुपात में 1.92% का सुधार दर्ज हुआ है परंतु इस क्षेत्र में भारत का स्कोर बहुत कम (146 देशों की सूची में 142 वें स्थान पर) है। यह स्वास्थ्य के क्षेत्र में देश की खराब स्थिति को इंगित करता है।

उपरोक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि भारत में शिक्षा व राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में लैंगिक विषमता को कम करने में कामयाबी हासिल की गई है, जबकि आर्थिक भागीदारी व स्वास्थ्य के क्षेत्र में सर्वाधिक लैंगिक भेदभाव देखा जा सकता है।

लैंगिक समानता स्थापित करने में अधिकांश देश सुस्त साबित हुए हैं। कोई भी ऐसा देश नहीं जो लैंगिक समानता

की खाई को पूरी तरह से पाट चुका हो। हालांकि आइसलैंड लगातार 14 वर्षों से ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स में शीर्ष स्थान पर बना हुआ है जिसने 90% से अधिक लैंगिक असमानता के अंतर को कम किया है। वैसे तो भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता, संपत्ति, शिक्षा, संवैधानिक उपाय तथा शोषण की विरुद्ध अधिकार प्रदान किए हुए हैं। राज्य भी स्त्रियों के हितों की रक्षार्थ विशेष कानून बनाते रहे हैं परंतु पितृसत्तात्मक व्यवस्था द्वारा महिलाओं को हमेशा दोयम दर्जे का समझा गया। समाज के पुरुष प्रधान होने तथा लिंग आधारित भेदभाव होने के कारण महिलाओं की उपयोगिता को कोई भी प्राथमिकता नहीं दी गई। आज भी घर परिवार बनाने व बच्चों के देखभाल करने की जिम्मेदारी महिलाओं की ही मानी जाती है। महिलाएं अपना अधिकांश कीमती समय घरेलू कार्यो में व्यतीत करती है पर अफसोस है कि घरेलू महिलाओं के इस योगदान को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता, मूल्यहीन आँका जाता है।

बीते कुछ दिनों पूर्व सर्वोच्च न्यायालय द्वारा, 17 वर्ष पूर्व उत्तराखण्ड वाहन दुर्घटना में एक महिला की मौत पर मुआवजे की मांग से जुड़ी सुनवाई में यह कहा गया, कि गृहणी का परिवार के लिए दिया गया योगदान अमूल्य व उच्च कोटि का होता है इसका मौद्रिक आकलन असंभव है। यह कहने की जरूरत नहीं कि एक गृहणी की भूमिका उतनी महत्वपूर्ण नहीं होती जितनी कि एक परिवार में कमाने वाले सदस्य की। इससे पूर्व वर्ष 2021 में भी शीर्ष अदालत द्वारा मोटर दुर्घटना क्षतिपूर्ति से संबंधित मामले में कहा गया कि 'गृहणी परिवार में काम नहीं करती है या घर में कोई योगदान नहीं देती, यह धारणा एक समस्या पूर्ण विचार है।' 1968 से 2021 तक मोटर वाहन क्षतिपूर्ति से संबंधित लगभग 200 मामलों में बीमा कंपनियों द्वारा गृहिणियों के कार्यो को मूल्यहीन आंकना यह दर्शाता है कि समाज महिलाओं के परिश्रम व निस्वार्थ त्याग के प्रति कितना संवेदनशील है। यद्यपि महिलाओं के स्नेह, ममत्व, समर्पण व त्याग का मूल्यांकन संभव नहीं, परंतु उनके परिश्रम को मूल्यहीन आंकना कहां तक उचित है? उन महिलाओं की स्थिति बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है जो अपने घर परिवार और बच्चों के लिए अपने अस्तित्व को दाँव पर लगा देती हैं। एक महिला के योगदान को, जो वह अपने घर परिवार के लिए देती है उसे लाभ हानि के तराजू में तौलना बिल्कुल भी न्याय संगत नहीं है।

समाज में लैंगिक असमानता के उदय का प्रमुख कारण पितृसत्तात्मकता है। यह व्यवस्था महिलाओं को स्त्री सूचक जेंडर भूमिकाओं के दायरे में बांधती है। जेंडर भूमिकाएँ जीव वैज्ञानिक अंतर के आधार पर निर्मित नहीं होती बल्कि समाज द्वारा रचित होती हैं। प्रत्येक सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में स्त्री- पुरुष द्वारा निर्वहन की जाने वाली भूमिकाओं का निर्धारण जेंडरकृत विभाजन के आधार पर होता है। पितृ सत्ता पुरुषों को महिलाओं की तुलना में श्रेष्ठ मानती है इसलिए सार्वजनिक व निजी दोनों क्षेत्रों में पुरुषों द्वारा ही निर्णय लिए जाते हैं। महिलाओं की जेंडर भूमिकाओं के संदर्भ में पारंपरिक दृष्टिकोण यह सुझाता है कि महिलाएं पालन-पोषण करने में पुरुषों से बेहतर है इसीलिए वे घर से बाहर जाकर नौकरी करने के बजाय पूरे समय घर पर रहकर परिवार का पालन-पोषण व देखभाल करें। पुरुषों के संदर्भ में पारंपरिक मान्यता है कि परिवार को वित्तीय साधन उपलब्ध कराते हुए पुरुषों को परिवार का मुखिया होना चाहिए। महत्वपूर्ण निर्णय पुरुषों द्वारा ही लिए जाने चाहिए। हालांकि आज भी कई क्षेत्रों में यह दृष्टिकोण प्रभावी है, इन्हीं सामाजिक मान्यताओं के कारण समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की सीमित भागीदारी परिलक्षित होती है।

सामान्य तौर पर परिवार बच्चों का जेंडरकृत तरीके से समाजीकरण करता है, इसी वजह से बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से ही ऐसे संकेत या संदेश प्राप्त होने लगते हैं जिससे उनका व्यक्तित्व लड़के और लड़कियों की तरह ढलने लगता है। यही जेंडरकृत समाजीकरण लैंगिक भेदभाव की बुनियादी नींव को रखने का कार्य करता है। समाज में परिवार, मित्र समूह, शैक्षणिक संस्थाएं, धर्म, मीडिया, सामाजिक आर्थिक

व राजनीतिक व्यवस्थाएं सभी जेंडरीकरण के अभिकरण हैं। लंबे समय से चली आ रही इन पारंपरिक जेंडर अपेक्षाओं एवं प्रथाओं का परिणाम यह रहा है कि श्रम बल के बहुत से क्षेत्र तथा नेतृत्वकारी भूमिकाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम बना हुआ है आज भी महिलाओं को घर बनाने तथा बच्चों के देखभाल करने वाली पारंपरिक व पितृसत्ता प्रेरित भूमिकाओं के दायरे में रखा जाता है इस कारण कामकाजी महिलाओं को घर-परिवार व कार्य स्थल दोनों क्षेत्रों की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। आज जेंडरकृत भूमिकाओं में जो बहुत लंबे समय से लागू होती चली आ रही हैं, अभिवृत्ति मूलक परिवर्तन की आवश्यकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी 67 फीसदी है जबकि उन्हें पुरुषों की तुलना में 24 फीसदी कम वेतन मिलता है। अधिकृत आंकड़ों के अनुसार 35 देशों में महिला डाक्टरों की संख्या लगभग 25 से 60 फीसदी जबकि नर्सिंग के क्षेत्र में महिलाओं (नर्स एवं दाइयों) की संख्या 30 से 100 फीसदी के मध्य है। उपरोक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि निर्णय लेने वाले पदों पर महिलाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है साथ ही महिला और पुरुष की आय में होने वाला यह अंतर परिवार और समुदायों में महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ होने से रोकता है।

पूर्व में विश्व बैंक द्वारा महिला कारोबार एवं कानून -2021 रिपोर्ट जारी की गई। जिसमें केवल 10 ही देश ऐसे है जहां महिलाओं को पूर्ण अधिकार प्राप्त है जबकि सर्वेक्षण में शामिल 180 देशों में जिसमे भारत भी सम्मिलित है, महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार एवं कानूनी सुरक्षा अभी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हुए हैं। 190 देशों की इस सूची में भारत 123वें स्थान पर है। इसी प्रकार लिंक्डइन अपॉर्चुनिटी सर्वे 2021 से भी यह बात ज्ञात हुई है कि देश में 37% महिलाएं मानती हैं कि उन्हें पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है जबकि 22% महिलाओं का यह कहना है कि उन्हें पुरुषों के समान वरीयता नहीं दी जाती। यद्यपि भारत कुछ मामलों में तो महिलाओं को अधिकार प्रदान करता है परंतु समान वेतन, उद्यमिता, संपत्ति, मातृत्व आदि मामलों में लैंगिक भेदभाव को मिटाने के लिए अभी और अधिक प्रयासों को करने की आवश्यकता है।

भारतीय संविधान जिसमें महिलाओं को हर क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार दिए गए हैं, को बने 74 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। संसद में महिलाओं की संख्या तो बड़ी है जो अब तक की सबसे बड़ी संख्या है परंतु यह संख्या 15.12% से आगे नहीं बढ़ पाई है। यह स्थिति तब है जबकि महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में बाधाओं को पार करते हुए एक अलग मुकाम बनाया है। 1996 में पेश किया गया महिला आरक्षण विधेयक 27 साल के कठिन संघर्ष के बाद 128वें संविधान संशोधन विधेयक के रूप में पारित तो हो गया है जिसे महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम भी माना जा रहा है, पर इस व्यवस्था के जमीन पर उतरने की उम्मीदें कम ही नजर आ रही है क्योंकि यदि राजनीतिक दलों के इरादे नेक होते तो विधेयक को परिसीमन के पंच से न जोड़ा जाता। हालांकि ये तो आने वाला समय ही निर्धारित करेगा कि महिला आरक्षण विधेयक वास्तविकता का रूप कब तक ले सकेगा। भारत के सन्दर्भ में बड़े-बड़े वित्तीय संस्थानों का यह अनुमान है कि वर्ष 2030 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा, पर इस आशाजनक आर्थिक विकास के बावजूद भी देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था एवं समाज में महिलाओं की हिस्सेदारी अनुरूप गति नहीं पा सकी है।

सरकार द्वारा लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने हेतु कई प्रयास किया जा रहे हैं जिसमे 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान ने बालिकाओं के संरक्षण एवं सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बालिकाओं के लिए गर्ल्स सैनिक स्कूल खोलना भी एक ऐतिहासिक पहल है। इसके साथ ही पूर्व में केरल के कोझीकोड में 24 एकड़ के क्षेत्र में

बना 'जेंडर पार्क' पूरे विश्व के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जिसमें महिला सशक्तिकरण से संबंधित नीतियां, कार्यक्रम एवं योजनाएं बनाई जाएंगी। साथ ही यह महिला उद्यमिता एवं सशक्तिकरण पर भी बल देगा। सरकार द्वारा किए जा रहे इन सभी प्रयासों का मुख्य उद्देश्य लैंगिक समानता को स्थापित करने वाली चुनौतियों का निराकरण कर महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए समान अवसर प्रदान करना है।

निष्कर्षतः:- कहा जा सकता है कि आज महिलाएं अपनी मेहनत और काबिलियत के दम पर अनेक ऐसी सफलताएं अर्जित कर रही हैं जो हर किसी के लिए मिसाल है। वे इन सफलताओं के माध्यम से परिवार, समाज व देश को लाभ पहुंचा रही है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज महिलाओं की इन सफलताओं को लेकर गौरवान्वित महसूस करे तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए समान अवसर प्रदान कर प्रोत्साहित करे। परंतु यह विडंबना ही है कि आज भी कई परिवारों में लड़कियों व महिलाओं के साथ लैंगिक आधार पर भेदभाव किया जाता है। यह भेदभाव स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल, अवसर तथा विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की सीमित भागीदारी के रूप में परिलक्षित भी हो रहा है। अतः लैंगिक समानता आज भी वैश्विक समाज के लिए एक चुनौती बनी हुई है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना, लैंगिक समानता सुनिश्चित करना, सामाजिक पूर्वाग्रहों एवं रुढ़ियों से निपटना तथा महिलाओं के विरुद्ध हिंसा एवं भेदभाव को रोकना, भारत की ही नहीं वरन विश्व के सभी समाजों की बुनियादी जरुरत है। बहरहाल अगर समाज को लैंगिक भेदभाव से मुक्त करना है तो लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना अति आवश्यक है और इसके लिए देश के प्रत्येक परिवार से इसकी शुरुआत करनी होगी क्योंकि परिवार समाजीकरण का एक प्रमुख अभिकरण है।

❖❖❖

आजादी की सुबह

●प्रो. कमला धौलाखंडी भारद्वाज
प्राध्यापक - मनोविज्ञान

आने वाली हर सुबह में,
आज सा ही नयापन हो
दिल में हो नव नव उमंगें,
देश सेवा का ही प्रण हो,
आने वाली.....................

मुस्कुराती थी जो कलियां,
आज हंसते फूल हैं वो
खिलायेंगे नया जीवन,
धरा की इस धूल में वो
तेजमय आशा दिखाती,
दिवाकर की हर किरन हो
आने वाली.....................

हाथ मिलकर एक हो सब,
हों न अब तनहाइयां
प्रीत का बन्धन बंधाने,
ले लो तुम अंगड़ाइयाँ
एकता के स्वर सुमन से,
महकता अपना चमन हो
आने वाली.....................

हो गये आजाद अब,
सरताज बनना है हमें
दुष्मनों का इरादा,
नाकाम करना है हमें
मिलके, बोलो एक नारा,
एक यह प्यारा वतन हो
आने वाली.....................

❖❖❖

नारी शक्ति की मिसाल बसंती देवी

●शोभा नयाल,
एम. ए. तृतीय सत्रार्ध

बसंती देवी उत्तराखंड की प्रसिद्ध समाज सेविका हैं। उन्होंने उत्तराखंड के पर्यावरण संरक्षण, पेड़ और नदी को बचाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बसंती देवी कौसानी स्थित लक्ष्मी आश्रम में रहती हैं, बसंती देवी ने पर्यावरण से लेकर समाज की कई कुरीतियों को दूर करने के लिए महिला समूहों का आवाहन किया। एक तरफ उन्होंने कोसी नदी का अस्तित्व बचाने के लिए मुहिम चलाई तथा दूसरी तरफ उन्होंने घरेलू हिंसा और महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए जन जागृति का कार्य किया। उनके यह प्रयास अत्यधिक सफल हुए।

बसंती देवी मूल रूप से पिथौरागढ़ जनपद की रहने वाली हैं, उनकी शिक्षा की बात करें तो वह विवाह से पूर्व तक केवल साक्षर थी, और 12 वर्ष की आयु में उनका विवाह कर दिया गया। विवाह के कुछ समय बाद ही उनके पति का निधन हो गया। बाद में पिता का साथ मिला और उन्होंने अपनी शिक्षा को पुन: प्रारंभ किया। पुन: परीक्षा देने के उपरांत उन्होंने इंटरमीडिएट पास किया, और गांधीवादी समाजसेवी राधा बहन के संपर्क में आई। राधा बहन से वह अत्यधिक प्रभावित हुई और कौसानी स्थित लक्ष्मी आश्रम में ही आकर बस गई। यहां से उन्हें समाज सेवा के पथ पर चलने की दिशा मिली। उन्होंने अल्मोड़ा जिले के धौलादेवी ब्लॉक में अपने समाज सेवी कार्यक्रमों को आयोजित करना शुरू किया। साल 2003 में बसंती देवी ने कोसी घाटी में करीब 200 गांव की महिलाओं का समूह बनाया। 2008 में महिलाओं की पंचायत में स्थिति मजबूत करने का उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने घरेलू हिंसा और पुरुष प्रताड़ना झेल रही महिलाओं की मुक्ति के लिए व्यापक स्तर पर मुहिम चलाई। वर्ष 2014 में उन्होंने 91 गांव की 150 महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद की। कोसी नदी का अस्तित्व बचाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। जब कोसी नदी सूखती जा रही थी तो बसंती देवी ने इस नदी को बचाने का संकल्प लिया और वनों के दोहन को रोकने के लिए गांव-गांव जाकर जन जागृति फैलाने का प्रयास किया। शुरुआत में उन्हें निराशा हाथ लगी, लेकिन धीरे-धीरे ग्रामीण महिलाओं ने इस बात को समझा और वह जंगल और पानी के लिए इस मुहिम में बसंती देवी के साथ खड़ी हुई।

वर्ष 2022 में बसंती देवी को पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पर्यावरण बचाने के लिए उनका यह प्रयास अतुलनीय है। इससे पहले भी बसंती देवी को देश का सर्वोच्च नारी शक्ति पुरस्कार मिल चुका है वह हम सभी के लिए वह प्रेरणा स्रोत हैं।

जल है तभी जीवन है।
जल ही नहीं होगा ना जिंदा रहेंगे।
ना जमीन में कुछ होगा, मनुष्य कैसे बचेंगे।
जल है तभी जीवन है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के जरिए 85वीं बार जब देश को संबोधित किया तो उन्होंने बसंती देवी का जिक्र किया, उन्होंने बसंती देवी के प्रयासों की तारीफ की। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने कहा कि पद्म पुरस्कार पाने वालों में कई ऐसे नाम भी हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं जिन्होंने साधारण परिस्थितियों में रहकर असाधारण काम किए हैं, जिनमें एक नाम उत्तराखंड की बसंती दीदी का भी है। हम सभी के लिए उनका जीवन एक प्रेरणा का स्रोत है, उन्होंने जीवन के कठिन संघर्षो के बीच कभी हार नहीं मानी।

वैश्वीकरण

● बबीता आर्या
बी0ए0 प्रथम सत्रार्ध

वैश्वीकरण का अर्थ क्या है? वैश्वीकरण का अर्थ है प्रवाह – प्रवाह कई तरह का हो सकता है– विचारों का एक हिस्से से दूसरे हिस्से में पहुँच जाना– वस्तुओं का एक से अधिक देशों में पहुँचना– पूँजी का एक से ज्यादा जगह पर पहुँचना बेहतर आजीविका की तलाश में लोगों का एक देश से दूसरे देश में आवाजाही।

वैश्वीकरण के परिणाम– प्रौद्योगिकी, टेलीफोन, टेलीग्राफ का आविष्कार मुद्रण तकनीक, छपाई तकनीक

वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है इसके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिणाम होते हैं।

वैश्वीकरण के राजनीतिक परिणाम- सरकार की नीतियों, कार्यो, भूमिका में बदलाव आया है, उद्योगों में सरकार कम हस्तक्षेप करती है, अब सरकार कल्याणकारी राज्य की धारणा से हटकर न्यूनतम हस्तक्षेप वाली नीति अपना रही है। वैश्वीकरण से राज्य की क्षमता में कमी आई है। राज्य अब कुछ मुख्य कार्यो जैसे कानून व्यवस्था बनाना तथा सुरक्षा तक ही सीमित है। अब बाजार आर्थिक सामाजिक प्राथमिकताओं का मुख्य निर्धारक है पर फिर भी राज्य की प्रधानता बरकार है और उसे वैश्वीकरण से कोई खास चुनौती नहीं मिल रही है। इस दृष्टिकोण से देखें तो, वैश्वीकरण के कारण अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के बूते राज्य अपने नागरिकों के बारे में सूचनाएं आसानी से जुटा पा रहे हैं।

वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव– अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक एवं विश्व व्यापार सगठन जैसे–अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा आर्थिक नीतियों का निर्माण। इन संस्थानों में धनी, प्रभावशाली एवं विकसित देशों का प्रभाव। आयात प्रतिबन्धों में अत्यधिक कमी। पूँजी के प्रवाह से पूँजीवादी देशों को लाभ परन्तु श्रम के निर्बाध प्रवाह न होने के कारण विकासशील देशों को कम लाभ। विकसित देशों द्वारा वीजा नीति द्वारा लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध।

वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव- सांस्कृतिक समरूपता द्वारा विश्व में पश्चिमी संस्कृतियों को बढ़ावा। खाने पीने के एवं पहनावे के विकल्पों की संख्या में वृद्धि। लोगों में सांस्कृतिक परिवर्तनों पर दुविधा। संस्कृतियों की मौलिकता पर बुरा असर। सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण, जिसमें प्रत्येक संस्कृति कहीं ज्यादा अलग और विशिष्ट को रही है।

वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव- वस्तुओं एवं सेवाओं पर सकारात्मक प्रभाव, रोजगार के अवसरों का उत्पन्न होना, तकनीक एवं शिक्षा का आदान–प्रदान जीवन शैली में परिवर्तन, विश्व के लोगो से जुड़ाव, आर्थिक मजबूती प्रदान करना एवं आत्मनिर्भर बनाना।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव- लघु–कुटीर उद्योगों का पतन अमीर व्यक्ति और अधिक अमीर हो जाता है तथा गरीब व्यक्ति और अधिक गरीब हो जाता है, सांस्कृतिक पतन, आर्थिक गतिविधियों में विदेशी कम्पनियों का वर्चस्व पूँजीपतियों का वर्चस्व।

वैश्वीकरण की विशेषताएँ- पूँजी, वस्तु एवं विचारों का गतिशील एवं मुक्त प्रवाह। पूँजीवादी व्यवस्था, खुलेपन एवं विश्व व्यापार में वृद्धि। देशों के बीच, आपसी जुड़ाव एवं अन्त:निर्भरता। विभिन्न आर्थिक घटनाएँ जैसे–मन्दी तथा तेजी और महामारियों जैसे–एंथरेक्स, कोविड–19, इबोला, एचआईवी–एडस, स्वाइन फलू जैसे मामलों में वैश्विक सहयोग एवं प्रभाव।

भारत और वैश्वीकरण- आजादी के बाद भारत ने संरक्षणवाद की नीति अपनाकर अपने घरेलू उत्पादों पर जोर दिया, ताकि भारत आत्मनिर्भर रहे। 1991 में लागू नई आर्थिक नीति द्वारा भारत वैश्वीकरण के लिए तैयार हुआ और खुलेपन की नीति अपनाई गई। वैश्वीकरण के कारण भारत की आर्थिक वृद्धि दर 7.5 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ रही है। जो 1990 में 5.5 प्रतिशत वार्षिक थी। भारत के अनिवासी भारतीय विदेशों में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत के लोग कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर में अपना वर्चस्व स्थापित करने में कामयाब रहे हैं। आज भारतीय लोग वैश्विक स्तर पर उच्च पदों पर आसीन होने में सफल हुए हैं। ❖❖❖

उदयपुर गोलू देवता का इतिहास

●ज्योति रावत
बी.ए. तृतीय सत्रार्ध

सोमेश्वर घाटी के लोद नामक गांव में गोलू देवता का एक प्राचीन मंदिर है, जिसकी स्थापना आज से लगभग 500-600 वर्ष पूर्व हुई थी। प्राचीन समय में हर सिंह कैड़ा नाम के राजा थे वह बिन्ता के रहने वाले थे। एक दिन हरि सिंह कैड़ा जी चंपावत गए उन्होंने वहां गोलू देवता से कहा. ''मैं आपको अपने गढ़ नगरी ले जाना चाहता हूं। आपका मंडप वहां उदयपुर में थापूँगा। वहां आपकी मूर्ति की पूजा रोज सुबह की जाएगी''। तब गोलू देवता ने कहा, ''मैं वहां जरूर चलूंगा। तुम भक्त हो मैं अपने भक्त के साथ अवश्य चलता हूं,'' तो हर सिंह कैड़ा जी ने कहा, ''मैं आपको लेकर कैसे जाऊंगा?'' तब गोलू देवता ने कहा, ''मैं अपनी शक्ति से अपनी एक छोटी सी मूर्ति तुम्हें देता हूं, तुम उसे संभाल कर ले जाना''। हर सिंह कैड़ा जी उस मूर्ति को अपने सिर पर रख वहां से वापस आ गए। आते-आते वह अल्मोड़ा जिले के लोद गांव में पहुंचे। वहां पर कैड़ारो और बोरारो दो नालों का संगम होता है। जिस जगह को लोद कहा जाता है। हर सिंह कैड़ा ने वहां एक शहतूत के पेड़ की छाया में नीचे बैठकर थोड़ी देर विश्राम करने का विचार किया और अपने सर से पगड़ी को नीचे जमीन पर रख दिया। अत्यधिक थकान के कारण उन्हें नींद आ गई। पूरी तरह से आराम करने के बाद वहां से आगे बढ़ने लगे तो उन्होंने सिर पर पगड़ी डालने के लिए पगड़ी उठाई, तो देखा कि उसमें गोलज्यू देवता की मूर्ति कहीं दिखाई नहीं दी। तब हर सिंह कैड़ा सोच में पड़ गए और उन्होंने कहा, ''हे गोरिया! आपको मैं चंपावत से लाया हूं। उदयपुर ले जाने के लिए आप कहां छुप गए?'' उन्होंने यह भी कहा कि, ''हम आपको अपनी सरहद में ले जाएंगे, वही आपका मंदिर बनाएंगे।"

बहुत मिन्नत के बाद देवता ने धरती के नीचे से आवाज दी, ''मेरा दिल यहां बस गया है।" तब हरसिंह जी ने कहा, ''महाराज यह तो बड़े सोचने की बात हो गई मैं आपको यहां नहीं छोड़ सकता हूं। आप बताएं कि आप वहां कैसे पहुंचेंगे? ''तब गोलू देवता गड्ढे के भीतर से बोले, " मैं उदयपुर आऊंगा। आप एक इंतजाम करो की एक माता-पिता के चार बेटे होंगे, वह मुझे डोली लगाकर उदयपुर पहुंचाएंगे।" तो वह चार भाई उन्हें बिंता के अल्मियां गांव में मिले। हरि कैड़ा ने उनको अपनी सारी बात बताई तो वह उन भाईयों को लोद लेकर आए और उन भाईयों ने धरती खोदी और उसे गड्ढे से गोलू की कटिंग मूर्ति निकली। उस मूर्ति को डोली में सजाकर अल्मियां भाई उदयपुर ले गए। वहां हर सिंह कैड़ा जी ने गोलू देवता की पूजा पंडितों से करवाई। हरसिंग और अल्मियां भाईयों ने गोलू देवता को उदयपुर में स्थापित करने का कार्य पूर्ण किया। तब गोलू देवता ने कहा, ''मेरी जो मान्यता उदयपुर में होगी वही मान्यता लोद में भी होगी। लोद में मेरे गड्ढे की पूजा होगी। उदयपुर में मेरे कटिंग मूर्ति की पूजा होगी''। उस दिन से साल भर में अश्विन के महीने के नवरात्रों में यहां हरेला बोया जाता है और जागर लगाई जाती है। गोलू देवता के साथ हीतु और लाकडू देवता की भी पूजा होती है। वहां जिस पंडित की पूजा करने की बारी होती है वह पंडित हरेला बो करके दसमी तक अन्न ग्रहण नहीं करता और ना ही कोई फल इत्यादि खाता है। बस एक समय दूध की रोट बनाकर पीते हैं, और पुजारी जी रोज साल भर वहां पूजा करते हैं। प्राचीन समय में यहां पशु बलि दी जाती थी मगर वर्तमान समय में सरकार द्वारा इस प्रथा पर लोग रोक लगा दी गई है। उदयपुर में नवरात्रों में तीन दिन तक मेला लगता है और चैत्र के नवरात्रों में लोद के मंदिर में भी पूजा होती है और मेला लगता है।

❖❖❖

कुमाऊनी धरोहर- 'भिटौली'

●बबीता नेगी
बी0ए0 तृतीय सत्रार्ध

कुमाऊं एवं गढ़वाल मंडल के पहाड़ी क्षेत्र अपनी रंगीली लोक परंपराओं और त्योहारों के लिए सदियों से लोकप्रिय है। यहां प्रचलित कई ऐसे त्योहार हैं जो केवल उत्तराखंड में ही मनाए जाते हैं। वही इन परंपराओं और त्योहारों को बचाए रखने का दायित्व उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र और यहां रहने वाले लोगों ने उठाया है। उन्होंने आज भी अपनी परंपरा और रीति-रिवाज को न केवल बचा के रखा है बल्कि उसे नई और युवा पीढ़ी को स्थानांतरित करने का प्रयास भी कर रहे हैं।

भिटौली उत्तराखंड की परंपरा - उत्तराखंड में चैत्र का पूरा महीना भिटौली के महीने के रूप में मनाया जाता है। उत्तराखंड के लोगगायक स्वर्गीय गोपाल बाबू गोस्वामी ने इस गाने में इस सनातन परंपरा के बारे में वर्णन किया है-

''बाटी लागी बारात चेली बैठ डोली में
बाबू की लाडली चेली बैठ डोली में
तेर बाबू भिटोली ल्याला बैठ डोली में।"

भिटौली का अर्थ - भिटौली का शाब्दिक अर्थ भेंट या मुलाकात से है। उत्तराखंड में प्रत्येक विवाहित लड़की के मायके वाले- भाई बहन माता-पिता या अन्य परिजन चैत्र के महीने में उसके ससुराल जाकर विवाहित पुत्री से भेंट मुलाकात करते हैं, इसी कारण इस त्यौहार को भिटौली नाम दिया गया है। वह इस अवसर पर अपनी लड़की के लिए घर से बने व्यंजन जैसे आटे के बने खजूर, खीर, मिठाई, फल तथा वस्त्र आदि अपनी स्थिति अनुसार उसे भेंट करते हैं। शादी के बाद पहली भिटौली कन्या को वैशाख के महीने में दी जाती है। और उसके बाद हर वर्ष चैत्र के महीने में उसे भेंट स्वरूप भिटौली प्रदान की जाती है। लड़की चाहे कितने ही संपन्न परिवार में क्यों ना हो लेकिन उसे अपने मायके से आने वाली इस भेंट का हर वर्ष बेसब्री से इंतजार रहता है। इस वार्षिक सौगात में उपहार स्वरूप दी जाने वाली वस्तुओं के साथ ही उसके साथ जुड़ी कई अदृश्य शुभकामनाएं, आशीर्वाद और ढेर सारा प्यार-दुलार विवाहित स्त्री तक पहुंच जाता है। पहाड़ों पर चैत्र के महीने में एक चिड़िया हुई बोलती है। जिसे घुघुती कहते हैं। घुघुती का उल्लेख पहाड़ी दंतकथाओं और लोकगीतों में पाया जाता है। विवाहित बहनों को चैत्र का महीना आते ही अपने मायके से आने वाली भिटौली का इंतजार रहने लगता है। इस इंतजार को लोक गायकों ने लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया है-

नी बासा घुघुती चैत की,
मैं याद आई जे मैत की।

भिटौली प्रदेश की लोक संस्कृति का अभिन्न अंग है, इसके साथ कई दंतकथाएं और लोकगीत भी जुड़े हुए हैं। पहाड़ में चैत्र माह में यह लोकगीत आज भी गाए जाते हैं। इस परंपरा के साथ ''भै भूखा मैं सिती'' नामक एक दंत कथा भी प्रचलित है, कहा जाता है कि एक बहन अपने भाई के आने का इंतजार किए हुए बिना खाए, बिना सोए इंतजार करती रही लेकिन जब देर तक भाई नहीं पहुंचा, तब उसे नींद आ गई। और वह गहरी नींद में सो गई। भाई को लगा बहन काम के बोझ से थक कर सो गई है, उसे जगा कर नींद में खलल ना डाला जाए। उसने भिटौली की सामग्री बहन के पास रख दी, और अगले दिन शनिवार होने की वजह से वह परंपरा के अनुसार बहन के घर नहीं रुक सकता था, इसलिए वह उसी समय अपने गांव की ओर निकल पड़ा।

जागने पर बहन को पता चला कि भाई भिटौली लेकर आया था। वह सोचने लगी कि 'इतनी दूर से आने की वजह से वह भूखा भी होगा, मैं सोई रही और मैंने भाई को

भूखे ही लौटा दिया। यह सोचकर वह इतनी दुखी हुई कि ''भै भूखा मैं सिती'' अर्थात् भाई भूखा और मैं सोई रही, कहते-कहते हुए ही उसने प्राण त्याग दिए। कहते हैं कि वह बहन अगले जन्म में घुघुती नाम की पक्षी बनी और हर वर्ष चैत्र माह में ''भै भूखा मैं सिती'' की रट लगाती सुनाई पड़ती है। यही कारण है कि पहाड़ में घुघुति पक्षी को विवाहित लड़कियों को मायके की याद दिलाने वाले पक्षी के रूप में जाना जाता है।

उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल के पिथौरागढ़ जिले में चैत्र मास में भिटौली के साथ चैतोल पर्व मनाये जाने की एक अन्य परंपरा भी है। चैत्र मास के अंतिम सप्ताह में मनाए जाने वाले इस त्यौहार में पिथौरागढ़ के समीप गांव शहर से डोला यानी शोभायात्रा भी निकाली जाती है। जो निकट के 22 गांवों में घूमती है। चैतोल के डोले को भगवान शिव के देवल अवतार का प्रतीक बताया जाता है। डोला पैदल ही 22 गांवों में स्थित भगवती देवी के थानों यानि कि मंदिरों में भिटौली के अवसर पर पहुंचता है। मंदिरों में देवता किसी व्यक्ति के शरीर में अवतरित होकर उपस्थित लोगों को भक्तों को आशीर्वाद देते हैं। आज कुछ दशक पहले जब संचार के माध्यम इतने नहीं थे, उस समय महिलाओं के लिए यह परंपरा बहुत महत्वपूर्ण थी। जब साल में एक बार उनके मायके से उनके लिए पारंपरिक पकवानों की पोटली के साथ ही उपहार के तौर पर कुछ कपड़े इत्यादि आते थे तो यह उनके लिए अत्यधिक हर्ष का पल होता था। समय के साथ-साथ पलायन और शहरीकरण के प्रभाव से यह परंपरा भी धीरे-धीरे अपना रूप बदल रही है वर्तमान समय में लोग फोन पर बात करके कुरियर गिफ्ट या ऑनलाइन माध्यम से अपनी बहनों को उनके पसंद के उपकरण वस्त्र या उपहार भेज कर इस औपचारिकता को पूर्ण कर रहे हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्रेम और पारिवारिक सौहार्द के साथ भिटौली का खास महत्व बना हुआ है।

❖❖❖

बेटियां

● **हिमानी नेगी**
एम0ए0 तृतीय सत्रार्ध, इतिहास

आजकल आती कहां है ज्यादा मायके बेटियां।
घर गृहस्थी बसाने में लगी रहती हैं बेटियां।
मन पीहर में लगा हो तब भी
शरीर से ससुराल में ही रहती हैं बेटियाँ।

जताती नहीं कोई भी दु:ख अब बेटियां।
आंखें नम हों फिर भी हंसते हुए,
मायके में सभी बातें बताती नहीं है बेटियां।
चंचल सी, नाजुक सी, मासूम सी
लेकिन अब सयानी सी हो गई हैं बेटियां।

जब कभी भी करते हैं
शिकायत क्यों नहीं आती हो मायके?
तो उल्टा नाराज होकर डांटने के अंदाज में
कहती है बेटियां

आपने दिए क्यों इतने अच्छे संस्कार
कि ससुराल की जिम्मेदारी छोड़कर
कुछ दिनों के लिए भी नहीं आती हैं मायके बेटियां

हां, मायके में हो जाए कुछ किसी को भी
सब छोड़-छाड़ कर दौड़ी चली आती है बेटियां
बाबुल का दिल और
ससुराल की धड़कन होती हैं बेटियां।

❖❖❖

अनपढ़ की समझदारी

●तनुजा आर्या
बी0ए0प्रथम सत्रार्ध

एक गाँव में एक सुखी परिवार रहता था। उस परिवार में तीन भाई और एक बहन थी। माँ-बाप चारों बच्चों से बेहद प्यार करते थे। मगर बीच वाले लड़के से थोड़ा परेशान थे। क्योंकि बड़ा बेटा पढ़-लिखकर डॉक्टर और छोटा बेटा इंजीनियर बन गया और बीच वाला आवारा व गंवार था। दोनों भाईयों ने शादी कर ली, बहन की शादी भी अच्छे घर में हो गई। बीच वाला बेटा कुंवारा व अनपढ़ था। वह मजदूरी करता था। इसी कारण उसकी शादी नहीं हो पा रही थी। इसी बात की चिंता में माँ-बाप अत्यधिक परेशान थे। बहन जब भी मायके आती तो अपने डाक्टर व इंजीनियर भाईयों से ही मिलती थी। बीच वाले भाई से वह कम ही मिलती क्योंकि वह उसे पैसे नहीं दे पाता था, लेकिन वह अपनी बहन को बहुत प्यार करता था। इसी बीच उनके पिताजी की मृत्यु हो गई। माँ ने परिस्थिति को देखते हुए बीच वाले बेटे की शादी एक सीधी-सादी लड़की से करा दी। शादी के बाद उसका अनपढ़ बेटा अत्यधिक काम में मन लगाने लगा। वह जिम्मेदार बन गया। किसी भी व्यक्ति के पूछने पर वह कहता पहले तो मैं जैसे-तैसे अकेला कमाकर खा लेता था। मगर अब मेरी शादी हो गई है। अब मुझे अपनी पत्नी के लिए भी कमाना पड़ता है और कल आने वाले बच्चों के लिए भी कुछ जोड़ना ही पड़ेगा। यह कहकर वह अपने कार्य के लिए निकलता है।

अब दोनों भाई यह सोचते हैं कि हम अनपढ़ भाई से अधिक पैसा कमाते हैं, वह कभी हमारी बराबरी नहीं कर सकता। यह बात कहकर वह बँटवारे की बात रखते हैं। माँ के लाख मना करने के बानजूद भी दोनों भाईयों ने बँटवारे की तारीख तय कर दी। उन्होंने अपनी बहन को भी बुलाया और गँवार भाई को काम में जाने के लिए मना किया। गँवार भाई ने बोला-तुम लोग बँटवारा कर लो मैं शाम को अंगूठा लगा दूंगा।

यह सुनकर बहन बोलती है- तू अनपढ़ ही रहेगा। जमीन का हिस्सा तो आमने-सामने बैठकर किया जाता है। फिर तीनों भाई-बहन मिलकर उसको खरी-खोटी सुनाने लगते हैं। माँ के आग्रह करने पर वह गँवार बेटा रुक जाता है। कुछ समय बाद वकील भी आ जाता है और कहता है- आपका सारा हिस्सा मिलाकर 10 बीघा जमीन और एक घर है। अब यह बताओ कि किसको कितना देना हैं। मैं उसी हिसाब से बँटवारे के कागज बना दूंगा। यह सुनकर गँवार भाई कहता है कि- वकील साहब 5-5 बीघा मेरे दोनों भाईयों के नाम लिख दो और ये जो हमारा मकान है, ये मेरी प्यारी बहन के नाम कर दो। तभी उसके दोनों भाई और बहन पूछते हैं कि तू अपने हिस्से में क्या लेगा तभी उनका गंवार भाई कहता है- मेरे हिस्से में मेरी प्यारी माँ है ना। ऐसा सुनकर उसकी पत्नी कहती है कि आपने बिल्कुल उचित निर्णय लिया है 'माँ से बड़ी वसीयत क्या होगी'। गँवार बेटे व बहू के प्यार ने जमीन जायदाद के बँटवारे को रोकते हुए एक सनाटे में बदल दिया। तभी बहन अपने गँवार भाई को गले लगाकर रोती है और कहती है 'मुझे माफ कर दो भईया'। मैं आपको समझ नहीं पाई। तभी भाई कहता है मेरी प्यारी बहना जितना अधिकार इस घर में हमारा है उतना ही तेरा भी है।

गँवार भाई कहता है क्या हम एक साथ मिलकर नहीं रह सकते जैसे बचपन में रहा करते थे। बँटवारा करने में हमारा जीवन रुक थोड़ी जाएगा क्यूँ करते हैं हम बँटवारा। एक साथ मिलकर रहने को ही तो परिवार कहते हैं 'एक अच्छा परिवार'। यह सब बातें सुनकर उसके दोनों भाई भी बहुत शर्मिंदा होते हैं और बँटवारे के कागज फाड़कर फेंक देते हैं और एक दूसरे को गले लगाते हैं और संयुक्त परिवार में खुशी से रहने की बात करते हैं। उस दिन के बाद इनका परिवार सुखी रहने लगा। गँवार बेटे की समझदारी से ही यह संभव हो पाया।

उत्तराखण्ड में कुली बेगार आन्दोलन

●वंदना अल्मियाँ
बी.ए.तृतीय सत्रार्ध

कुली बेगार आन्दोलन 1921 में उत्तर भारत के बागेश्वर में आम जनता द्वारा हिंसक आन्दोलन के रूप में किया गया। इस आन्दोलन का नेतृत्व बद्रीदत्त पाण्डे जी ने किया तथा आन्दोलन के सफल होने के बाद उन्हें 'कुमाऊँ केसरी' की उपाधि दी गयी। इस आन्दोलन का उद्देश्य कुली बेगार प्रथा बंद कराने के लिए अंग्रेजों पर दबाव बनाना था। आंदोलन से प्रभावित राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने इसे 'रक्तहीन क्रांति' का नाम दिया।

इतिहास– सबसे पहले चन्द शासकों ने राज्य में घोड़ों से सम्बन्धित एक कर घोड़ालों पर निरूपित किया था। सम्भवत: कुली बेगार प्रथा का यह एक प्रारम्भिक स्वरूप था, जिसे कालक्रम में अंग्रेजों ने इसे इसके दमनकारी रूप तक पहुँचाया गया। पहले यह कर आम जनता पर नहीं वरन उन मालगुजारों पर आरोपित किया गया था जो भू–स्वामियों या जमींदारों से कर वसूला करते थे। अत: देखा जाये तो यह प्रथा उन काश्तकारों को ही प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित करती थी जो जमीन का मालिकाना हक रखते थे, पर वास्तविकता के धरातल पर सच यह था कि सम्पन्न भू–स्वामियों व जमींदारों ने अपने हिस्से का कुली बेगार भूमि विहीन कृषकों, मजदूरों व समाज के कमजोर तबकों पर लाद दिया। गरीब एवं मजबूर कुली बेगार भूमि विहीन कृषकों, मजदूरों व समाज के कमजोर तबकों के पास इसे सशर्त पारिश्रमिक के रूप में स्वीकार करने के अतिरिक्त चारा ही क्या था? इस प्रकार यह प्रथा यदा–कदा विरोध के बावजूद चलती रही।

कारण–आम आदमी से कुली का काम बिना पारिश्रमिक कराये जाने को कुली बेगार कहा जाता है। विभिन्न ग्रामों के प्रधानों का यह दायित्व होता था कि वह एक निश्चित अवधि के लिए निश्चित संख्या में कुली शासक वर्ग को उपलब्ध करायेंगे। इस कार्य हेतु प्रधान के पास बकायदा कई रजिस्टर भी होते थे। जिसकी अंकना के अनुसार सभी को बारी–बारी कुली बेगारी का काम करने के लिए विवश किया जाता था। प्रधानों, जमीदारों और पटवारियों की मिलीभगत से व आपसी भेदभाव के कारण जनता के बीच असन्तोष बढ़ता गया। गाँव के प्रधान व पटवारी अपने व्यक्तिगत हितों को साधने या बैरभाव निकालने के लिय इस कुरीति को बढ़ावा देने लगे।

दूसरी तरफ धीरे–धीरे जनता का धैर्य भी जवाब देने लगा था, उनका असंतोष बढ़ने लगा, और इस कुप्रथा को खत्म करने के लिए वे एकत्रित होने लगे। उनके आक्रोश का प्रमुख कारण यह भी था कि उनसे सिर्फ कुली बेगार का ही काम नहीं लिया जाता था वरन कुछ अत्यंत घृणित काम जैसे –कमोड साफ करवाना, गंदे कपड़े धुलवाना आदि भी उनसे करवाया जाता था। कहा जा सकता है कि न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक शोषण भी आम जनता का अंग्रेजों द्वारा किया जा रहा था और इन्हीं कारणों से लोग इस अमानवीय अत्याचार के विरुद्ध एकजुट होने लगे थे।

आन्दोलन 14 जनवरी 1921 को उत्तरायणी पर्व के अवसर पर कुली बेगार आन्दोलन में आम आदमी की सहभागिता रही। अलग–अलग गांवों से आये लोगों के हुजूम ने इसे एक विशाल प्रदर्शन में बदल दिया। सरयू और गोमती के संगम के तट पर स्थित मैदान से इस आन्दोलन का उद्घोष हुआ। इस आन्दोलन के शुरू होने से पहले ही जिलाधिकारी द्वारा पं0 हरगोविन्द पंत, लाला चिरंजीलाल और बद्री दत्त पाण्डे को नोटिस दे दिया गया था। लेकिन इसका कोई असर उन पर नहीं हुआ। उपस्थित जनसमूह ने सबसे पहले बागनाथ जी के मन्दिर में जाकर पूजा–अर्चना की और फिर 40 हजार लोगों का जुलूस सरयू बगड़ की ओर चल पड़ा। जुलूस के सबसे आगे एक झंडा था, जिसमें लिखा था– 'कुली बेगार बंद करो'। इसके बाद सरयू का जल लेकर बागनाथ मन्दिर को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा ली गई कि आज से कुली बेगार बरदायिस नहीं देंगे। सभी लोगों ने यह शपथ ली और गाँवों के प्रधान अपने साथ कुली रजिस्टर लेकर आये थे, जिसे उन्होंने सरयू में बहा दिया।

❖❖❖

भारतीय संगीत की महान विभूतियां

●विजिया जोशी
बी.ए.तृतीय सत्रार्ध

क्र.सं.	संगीतकार का नाम	उपलब्धि	जन्म	मृत्यु
1.	उस्ताद विस्मिल्ला खान	शहनाई वादक	21 मार्च1916	21 अगस्त 2006
2	पंडित रविशंकर	सितार वादक	7 अप्रैल1920	11 दिस. 2012
3	पंडित हरिप्रसाद चौरसिया	बांसुरी वादक	1 जुलाई 1938	
4	पंडित शिवकुमार शर्मा	संतूर वादक	13 जन. 1938	10 मई, 2022
5	जगजीत सिंह	गजल गायक	8 फर. 1941	10 अक्टू., 2011
6	जाकिर हुसैन	तबला वादक	9 मार्च 1951	15 दिसं. 2024
7	एम एस सुब्बुलक्ष्मी	शास्त्रीय संगीत गायिका	16सित. 1916	11 दिसं. 2004
8	लालगुड़ी जयरामन	वायलिन वादक	17 सित. 1930	22 अप्रैल, 2013
9	उस्ताद अमजद अली खान	शास्त्रीय संगीतकार	9 अक्टू. 1945	
10	एम एस गोपाल कृष्णन	वायलिन वादक	10 जून, 1931	03 जनवरी 2013

भारत मेंशास्त्रीय संगीतकार- भारतीय संगीत को दुनिया के सबसे पुराने संगीतों में से एक माना जाता है। भारतीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से हुई है। यह एक अलग भाषा है जिससे हम अपने जीवन के विभिन्न भावों को अभिव्यक्ति दे सकते हैं। इसके बिना जीवन अधूरा है। आज हम जानेंगे ऐसे महान संगीतकारों के बारे में जिन्होंने भारतीय संगीत को पूरी दुनिया में प्रसिद्धि दिलाई।

उस्ताद बिस्मिल्ला खान- भारतीय संगीत में संगीतकार उस्ताद बिस्मिल्ला खान का नाम बहुत सम्मान से लिया जाता है। यह एक शहनाई वादक थे और संगीत की लुभावनी धुनें बनाते थे। ये अपनी संगीत कला के माध्यम से भारतीय संस्कृति के सार को समझाने में भी सक्षम थे। इन्होंने अपने संगीत के माध्यम से शहनाई को एक लोकप्रिय वाद्य यंत्र बनाया। उस्ताद बिस्मिल्लाखान को पद्म भूषण, पद्म विभूषण और भारत रत्न जैसे सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया गया है। वैश्विक स्तर पर उन्होंने अपने संगीत से संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पंडित रविशंकर- पंडित रविशंकर प्रसाद को शास्त्रीय संगीत का राजा कहा जाता है। ये सितार के सबसे प्रसिद्ध वादक थे। इन्हें 20वीं शताब्दी के सबसे अधिक प्रसिद्ध संगीतकारों में गिना जाता है। उनके संगीत का भी वैश्विक प्रभाव पड़ा है। इन्हें अपने जीवनकाल में असंख्य पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया।

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया - पंडित हरिप्रसाद चौरसिया बांसुरी वाद्ययंत्र के ऐसे मास्टर बने जो अपनी बांसुरी के धुन पर किसी को भी मंत्रमुग्ध कर लेते हैं। एक पहलवान के बेटे होने के बावजूद हरिप्रसाद अपने पिता के खिलाफ चले गये

और चुपके से अपनी पड़ोसी से 15 साल की उम्र में शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दिया। जिससे उन्हें संगीत से परिचित करवाया। हरिप्रसाद चौरसिया वाराणसी के प्रसिद्ध लुटिस्ट पंडित भोलानाथ प्रसन्ना के मार्गदर्शन में बांसुरीवादन शुरू किया। हरिप्रसाद चौरसिया को पद्मश्री और पद्मविभूषण सम्मान द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

पंडित शिवकुमार शर्मा – भारतीय संगीत के इतिहास में नाम दर्ज कराने वाले पंडित शिवकुमार संतूर वाद्ययंत्र बजाते थे। इन्होंने संगीत की दुनिया में महान योगदान दिया है। इन्होंने शास्त्रीय संगीत को अलग ऊँचाई पर पहुँचाया। आज भी हम सिलसिला और चांदनी जैसे ब्लॉकबस्टर्स के माध्यम से उन्हें सुन सकते हैं जो उनकी रचनाओं को दिखाती हैं।

जगजीत सिंह – गजल किंग के नाम से मशहूर जगजीत सिंह हारमोनियम बजाते थे। इन्होंने संगीत की विभिन्न विधाओं में अपनी शुद्ध भावपूर्ण और आकर्षक आवाज के साथ अविश्वसनीय सफलता हासिल की। जगजीत सिंह रोमांटिक धुनों, उदास रचनाओं और भक्ति भजनों के भी काफी अच्छे गायक माने जाते हैं। उनके निजी जीवन में एक बड़ी मुसीबत तब आई जब उन्होंने अपने इकलौते बेटे को खो दिया। जिसने उनके जीवन को दुखद रूप से काफी प्रभावित किया और इसी सदमें से उनकी पत्नी ने संगीत छोड़ दिया। जबकि जगजीत सिंह ने अपनी कला के माध्यम से गहरी मानवीय भावनाओं के साथ संवाद करते हुए गायिकी करना जारी रखा।

जाकिर हुसैन – सबसे कम उम्र के तबला वादक कलाकार जाकिर हुसैन हर एक सेकेंड में ताल निकाल सकने की क्षमता रखते हैं। उनकी ताल श्रोताओं को एक परमानंद पहुंचाती हैं। इन्होंने तबले की ताल को कुछ वाद्ययंत्रों के साथ मिलाकर कुछ बेहतरीन संगीतमय रचनाएँ भी की। जिनमें शक्ति मिली हार्ट प्लेनेट ड्रम और कई अन्य शामिल हैं। जाकिर हुसैन को पद्म श्री और पद्म भूषण से भी सम्मानित किया जा चुका है।

एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी – सुब्बुलक्ष्मी जी एक महान शास्त्रीय गायिका के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिनकी वीणा पर भी बहुत अच्छी पकड़ थी। इन्होंने केवल 13 साल की उम्र में अपना पहला प्रदर्शन मद्रास संगीत अकादमी में किया था। कर्नाटक संगीत की प्रख्यात गायिका को रेमन मैग्सेसे एवं भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

लालगुड़ी जयरामन- दुनिया भर में लालगुड़ी जयराम को एक भारतीय वायलिन वादक के रूप में जाना जाता है। महान संत संगीतकार त्यागराज के वंश में पैदा हुए लालगुड़ी जी को थिलानस और वरनम के लिए जाना जाता है।

उस्ताद अमजद अली खान- भारतीय शास्त्रीय संगीत की दुनिया में सबसे प्रतिष्ठित महानायक अमजद अली खान को सरोद सम्राट माना जाता है। ग्वालियर में संगीत के सेनिया बंगस घराने में उत्पन्न अमजद अली खान को संगीत विरासत में प्राप्त हुआ था, यही कारण है कि मात्र १८ वर्ष की उम्र से ही वे विदेशों में न केवल अपनी प्रस्तुतियों से सबका मन मोह रहे हैं बल्कि सरोद वादक के रूप में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खिताबों को एक के बाद एक अपने नाम करते चले जा रहे हैं।

एम.एस. गोपालकृष्णन् – एम एस गोपालकृष्णन वायलिन वादक थे। इन्होंने अपने पिता परुर सुंदरम अय्यर से संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी। एम एस गोपालकृष्णन को कर्नाटक संगीत और हिन्दुस्तानी संगीत दोनों का ही ज्ञान प्राप्त था। संगीत में इनके योगदान के लिए इन्हें 2012 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

❖❖❖

समय अमूल्य धन है

●नेहा कबडोला
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्ध, इतिहास

प्रस्तावना- समय जीवन की अमूल्य निधि है- समय जीवन में सर्वोपरि है, समय का सदुपयोग जीवन को अमूल्य बना देता है। ''यदि जीवन से प्रेम है तो समय व्यर्थ मत गवाओं।'' समय को नष्ट करना जीवन को नष्ट करना है। संसार में कोई भी धन परिश्रम से कमाया जा सकता है, उसका संग्रह किया जा सकता है, किन्तु जीवन का कोई भी पल व्यतीत हो जाने के बाद वापस नहीं लाया जा सकता। समय को रोका भी नहीं जा सकता। समय का चक्र अनवरत घूमता रहता है। हम चाहकर भी ईश्वर के दिए जीवन काल को एक पल के लिए भी नहीं बढ़ा सकते। समय के महत्व को रेखांकित करती सुप्रसिद्ध लेखक श्रीमन्नारायण की ये पंक्तियां दृष्टव्य हैं- ''समय धन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। हम रुपया-पैसा तो कमाते ही हैं और जितना अधिक परिश्रम करें, उतना ही अधिक कमा सकते हैं, परन्तु क्या हजार परिश्रम करके भी चौबीस घण्टों में एक मिनट और बढ़ा सकते हैं? इतनी मूल्यवान वस्तु का धन से क्या मुकाबला?''

समय का सदुपयोग आवश्यक- समय को रोका नहीं जा सकता इसलिए इसका सदुपयोग परम आवश्यक है. कबीरदास जी का प्रसिद्ध दोहा है-

''काल करे सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।।"

काम को समय के अन्दर निपटाना समय का सदुपयोग है। जो समय को नष्ट करते हैं बाद में समय उन्हें नष्ट कर देता है।

समय का सम्मान- समय परिवर्तनशाली है, चलता रहता है, कभी नहीं रुकता इसलिए समय का सम्मान सदा करना चाहिए। भविष्य की योजना बनाकर उचित समय पर उसे पकड़ लेना चाहिए। एक बार कोई अवसर हाथ से निकल जाता है तो शायद ही वह पुनः आए। समय ऐसा राक्षस है जो उसे महत्व न देने वालों के जीवन में अभावों का श्राप डाल जाता है। इसीलिए उचित समय पर उचित कार्य करना ही श्रेयस्कर और विद्वता की निशानी है।

उपसंहार- आपने कभी सोचा है कि क्या होगा यदि सूर्य दिन में समय पर ताप न दे और चन्द्रमा रात में शीतलता न दे? तो प्रकृति का सारा चक्र उलट जाएगा। अपने जीवन को सही दिशा देने के लिए समय का महत्व समझना आवश्यक है। वैसे तो यह बात प्राणी मात्र पर लागू होती है पर विद्यार्थियों के लिए समय के सदुपयोग का महत्व सर्वाधिक है, क्योंकि गया समय कभी हाथ नहीं आता।

भारतीय महीने

●सुष्मिता भैंसोड़ा
बी.ए. पंचम सत्रार्ध

चैत महीना पहले आए,
चना मटर खेतों में छाए
बैसाख में फिर पड़ी बैसाखी,
हिन्दू बने सिक्खों के साथी
जेठ में गर्मी पड़े कड़ाका,
भरी दुपहरी सुन्न सड़ाका।
आषाढ़ में बादल घुमड़ाए,
तपती धरती प्यास बुझाए।
सावन में पड़ते हैं झूले,
रक्षा बंधन बहना ना भूले
भादो में जब बादल गरजे,
तेज पानी अम्बर से बरसे।
क्वार मास में पड़े दशहरा,
धान खेत में लगे सुनहरा
कार्तिक मास की बात निराली,
दीप सजे जगमग दीवाली।
अगहन मास खुश रहें किसान,
फसलों से भरता है खलिहान।
पूस में जब ठंड गहराई,
मांगे हम कंबल और रजाई।
धूप माघ की सबको भाए,
कूके कोयल और आम बौराए।
फागुन में पड़ती है होली,
ढोल नगाड़े मस्तों की टोली।

सोमेश्वर घाटी

●नीरज सिंह राणा
बी.कॉम. पंचम सत्रार्ध

सोमेश्वर कुमाऊँ का एक छोटा सा कस्बाई शहर है जो कि कौसानी, बागेश्वर व गरुड़ से लगा हुआ है। इसी शहर से होते हुए आप जाएंगे कुमाऊँ के कुछ और स्थानों का भ्रमण करने जैसे-पिडांरी ग्लेशियर, ताप्ती ग्लेशियर और सुन्दरढूंगा ग्लेशियर। यदि आपको कुमाऊँ की इन सारी वादियों का लुत्फ उठाना है तो आपको आना ही होगा, सोमेश्वर। सोमेश्वर अल्मोड़ा से 40 कि0मी0 दूर है और यह हल्द्वानी से 130 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। जब कभी भी आप इस रास्ते पर जाते हैं जैसे आप कौसानी जाते हैं, बागेश्वर जाते हैं तो आप थोड़ी देर यहाँ रूकिए, यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता शर्तिया आपको सम्मोहित कर ही डालेगी। यह घाटी बहुत खूबसूरत है, इसकी सुंदरता पर रीझकर ही किसी ने इसे एशिया की तीसरी सबसे खूबसूरत घाटी कहा।

अब हम इस बात पर चर्चा करेगें कि इस घाटी का नाम सोमेश्वर क्यों पड़ा? सोमेश्वर क्षेत्रफल के हिसाब से काफी बड़ी घाटी है, इसीलिए इसे सोमेश्वर घाटी भी कहा जाता है। यह शहर कोसी और साई नदियों के संगम पर स्थित है। कोसी नदी इस क्षेत्र की एक प्रमुख नदी है जो कौसानी के पास धारापानी धार से निकलती है और आगे जाकर कौसानी, सोमेश्वर, अल्मोड़ा होते हुए क्वारब के पास यह सुयाल नदी में मिल जाती है। इसके बाद इस नदी के मार्ग में खैरना, गरमपानी जैसे स्थल आते हैं जहां से यह रामनगर की तरफ मुड़ जाती है, और आगे जाकर उत्तर प्रदेश में जाकर रामगंगा की एक प्रमुख सहायक नदी बन जाती है।

सोमेश्वर अपने ऐतिहासिक शिव मंदिर के लिए काफी प्रसिद्ध है जिसे सोमनाथ मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर का निर्माण चंद राजवंश के राजा सोमचन्द्र ने 12वीं शताब्दी में करवाया था। सोमेश्वर का नाम भी राजा सोमचंद और भगवान महेश्वर के नाम पर सोमेश्वर पड़ा। आस-पास के गाँवों जैसे टाना, रनमन, मनान, भियालगाँव इन सब के लिए सोमेश्वर एक प्रमुख बाजार है। यहाँ जरूरत की सारी चीजें मिलती हैं।

सोमेश्वर से उत्तर पूर्व की जाने पर कौसानी, गरुड़, बागेश्वर और कपकोट शहर पडते हैं । सोमेश्वर घाटी धान की उपज के लिए मशहूर है। इस घाटी की सुंदरता यहाँ के लहलहाते हुए उपजाऊ खेत हैं। धान की रुपाई के समय इन खेतों की रंग-बिरंगी छटा किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। धान की रुपाई के समय गाए जाने वाला हुड़क्याबौल यहाँ की सांस्कृतिक समृद्धता का परिचायक है। यदि आप बेहद शांत और मन को मोहने वाले जगह की तलाश में हैं तो सोमेश्वर आपके लिए परफेक्ट लोकेशन है। जब आप यहाँ से गुजरे तो कुछ टाइम यहाँ जरूर बिताएँ, आपका बिताया यह कुछ टाइम आपको जीवनभर याद रहेगा।

❖❖❖

एक बेहतरीन किताब 100 अच्छे दोस्तों के बराबर है,
लेकिन एक सर्वश्रेष्ठ दोस्त पुस्तकालय के बराबर है।

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

शहर से जुड़ा रास्ता

●पूजा
शोधार्थी हिन्दी विभाग

सविता सुबह उठी, तो उसने घड़ी की तरफ देखते हुए तेजी से अपना बिस्तर समेटा, और नहाने के लिए चल दी। उसे अपने सारे काम समय पर करने थे क्योंकि आज उसका बेटा शहर जो जा रहा था, नौकरी करने। रोहन सविता का बेटा था उसने गांव के ही स्कूल से अपनी पढ़ाई की थी और गांव में ही रहकर बी.ए. कर रहा था। लेकिन परिवार की स्थिति देखकर वह अब नौकरी करना चाह रहा था। उसने कई बार अपने गांव के आसपास रोजगार की तलाश की, पर वह असफल रहा और अंत में उदास होकर अपने गांव को छोड़कर शहर में नौकरी ढूंढने का प्रयास करने लगा। रोहन एक योग्य और समझदार लड़का था, उसने बचपन से ही अपने माता-पिता को खेतों का काम करते हुए देखा था। वह खुद भी स्कूल के बाद अपना बचा हुआ समय अपने माता-पिता के साथ खेतों के काम में बिताता था। हर काम में अपनी मां का हाथ बंटाता था। पढ़ाई करने के साथ-साथ उसने कई जगह इंटरव्यू दिए थे। आखिरकार वह दिन भी आ ही गया जब उसे एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करने के लिए कॉल लेटर आया। उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं। उसकी आंखों में ऊंची उड़ान के सपने थे, जैसे एक पक्षी ने अपनी पहली उड़ान के लिए अपने पंखों को फैलाना शुरू कर दिया हो।

सविता भी आज बहुत खुश थी बेटे की मेहनत रंग ला रही थी लेकिन, खुशी के साथ-साथ उसे अपने बेटे के जाने का दु:ख भी सता रहा था। उसे यह भी डर था कि कहीं उसका रोहन अब शहर का ही होकर ना रह जाए! अपने खाली होते गांव को देखकर भी सविता का मन बैठ जाता था। गांव में रहने वाले अधिकांश लोग शहर की ओर जा चुके थे, अच्छे रोजगार शिक्षा स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं की चाह ने लोगों का शहरों की ओर आकर्षण बढ़ा दिया जिसके परिणामस्वरूप गांव में कुछ खंडहर जैसे पटाल वाले घर और इसके साथ-साथ कुछ ही गिने-चुने लोग रह गए थे। अपने सुनसान हुए गांव के बारे में जब वह सोचने लगते तो उसका दिल पसीज उठता। दूसरे ही पल खुद को ढाँढस बनाते हुए कहती कि वास्तव में यह हर गांव की समस्या है जो एक विकराल रूप लेती जा रही है। और ले भी क्यों ना? नई पीढ़ी के विचार, आवश्यकताएं, जरूरतें पहाड़ों के दूर दराज के गाँव के गाँव खाली होने का एक मुख्य कारण बन रही है और दुविधा यह भी है कि क्या करें? खैर! लंबी सांस छोड़ते हुए आंसू भरी आंखों से रोहन को शहर की ओर विदा करते हुए सविता के मन में रह-रहकर यह सवाल बार-बार आ रहा था कि रोहन अपनी बाखली के अन्य लड़कों की तरह ही शहर में रच-बस जाएगा और नमी भरी आंखें उस रास्ते को ही ताकती रह गई जो रास्ता शहर से जुड़ा था।

❖❖❖

अपने शब्द उठाओ आवाज नहीं, यह बारिश है जो फूल उगाती है गरज नहीं।

लक्ष्य सेन - एक परिचय

● प्रेम प्रकाश
बी0ए0 तृतीय सत्रार्ध

लक्ष्य सेन का जन्म 16 अगस्त 2001 को अल्मोड़ा में हुआ है। इनके पिता का नाम श्री धीरेन्द्र सेन है, जो स्वयं भी एक बैडमिंटन कोच हैं। इनकी माता का नाम श्रीमती निर्मला सेन है और इनका एक बड़ा भाई चिराग सेन है, वह भी अंतराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी है। लक्ष्य सेन के दादाजी स्व0 श्री सी0एल0 सेन भी बैडमिंटन के राष्ट्रीय खिलाड़ी रहे और उन्होंने अल्मोड़ा में बैडमिंटन को लोकप्रिय बनाने तथा उसे बुलन्दियों तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लक्ष्य सेन ने प्रारम्भिक से दसवीं तक की शिक्षा बीरशिवा सीनियर सेकेंडरी स्कूल से प्राप्त की। उन्हें बाद में प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी बेंगलुरू में प्रवेश मिला। बचपन से ही उन्हें बैडमिंटन में रूचि थी, प्रारम्भिक रूप से उन्होने बैडमिंटन की बारीकियों को अपने पिता, राष्ट्रीय बैडमिंटन प्रशिक्षक, से सीखना प्रारम्भ कर दिया। अपनी प्रतिभा तथा लगन के फलस्वरूप उसने बैडमिंटन की ऊँचाइयों को प्राप्त किया। साल 2016 में जूनियर बैडमिंटन चौंपियनशीप में शानदार प्रदर्शन कर कांस्य पदक जीता। 2016 में ही उन्होंने इंडिया इण्टरनेशनल सीरीज टूर्नामेंण्ट में गोल्ड पदक जीतकर पुरूष एकल का खिताब जीता।

इसके बाद साल 2017 में लक्ष्य सेन B.W.F. वर्ल्ड जूनियर रैंकिग में नंबर वन जूनियर एकल खिलाड़ी बन गए। साल 2018 में इन्होंने जकार्ता (इण्डोनिशिया) में एशियाई जूनियर में एकल वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। साथ ही युवा ओलंपिक में पदक जीतने वाले पहले भारतीय शटलर बन गए। साल 2019 में उन्होने डच ओपन में पुरूष एकल जीता। साल 2019 मे सारलोरलक्स ओपन जीता। 2019 में स्कॉटिश ओपन में पुरुष एकल का खिताब जीता। साल 2020 में बैडमिंटन एशिया टीम चौंपियनशिप जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे। साल 2021 में विश्व चौपिंयनशिप में कांस्य पदक जीता। साल 2022 में ऑल इग्लैण्ड ओपन बर्मिंघम में चल रहे कॉमनवेल्थ गेम 2022 में भारत के बैडमिंटन स्टार लक्ष्य सेन ने स्वर्ण पदक जीतकर भारत का मान बढ़ाया। स्वर्ण पदक जीतकर लक्ष्य ने न केवल इतिहास रच दिया बल्कि, कच्ची उम्र में बैडमिंटन हाथ में थमाने वाले दादाजी को भी सच्चे अर्थो में अपनी श्रद्धांजलि दे दी। दादाजी की पुण्यतिथि पर 30 नवम्बर 2022 को लक्ष्य सेन को पदक से नवाजा गया। लक्ष्य सेन प्रतिभावान खिलाड़ी होने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। जो वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए आदर्श प्रेरणा स्रोत है।

❖❖❖

सब कुछ तो मिल गया
पर ये चाह नहीं जाती।
मेरे मन तेरे सोचने की
थाह नहीं जाती।
जमीं पर कदम रख
निगाह आसमान पर,
जमीं से आसमां तक
कोई राह नहीं जाती।
चोट लगेगी, जख्म भरेंगे,
कुछ दवा से कुछ दुआ से
पर उम्र के साथ पुराने जख्मों की
आह नहीं जाती।
सब कुछ तो मिल गया
पर ये चाह नहीं जाती।

नशा मुक्ति

●नीलम राणा
बी.ए.प्रथम सत्रार्द्ध

सुनो रे, भैया एक सवाल,
जीवन क्यों कर रहे खराब ?
जब देखोगे नशे का ख्वाब,
जीवन होगा तभी खराब।

दारू की बोतल को छोड़ो,
नशे वशे की आदत छोड़ो।
व्हिस्की हो या बोतल रम,
छोड़ो हर पल पीना दम।

जीवन में हर पल यह देखो,
कितनी मिलती लाशें देखो।
हर घर देखो मातम छाया,
नशे नशे का आतंक आया।

नशे नशे को छोड़ो भैया,
जीवन से रिश्ता जोड़ो भैया।
नशा है नहीं किसी भी काम का,
दुश्मन है यह हर इंसान का।

नशे ने क्या कर दिया है देखो,
जिंदा लाश बना दिया देखो।
नशा मुक्ति अभियान चलाओ,
सुखी खुशहाल परिवार बनाओ।

महान है वह व्यक्ति

● नगमा परवीन
एम.ए. तृतीय सत्रार्ध इतिहास

महान है वह व्यक्ति,
जो इतिहास का जनक कहलाया
न जाने कैसे उसे,
इतिहास समझ में आया ?
प्राचीन-मध्यकालीन ही नहीं
आधुनिक भारत ने भी
हमारा दिमाग घुमाया
महान है वह व्यक्ति,
जिसने इतिहास बनाया
न जाने कैसे उसे
इतिहास समझ में आया ?
उलझी रह गई है जिंदगी
हमारी इतिहास के पन्नों में
कहां से करें शुरू और कहां
खत्म, यही सोचते रह गए हम।
खिलाफत आंदोलन से असहयोग,
लाहौर अधिवेशन से दांडी मार्च
गोलमेज सम्मेलन से अरविंद समझौते
तक, क्रिप्स मिशन से भारत छोड़ो तक,
इंडियन नेशनल आर्मी, कैबिनेट मिशन
माउंटबेटन से स्वतंत्रता अभियान तक
न जाने कौन-कौन आए, कौन चले गए
हम सोचते ही रह गए महान कितना होगा
वह, जिसने इतिहास बनाया, न जाने
कैसे उसे, इतिहास समझ में आया ?

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू: प्रेरणादायक व्यक्तित्व

●दिया बोरा
बी.ए. प्रथम सत्रार्ध

भारत की वर्तमान राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू आज हमारे देश की राष्ट्रपति ही नहीं बल्कि देश कि समस्त महिलाओं के लिए एक प्रेरणा भी हैं। द्रौपदी मुर्मू का जन्म 20 जून 1958 में उड़ीसा के मयूरभंज में हुआ था। वह वर्तमान में 64 वर्षीय महिला हैं। इनके पिताजी का नाम बिरांची नारायण टुडू तथा माता का नाम लक्ष्मी मुर्मू है। द्रौपदी मुर्मू हिंदू धर्म की अनुसूचित जनजाति से संबंधित हैं।

द्रौपदी मुर्मू की प्रारम्भिक शिक्षा उन्हीं के गाँव में हुई जहां उनका दाखिला इनके माता-पिता द्वारा इलाके के विद्यालय में करवाया गया। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें भुवनेश्वर शहर जाना पड़ा। वहां इन्होंने रमा देवी महिला कालेज में एडमिशन लेकर ग्रेजुऐशन की पढ़ाई पूर्ण की। पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात ओडिशा गवर्नमेंट में बिजली डिपार्टमेंट में जूनियर असिस्टेंट के तौर पर इन्हें नौकरी प्राप्त हुई। इन्होंने यह नौकरी साल 1979 से लेकर साल 1983 तक की। इसके बाद इन्होंने साल 1994 में रायरंगपुर में मौजूद 'अरबिंदों इंटीग्रल एजुकेशन सेंटर' में टीचर के तौर पर काम करना शुरु किया और यह काम इन्होंने 1997 तक किया। साल 1997 में ओडिशा के रायरंगपुर जिले के पहली बार इन्हें जिला पार्षद चुना गया तथा साथ ही यह रायरंगपुर की उपध्यक्ष भी चुनी गई। इसके अलावा इन्हें साल 2002 से लेकर के साल 2009 तक मयूरभंज जिला भाजपा का अध्यक्ष बनने का मौका भी मिला। साल 2004 में यह रायरंगपुर विधानसभा से विधायक बनने में भी कामयाब हुई और आगे बढ़ते-बढते साल 2015 में इन्हें झारखण्ड जैसे आदिवासी बहुल राज्य के राज्यपाल का पद संभालने का भी मौका मिला। इन्होंने यह पद 2021 तक संभाला। 21 जून को बीजेपी अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने उन्हें एन.डी.ए. का राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने की घोषण कर दी, वह चुनाव जीतीं और आज देश के 15वें राष्ट्रपति के तौर पर कार्य कर रही हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है कि किस प्रकार ओडिशा के मयूरभंज के एक छोटे से गाँव से निकलकर उन्होंने राष्ट्रपति पद तक का सफर तय किया है।

द्रौपदी मुर्मू भारत की दूसरी महिला तथा 15वीं राष्ट्रपति के रूप में देश की बागडोर संभाल रही हैं। द्रौपदी मुर्मू ने राजनीतिक जीवन में साल दर साल सफलताएँ प्राप्त कीं, यद्यपि उसी तरह इनका पारिवारिक जीवन भी नहीं रहा। उन्होनें साल 1980 में एक वैकर श्याम चरण मुर्मू से प्रेम विवाह किया जिनसे उन्हें दो बेटे और एक बेटी हुई, सब कुछ ठीक चल रहा था लेकिन साल 2009 में आकस्मिक रूप से उनके बेटे का निधन हो गया। इसके 4 साल बाद 2013 में उनके दूसरे बेटे की भी मृत्यु हो गयी। अभी बेटों की मृत्यु के सदमें से वह उभरी भी नहीं थी कि जैसे विधाता उनके साहस की परीक्षा लेने पर ही तुल गया था। अगले साल उनके पति श्याम चरण का भी निधन हो गया। 5 साल के अन्दर दो बेटों और पति को खोने वाली मुर्मू इन हादसों से बेहद टूट गयी थीं। दु:ख की इस घड़ी में विरक्ति का आना स्वाभाविक ही था, इसी विरक्तावस्था में उन्होंने अपने घर को दान कर दिया और उसे स्कूल में बदल दिया। व्यक्तिगत जीवन में इतने झटके झेलने के बावजूद भी नारी की शक्ति साहस और दृढ़ता की प्रतीक द्रौपदी मुर्मू जी आज अपनी बेटी के साथ अपना सार्थक और प्रेरणादाई जीवन व्यतीत कर रही हैं।

❖❖❖

मानव विकास हमारे पूर्वज

●प्रिया वर्मा
बी.ए. तृतीय सत्रार्ध

चार्ल्स डार्विन की 'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' नामक पुस्तक से पूर्व साधारण धारणा यह थी कि सभी जीवधारियों को किसी दैवी शक्ति (ईश्वर) ने उत्पन्न किया है, तथा उनकी संख्या रूप और आकृति सदा से ही निश्चित रही है। परन्तु उक्त पुस्तक के प्रकाशन (सन् 1859) के पश्चात विकासवाद ने इस धारणा का स्थान गृहण कर लिया और फिर अन्य जन्तुओं की भांति मनुष्य के लिए भी यह प्रश्न साधारणतया पूछा जाने लगा कि उसका विकास कब और किस जंतु अथवा जंतु समूह से हुआ? इस प्रश्न का उत्तर भी डार्विन ने अपनी दूसरी पुस्तक डिसेंट ऑफ मैन (सन् 1871) द्वारा देने की चेष्टा करते हुए बताया कि केवल वानर (विशेषकर मानवाकार) ही मनुष्य के पूर्वजों के समीप आ सकते हैं। दुर्भाग्यवश धार्मिक प्रवृतियों वाले लोगों ने डार्विन के उक्त कथन का त्रुटिपूर्ण अर्थ, कि वानर स्वयं ही मानव का पूर्वज है, लगातार न केवल उसका विरोध किया, वरन जनसाधारण में बंदरो को ही मनुष्य का पूर्वज होने की धारणा को प्रचलित कर दिया, जो आज भी अपना स्थान बनाए हुए है।

यद्यपि डार्विन मनुष्य के प्रश्न का समाधान न कर सके तथापि उन्होंने दो गूढ़ तथ्यों की ओर प्राणि-विज्ञानियों का ध्यान आकर्षित किया। मानवाकार कपि ही मनुष्य के पूर्वजों के संबंधी हो सकते हैं और मानवाकार कपियों तथा मनुष्य के विकास के बीच में एक बड़ी खाई है, जिसे लुप्त जीवाष्मों की खोज कर के ही कम किया जा सकता है।

उच्च - स्तन्य मानव (प्राइमेट्स)

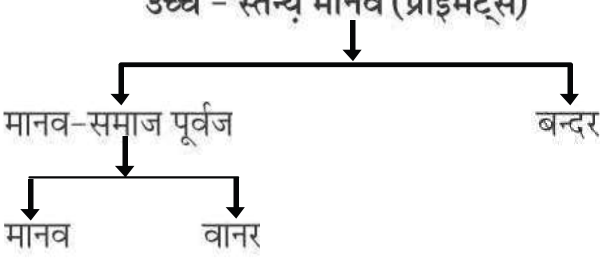

इस वर्ग के प्राणियों के जितने भी परिवार हैं, उन सभी में निम्न सामान्य विशेषताएं पायी जाती हैं-

1. सामान्यत: यह सभी स्तनधारी वर्ग के होते हैं।
2. इनमे दो ही स्तन-ग्रन्थियां होती हैं।
3. आँखें खोपड़ी के मध्य भाग में होती हैं, इस कारण इनमें समदर्शिता का विकास होता है।
4. नासिका क्षेत्र छोटा होता है।
5. इनका मस्तिष्क अपेक्षित 1,100 से 1,500 CC तक दीर्घ होता है।
6. दांतो की संख्या 28 से 36 तक पायी जाती है।
7. हाथ को किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता है, यह इस वर्ग की विशेषता है।

मानव की उत्पत्ति के समय:- मानव के विकास का क्रमबद्ध इतिहास लिख सकना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। प्रागैतिहासिक काल के लगभग 6 प्रकार के प्राचीन प्राइमेट (उच्च-स्तन्य) वर्गीय प्राणियों के अवशेष मिलते हैं। सबसे प्राचीन मानव के अवशेष आदि नूतन युग (Oligocene period) के मिस्र देश से प्राप्त हुए हैं। इसके बाद बड़े-बड़े बन्दरों के वंशजों के अवशेष पूर्वमध्य नूतन युग तथा मध्य युग के यूरोप तथा भारत में पाये जाते हैं। इन सभी प्रस्तरीय अवशेषों से पता चलता है कि ओलीगोसीन युग के उत्तरार्द्ध में वानर के उद्भव के चिह्न दिखायी देने लग गये थे। मिश्र के फयूम (Fayum) क्षेत्र में पाये जाने वाले पैरापियेकरन और प्रोपामायों पिथेकस (PARAPI THECUS) के जीवाश्मों से इन वानरों के पूर्वजों का सम्बन्ध जोड़ा जाता है। दक्षिण-पूर्वी एशिया में पाये जाने वाले गिबन ओराङ्ग-उटान, अफ्रीका के गोरिल्ला और चिपांजी ऐसे ही वानर वर्ग के सदस्य थे।

होमो इरेक्टस -मानव पूर्वज (HOMO ERECTUS)- इस वर्ग के प्राणियों को पूर्व में कई नामों से सम्बोधित किया जाता रहा है, यथा- पिथिकांथ्रोपस (Pithecanthropus in Java) अथवा जावा-मानव, चीन में सिनएन्थ्रोपस (Sinanthropus in china) पीकिंग मानव

अथवा उत्तरी अफ्रीका के आस्ट्रेलोपिथीकस में आपस में समानता पाई गई है।

1. जावा मानव (Pithecanthropus in Java) होमों इरेक्टस वंश के Pithecanthropus मानव को सर्वप्रथम मध्य जावा में सोलो नदी की घाटी मे ट्रिनिल नामक स्थान पर 1891 में खोजा गया था। इस स्थान पर जावा मानव के अस्थि अवशेष कछारी मिट्टी के निक्षेप से प्राप्त हुए थे, जो द्वितीय हिमयुग के समकालीन माने जाते हैं। यद्यपि यह खोपड़ी बहुत छोटी है परन्तु इसकी मस्तिष्कधारिता किसी भी वानर की तुलना में अधिक विस्तृत थी। जावा में इसी प्रकार के अन्य अवशेष और प्राप्त हुए। इन अवशेषों से पता चलता है कि इस प्राणी को सीधा चलना आता था, और दो पैरों से चलता था।

2. पीकिंग मानव (Sinanthropus) सन 1927 में पींकिंग के निकट चाऊ-को-टिन की निचली गुफाओं से जो अवशेष प्राप्त हुए जिसके नीचे से चर्वणक दांत तथा दो वर्ष पश्चात इसी भाग से आदिम प्रकार का सुरक्षित कपाल प्राप्त हुआ। इस भाग से लगभग 40 आदि मानवों के अवशेष प्राप्त हुए, जिसमें मुखाकृति के भाग भी पाये गये हैं। इस पीकिंग मानव का समय द्वितीय हिम युग (लगभग 4 लाख से 2 लाख वर्ष पूर्व) माना जाता है। यद्यपि यह अवशेष उतने पुराने नहीं है जितने कि 'जावा मानव' के। इसी कारण उनसे अधिक विकसित कपाल 'जावा मानव' के माने जाते हैं। इनकी मस्तिष्क- धारिता 1,000 से 1,225 सीसी तक पायी गई है। कई कपालों में तो यह 915 से 1225 सीसी तक पायी गयी है, जो वर्तमान मानव के समान हैं, चीन में पाये गये कपाल की यह विशेषता है कि इनमें चपटी खोपड़ी, भौंहों के ऊपर की हड्डी अधिक बाहर की ओर निकली हुई है तथा मस्तिष्क की दीवारें कठोर हड्डियों से निर्मित पायी गयी हैं, जबकि जबड़ा और दांत बड़े हैं। ठोडी की हड्डी का अभाव पाया जाता है। जावा मानव की अपेक्षा इनका सामने का माथा अधिक विकसित था। इनके दांत मुख्यत: वर्तमान मानव (Homo Sapiens) के समान थे।

3. हिडलबर्ग मानव- होमो इरेक्टस के समकालीन इस मानव समान प्राणी का जबड़ा सन् 1907 में जर्मनी में हिडलबर्ग के निकट 'मायर' (Maver) नामक स्थान से 24 मीटर की गहराई में प्राप्त किया गया था। इस जबड़े की बनावट मानव व वानर दोनों के समान आकार की दिखाई देती है, परंतु अनेक मानवशास्त्री दांतों की बनावट को मानव के समान मानते हैं। ये मानव गुफाओं में निवास करते थे।

❖❖❖

बेरोजगारी की आग

●निकिता जोशी
बी.ए. प्रथम सत्रार्ध

बेरोजगारी की आग है ऐसी,
जीवन की कर रही ऐसी तैसी।
युवाओं को आज छला जा रहा है,
स्टार्ट अप का झांसा दिया जा रहा है।
रोजगार को बनाकर देखो धंधा,
अनुबंध पर लगा, कर रहे अंधा।
आज हर घर का ही होनहार,
महसूस कर रहा बेबस लाचार।
जिन्हें मिला नहीं है रोजगार,
वे सब रोजगार की आस में,
आधी से अधिक उमर जा रही है।
और जिन्हें मिला भी है रोजगार,
कभी भी छिन ना जाए उनसे
उनको यह चिंता सता रही है।
यह बेरोजगारी की बेतरतीब आग
जला रही है हर जान, हर ख्वाब
लपटें खाक कर रही हैं हर सपना।
अब कोई भी रहा नहीं है अपना
मां बाप का छूट रहा है सहारा
आज युवा हर तरफ से ही हारा
चीख चीख कर लगा रहा नारा
दो रोजगार और बनने दो सहारा

❖❖❖

देशप्रेम

●नेहा कबडोला
स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्रार्ध इतिहास

प्रस्तावना- देशप्रेम का अर्थ है - जिस देश में हम जन्म लेते हैं, जहाँ की हवा में हम सांस लेकर जीवित रहते हैं, जिसका अन्न-जल हम खाते पीते हैं, जिस धरती पर हम जीवन के कितने ही सुखमय पल व्यतीत करते हैं, उस भूमि के प्रति हृदय में जो स्वाभाविक प्रेम या लगाव उत्पन्न हो जाता है, उसे ही देश प्रेम की संज्ञा दी जाती है। देश के लिए मरना ही देश प्रेम नहीं है वरन देश के लिए उपयोगी बनकर बहुत समय तक देश की सेवा करना भी देश प्रेम ही है।

स्वदेश का महत्व- बाल्मीकि रामायण में लंका विजय के उपरान्त श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा था-

अपि सुवर्णमयी लकां लक्ष्मण न मे रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

अर्थात् हे लक्ष्मण! लंका भले ही सोने की है पर मुझे रोचक नहीं लगती, क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है।

जिस प्रकार माता बच्चे के जन्म से पूर्व उसका भरण-पोषण और लालन-पालन करती है उसी प्रकार जन्म भूमि अपने कण-कण से व्यक्ति को स्नेह से पालती है। इसीलिए जन्मभूमि को माता की उपमा दी जाती है। जन्मदात्री माता के समान ही मातृभूमि के प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य होते हैं, जिनका पालन प्रत्येक देशप्रेमी सहर्ष करता है। स्वदेश के बिना व्यक्ति के अस्तित्व पर भी प्रश्न-चिन्ह लग जाता है। हम कहीं भी जाएँ, हमारी पहचान हमारे देश के अनुसार होती है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति के लिए स्वदेश का क्या महत्व है, स्वदेश के लिए यदि प्राण न्योछावर करना देश-प्रेम है तो कोई भी ऐसा कार्य करना देशद्रोह या देश के प्रति गददारी है जो देश का अहित करता हो या जिससे देश के सम्मान को ठेस पहुँचती हो। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने स्वदेश प्रेम पर बड़ी सटीक बात कही है-

''है भरा नही जो भावों से बहती जिसमें रसधार नही ।
वह हृदय नही है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नही।।"

देशप्रेम एक उच्च भावना- देश प्रेम एक धरती के टुकड़े मात्र से प्रेम नही है, वरन यह एक ऐसी उच्च भावना है जो संसार के सभी लोगों के हृदय को गौरवान्वित करती है, देश प्रेम की भावना से परिचालित होकर देशप्रेमी अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं। देश प्रेमी अपने प्राणों तक की तनिक भी परवाह नहीं करते।

देशप्रेम की भावना की आवश्यकता- भारत में विभिन्न भाषा-भाषी एवं धर्मावलम्बी निवास करते हैं, इसके साथ ही आज देश में जाति, वर्ग, प्रांत दल आदि के नाम पर विभाजनकारी शक्तियाँ बराबर सक्रिय रहती हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए यह आवश्यक है कि हम इन भेदभावों को भुलाएँ और यह कार्य देशप्रेम की भावना ही करवा सकती है ।

उपसंहार- अपनी सारी विविधताओं के साथ ही हम यह भी याद रखें कि देश है तो हम हैं। देश के बिना हमारा अस्तित्व कुछ भी नहीं। इसलिए देशप्रेम की भावना की आवश्यकता सदा-सर्वदा बनी रहती है, देश प्रेम की भावना कुछ ऐसी होनी चाहिए कि

''ये देश मेरा, ये धरा मेरी, गगन मेरा
इसके लिए बलिदान हो, प्रत्येक कण मेरा''

सफलता के सोपान

● रवीना काण्डपाल
स्नातकोत्तर प्रथम सत्रार्ध (इतिहास)

माना जाता है कि बड़ी सफलता पाने के लिए एक छोटी सी हार या असफलता का होना जरूरी है, क्योंकि सफलता की खुशी की असली वजह वही हार या असफलता है जो हमें कामयाबी से रूबरू कराती है। हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने 'फेल' शब्द का अर्थ ही परिवर्तित कर दिया और बताया FAIL का अर्थ है FIRST ATTEMPT IN LEARNING. श्री अमिताभ बच्चन हिन्दी सिनेमा की जानी-मानी हस्ती हैं। कौन नहीं जानता है कि 1973 में रिलीज्ड 'जंजीर' उनकी एक सफल फिल्म है, परन्तु इससे पूर्व उनकी 17 फिल्में लगातार असफल रहीं।

असंख्य प्रयोगों के असफल होने के बाद ही, थॉमस एल्वा एडिसन, बल्ब का अविष्कार करने में सफल रहे थे। विश्व प्रसिद्ध एवं विश्व में बेस्ट सेलर पुस्तक हैरी पॉटर की लेखिका जे.के. रॉलिंग एक समय में पूरी तरह कंगाल थी। यही नहीं जब वह हैरी पॉटर लिख रहीं थीं तब वह किराये के घर में रहती थीं। लेखिका के रूप में सफल होने से पूर्व उनकी इस कहानी को 12 प्रकाशकों ने नकार दिया था। असफलता को सफलता का सोपान मानने वाली रॉलिंग ने प्रयास जारी रखा, और आज उसका परिणाम हम देख रहे हैं कि हैरी पॉटर ने दुनिया में किस तरह धूम मचा रखी है। हमें याद रखना चाहिए कि हमारी सफलता या असफलता हम पर ही निर्भर करती है, जब तक हम हार न मान लें, कोई हमें नहीं हरा सकता है। आसानी से मिली सफलता से कभी वह खुशी नहीं मिल सकती जो उस सफलता से मिलती है जो कई असफलताओं के बाद मिली हो। सच ही कहा गया है, "सफलता की सच्ची खुशी तो हमे असफलता ही कराती है।"

सफल होने के नियम- 1- हमेशा लक्ष्य पर डटे रहना।
2- आलस्य को टालना और काम करना।
3- चुनौतियों का सामना करना।
4- शक्तिशाली बनना कमजोर नहीं।
5- किसी को किसी कारण कष्ट न देना।
6- संघर्ष के बिना सफलता नहीं मिलती।
7- अपने जीवन को बेहतर बनाने में समय लगाओ।
8- हर सफलता की शुरूआत "मैं कर सकता हूँ" से होती है।

मनुष्य को ध्यान रखना चाहिए कि सफलता आपको मिलेगी या नहीं यह केवल इस बात पर निर्भर करता है कि आप स्वयं सफलता के लिए कितने इच्छुक हैं। छोटे से छोटे कदमों से भी लम्बी दूरी तय की जा सकती है। सफलता का अर्थ प्रत्येक मनुष्य के लिए भिन्न होता है किन्तु सार्वभौमिक रूप से देखें तो अपने समाज में महत्व पाना, अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं का समुचित प्रयोग कर सम्मान पाने का पात्र बनना और लोगो के बीच खुद को एक बेहतर इंसान के रूप में महसूस करना सफलता की सामान्य अवधारणा है। सफलता की गाड़ी भले ही धीरे चलती हो पर वह तुम्हें खुशहाल जगह लाकर छोड़ती है। मेहनत की नींव इतनी मजबूत रखो कि सफलता की इमारत हिल न पाए। जब आप किसी काम की शुरूआत करते हैं तो असफलता से न डरें, और काम को तब तक ना छोड़ें जब तक वह आपके मनमुताबिक पूरा नहीं हो जाता।

❖❖❖

उत्तराखण्ड के गाँधी (प्रमुख व्यक्ति)

●पूजा गोस्वामी
स्नातकोत्तर प्रथम सत्रार्ध (इतिहास)

1. उत्तराखण्ड के गाँधी–	इन्द्रमणि बडोनी
2. गढ़वाल का गाँधी –	इन्द्रमणि बडोनी
3. कमाऊँ का गाँधी –	देवकी नन्दन पाण्डे
4. पहाड़ का गाँधी –	जसंवत सिंह बिष्ट
5. सालम का गाँधी –	राम सिंह
6. सल्ट का गाँधी –	बाबा काशीराम
7. बागेश्वर का गाँधी –	दुर्गा प्रसाद शाह

उत्तराखण्ड की प्रमुख जनजातियाँ

●हिमांशी बोरा
स्नातक तृतीय सत्रार्ध

जनजातियाँ किसी भी सामाजिक परिवेश का वह हिस्सा होती हैं, जिनकी परम्पराएं और संस्कृति उस राज्य की बहुसंख्यक जातियों से अलग होती हैं। इनके लिए सामान्यत: प्रयुक्त होने वाला शब्द आदिवासी है, जो पहाड़ियों या जंगलों में रहते हैं। इन्हें एक प्रकार से उस प्रदेश विशेष का मूल निवासी या प्रारम्भिक निवासी भी कहा जा सकता है। भारतीय विधि ने इन लोगों को 'जनजाति' शब्द से उल्लेखित किया है। उत्तराखण्ड की प्रमुख जनजातियाँ- थारू, जौनसारी, बोक्सा, भोटिया तथा राजि जनजाति के नाम से जानी जाती हैं।

थारू जनजाति- थारू जनजाति उत्तराखण्ड व कुमाऊँ का सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है। थारू जनजाति उधमसिंह नगर के खटीमा, नानकमत्ता, सितारगंज, किच्छा आदि क्षेत्रों में निवास करती है।

उत्पत्ति- कुछ इतिहासकारों के अनुसार ये राजस्थान के थार मरूस्थल से आकर यहाँ बसे जबकि कुछ अन्य इतिहासकारों के मतानुसार किरात वंश से इनकी उत्पत्ति मानी जाती है।

आवास- ये लोग अपना मकान बनाने के लिए लकड़ी पत्तों और नरकुल का प्रयोग करते थे पर वर्तमान में इन्होंने भी ईट-सीमेंट के पक्के मकान बनाने शुरु कर दिए हैं । दीवारों पर चित्रकला होती है। इनकी भाषा मिश्रित है जिसमें हिन्दी, पहाड़ी, अवधी, नेपाली आदि भाषाओं के शब्दों का बाहुल्य है।

वेशभूषा- पुरूष-धोती, अंगा, कुर्ता, टोपी, साफा पहनते हैं। महिलाएं- लहंगा, चोली, काली, ओढ़नी, बूटेदार, कुर्ता आदि पहनती हैं। पारंपरिक रूप से पहने जाने वाले इन वस्त्रों के अतिरिक्त वर्तमान में आधुनिक वस्त्राभूषणों को इन्होंने अपना लिया है।

सामाजिक व्यवस्था- इनमें मातृ सत्तात्मक संयुक्त व एकाकी पारिवारिक प्रथा पायी जाती है। थारू जनजाति में महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा उच्च स्थान प्राप्त है।

विवाह प्रथा- पहले इनमें बदला विवाह प्रथा (बहनों का आदान प्रदान) का प्रचलन था। इस जनजाति में अब मुख्यत: तीन काठी विवाह प्रथा पायी जाती है।

धर्म- थारू जनजाति हिन्दू धर्म को मानती है, ये पाछवन काली, नगरपाई देवी, भूमिया देवता, कारोदेव एवं रावतदेव आदि देवी-देवताओं को पूजती है।

जौनसारी जनजाति- जौनसारी जनजाति राज्य की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय समुदाय है, यह गढ़वाल का सबसे बड़ा जनजतीय समुदाय है।

उत्पति- इनकी उत्पति इंडो आर्यन परिवार से हुई। ये मंगोल प्रजाति की मिश्रित जनजाति है।

निवास- दून व भाबर क्षेत्र जिसमें हर की दून, चकराता, कालसी, लाखामण्डल व उत्तरकाशी के सीमांत क्षेत्र में 85% जौनसारी जनजाति निवास करती है।

भाषा- जौनसारी

आवास- घर लकड़ी व पत्थर के बने होते हैं।

सामाजिक व्यवस्था- इनमें पितृ सत्तात्मक संयुक्त परिवार प्रथा पायी जाती है। परिवार का मुखिया घर का सबसे बड़ा पुरूष होता है ।

विवाह प्रथा- विवाह के पूर्व लड़की को ध्यान्ति व विवाहोरांत रचन्ति कहा जाता है। इनके समाज में कन्या पक्ष को उच्च माना जाता है।

धर्म- ये हिन्दू धर्म को मानते हैं व महासू, बोठा, पवासी, चोलदा देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। इनका प्रमुख तीर्थस्थल हनोल है। इनके मंदिर लकड़ी व पत्थर के बने होते हैं।

भोटिया जनजाति- उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति एक अर्धघुमन्तू जनजाति है। यह जनजाति चमोली, पिथौरागढ़,

उत्तरकाशी, अल्मोड़ा जिलों के उत्तरी भागों में ऊंचाई वाले क्षेत्रों में निवास करती है। इनका निवास स्थान ऋतुओं के अनुसार बदलता रहता है। जाड़ों में ये ढालीय क्षेत्रों में उतर आते हैं जबकि गर्मियों में ये उच्च हिमालयी क्षेत्रों में स्थित बुग्यालों में अपने पशुओं सहित चले जाते हैं।

उत्पत्ति- इनकी उत्पत्ति मंगोल प्रजाति से हुई है। मंगोलों की भांति इनका कद छोटा, चेहरा गोल, सिर बड़ा, आँख छोटी व नाक चपटी होती है। ये स्वयं को किरात वंशीय राजपूत मानते हैं।

आवास- ग्रीष्म ऋतु में ये हिमालय क्षेत्र में 2000 से 3000 मीटर ऊँचाई वाले आवासों में रहते हैं जबकि शीत ऋतु में ये घाटियों में अपने शीतकालीन आवास में लौट आते हैं ।

सामाजिक व्यवस्था- इनके समाज में रंग-बंग (युवा ग्रह) प्रथा का प्रचलन था, विवाह के अवसर पर हाथों में रूमाल लेकर पोंणा नृत्य किया जाता है।

धर्म- अधिकांश भोटिया जनजाति के लोग हिन्दू धर्म को मानते हैं लेकिन कुछ लोगों ने बौद्ध धर्म अपना लिया है। भूम्याल देवता, नंदादेवी, दुर्गा, कैलाश पर्वत आदि इनके आराध्य देवी देवता हैं।

बोक्सा जनजाति-तराई भाबर में सदियों से निवास करने वाले बोक्साओं का वनों से अटूट संबंध है। बोक्साओं के बारे में माना जाता है कि भाबर के आदिमानव बोक्सा ही थे।

निवास- बोक्सा जनजाति के लोग मुख्यतः राज्य के पौड़ी गढ़वाल, देहरादून एवं नैनीताल जिलों के तराई-भाबर वाले इलाकों में निवास करती है।

भाषा- हिन्दी और मिश्रित पहाड़ी।

पहनावा - पुरूष धोती, कुर्ता, सदरी व पगड़ी, तथा महिलाएँ- लहंगा, चोली व ओढ़नी पहनती हैं।

सामाजिक व्यवस्था- परिवार पितृसत्तात्मक होता है समाज में स्त्रियों की स्थिति उच्च है। इनमें एक विवाह होता है। पहले बहु-विवाह प्रथा प्रचलित थी लेकिन अब यह विवाह प्रथा समाप्त हो चुकी है।

धर्म- ये हिन्दू धर्म को मानते हैं, प्रमुख देवी, देवता, महादेव, काली, दुर्गा, लक्ष्मी, राम-लक्ष्मण आदि हैं।

त्यौहार- होली, दीपावली, चैती, नवरात्रि तथा नोबि चैती इनके प्रमुख त्यौहार व मेले हैं।

अर्थव्यवस्था- कृषि व पशुपालन इनके प्रमुख व्यवसाय हैं। पहले इनमें झूम खेती प्रचलित थी किन्तु समय में परिवर्तन और जंगलों की कमी की वजह से इन्होंने स्थायी रूप से खेती को अपना लिया है।

राजी जनजाति- राजी जनजाति राज्य की न्यूनतम आबादी वाली जनजाति है।

उत्पति- राजी जनजाति आग्नेयवंशीय कोल किरात जातियों के वंशज माने जाते हैं, जो प्राचीन काल में पूर्व से मध्य नेपाल तक वास करते थे। इनका कद छोटा, मुख चपटा, होंठ बाहर व घुमावदार होते हैं।

निवास- राजी जनजाति मुख्यतः पिथौरागढ़ जनपद के धारचूला, डीडीहाट, कनालीछीना विकासखण्ड में चम्पावत व नैनीताल के कुछ गांवो में निवास करती हैं। 66% राजी जनजाति पिथौरागढ़ जनपद में पायी जाती हैं।

पहनावा - पुरूष धोती, अंगरखा, पगड़ी व चोटी रखते हैं। महिलाएं ओढ़नी, लंहगा व चोली पहनती हैं।

भाषा- ये मुंडा भाषा बोलते हैं जिसमें स्थानीय भाषा का प्रभाव देखने को मिलता है। तथा बाह्य सम्पर्क हेतु कुमांऊनी भाषा का प्रयोग करते हैं।

सामाजिक व्यवस्था- इनमें बाल विवाह प्रथा प्रचलित है, विवाह के पूर्व सांगजंगी व पिष्ठा संस्कार सम्पन होता है। कारक (कर्क) व मकारा (मकर) संक्राति इनके दो प्रमुख त्योहार हैं।

धर्म- ये हिन्दू धर्म को मानते हैं, तथा मृतकों को गाड़ने व जलाने की प्रथा है।

❖❖❖

पर्यावरण

●दीपक नाथ गोस्वामी
एम.ए. प्रथम सत्रार्द्ध इतिहास

पर्यावरण अर्थात हमारे चारों ओर जो कुछ प्रकृति निर्मित और मानव निर्मित है, वह हमारा पर्यावरण है। इसीलिए पर्यावरण पर हमारा जीवन पूरी तरह निर्भर रहता है। एक स्वच्छ पर्यावरण से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। पर्यावरण जीवन जीने के लिए उपयोगी सारी चीज हमें उपहार के रूप में उपलब्ध करवाता है।

हम सब जानते हैं कि पर्यावरण से ही हमें शुद्ध जल, शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन, प्राकृतिक संसाधनों की प्राप्ति होती है। अर्थात् पर्यावरण के प्रत्येक घटक पर हम और पर्यावरण का प्रत्येक घटक हम पर आश्रित है। लेकिन सब जानते हुए भी आज लोग अपने स्वार्थ और लालच के लिए पर्यावरण के प्रत्येक उपादान का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। पेड़ पौधों की कटाई कर रहे हैं। साथ ही भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर प्रदूषण को बढ़ावा दे रहे हैं जिसका असर हमारे पर्यावरण पर पड़ रहा है।

पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती क्योंकि पर्यावरण ही पृथ्वी पर एकमात्र जीवन के अस्तित्व का आधार है। एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वच्छ वातावरण बहुत जरूरी है लेकिन मनुष्यों की लापरवाही के कारण दिनोंदिन पर्यावरण खराब होता जा रहा है। मनुष्य के लालच के कारण प्राकृतिक संपदा का ह्रास हो रहा है और वातावरण भी अशुद्ध हो रहा है। आज जहां एक ओर वैज्ञानिक उन्नति से तकनीकी और प्रौद्योगिकी को निरंतर बढ़ावा मिल रहा है और सभी राष्ट्र विकास के रास्ते पर निरंतर अग्रसर हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर पर्यावरण प्रदूषण के लिए भी जिम्मेदार बन रहे हैं। आधुनिकीकरण औद्योगिकरण और बढ़ती टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से पर्यावरण पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी सुख सुविधाओं के लिए अत्यंत संवेदनशील हो गया है। वह दिखावे का जीवन जीने का इतना अभ्यस्त हो गया है कि सब कुछ जानने के बाद भी वह अपने स्वार्थ को परे रखकर पर्यावरण के लिए नहीं सोच पा रहा है।

मनुष्य पेड़ पौधों की अंधाधुंध कटाई कर रहा है विकास के नाम पर जंगलों को काट काट कर उनके मध्य से रेलवे लाइन बनाना, सड़के बिछाना या बहुमंजिला फ्लैट्स बनाकर बेचना उसके रोजमर्रा की आदत हो गई है, जिसके कारण जंगल में रहने वाले जंगली जानवरों के जीवन पर ही बुरा असर नहीं पड़ रहा है बल्कि मनुष्य भी प्रभावित हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के बहुत से कारण हैं वर्तमान समय में मानव निर्मित औद्योगिक फैक्ट्रियों से पर्यावरण को ज्यादा नुकसान हो रहा है मानव ने अपनी सुख सुविधा के लिए पर्यावरण की बलि चढ़ा दी है।

हम जिस पर्यावरण में रहते हैं वह बहुत तेजी से प्रदूषित हो रहा है। हम सभी को इसकी सुरक्षा व संरक्षण के विषय में सोचने की आवश्यकता है। हमारे पूर्वजों ने विभिन्न वृक्षों में देवी-देवताओं का निवास बताकर उनके संरक्षण की व्यवस्था की थी तथा अनेकों उपाय किए थे, वे जंगल आज भी सुरक्षित हैं। इसी प्रकार भावी पीढ़ी को भी यह समझने की आवश्यकता है कि उन्हें अपनी प्रकृति व प्राकृतिक संपदा के महत्व के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उन्हें यह बताने की भी आवश्यकता है कि इन संसाधनों का प्रयोग कैसे और किस सीमा तक किया जाए तभी हम पर्यावरण की रक्षा करने में सक्षम होंगे, वरना वह वक्त दूर नहीं जब मानव जाति प्राकृतिक संसाधनों की कमी से त्रस्त होगी और पृथ्वी का पर्यावरण जीवन जीने लायक नहीं बचेगा।

विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाया जाता है। पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने एवं प्राकृतिक पर्यावरण के महत्व को समझने-समझाने के लिए ही हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को जश्न के रूप में मनाने के पीछे का उद्देश्य लोगों के बीच जागरूकता पैदा करना है ताकि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सकारात्मक कदम हम सभी लोग उठा सकें। इस दिन सभी देशों में वृक्षारोपण किया जाता है तथा पर्यावरण को धन्यवाद दिया जाता है कि किस प्रकार निस्वार्थ भाव से बिना कुछ मांगे वह हमें अपनी गोद में से एक मां के समान हमारी जरूरत की सभी चीज हमें देता है और बदले में मात्र संरक्षण के कुछ चाह नहीं रखता। विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के पीछे एकमात्र कारण लोगों के में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना है। भारत के संविधान में नीति निर्देशक तत्वों के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई है। यही नहीं सभी राज्यों की सरकारों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेकों कानून बनाए गए हैं तथा उन कानूनों का शक्ति से पालन किया जा रहा है। भारतवर्ष पहले से ही सांस्कृतिक रूप से प्रकृति से जुड़ा देश है। यहां प्रकृति की गोद में उन ऋषि मुनियों की तपस्थली हुआ करती थी जिन्होंने मानव कल्याण की कामना में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

उत्तराखंड में पर्यावरण को बचाने के लिए अनेकों आंदोलन हुए हैं जिनमें से सबसे प्रसिद्ध आंदोलन चिपको आंदोलन है। इस आंदोलन की शुरुआत चमोली जिले के रैणी गाँव की गौरा देवी ने की थी। जिन्होंने अपने गांव के पेड़ों को काटने से बचाने के लिए अपने साथियों सहित पेड़ों को गले लगा लिया था। उनकी इस पहल के आगे तत्कालीन सरकार को भी झुकना पड़ा था। पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेषकर वृक्षों के संरक्षण हेतु उत्तराखंड में एक प्रसिद्ध आंदोलन आज भी चल रहा है-'मैती'। मैती एक भावनात्मक आंदोलन का रूप इस समय ले चुका है और राज्य के अधिकांश गांवों में एक संस्कार के रूप में इसको अपना लिया गया है। मैती का अर्थ होता है मायके का, या मायके से। इस आंदोलन में शादी के समय दूल्हा-दुल्हन फेरों के बाद एक पेड़ लगाते हैं, तथा दुल्हन के घर वाले उस पेड़ की देखरेख करते हैं। इस आंदोलन को शुरू करने का श्रेय श्री कल्याण सिंह रावत मैती को जाता है। सरकार द्वारा इस कार्यक्रम के प्रोत्साहन हेतु मैती पुरस्कार की भी शुरुआत की गई है।

❖❖❖

मतदाता दिवस

●अंजली बोरा
बी०ए० तृतीय सत्रार्ध

आओ लोकतंत्र का पर्व मनाएं,
वोट देकर अपना हम फर्ज निभाएं।
देश के प्रति यह कर्तव्य हमारा है,
चलो, हम सब मतदान कर आएं।
सारे कामकाजों को छोड़ कर,
चलो आज मतदान केन्द्रों पर।
अपना वोट बेकार न जाने पाए,
सोच समझ कर सब वोट कर आएं।
चारों ओर चेतना का प्रकाश फैलाएं,
चलो अपने प्रतिनिधि को चुनकर लाएं।
वोट है सबके भविष्य का आधार,
होने न देंगे हम कभी इसको बेकार।
मतदान करेगा जब हर व्यक्ति,
तभी बढ़ेगी इस देश की शक्ति।
लोकतंत्र की है आज सबसे विनती,
है हर एक लोक, हर एक वोट कीमती।

❖❖❖

सोबन सिंह जीना

● कृष्णा महतोलिया
बी.एस.सी. पंचम सत्रार्ध

सोबन सिंह जीना जी का जन्म 04 अगस्त 1909 को ग्राम-सुनौली, स्यूनरा, जिला अल्मोड़ा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री प्रेम सिंह जीना तथा माता का नाम श्रीमती कुन्ती देवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बसौली में हुई थी, इसके बाद राजकीय इण्टर कालेज नैनीताल से हाईस्कूल तथा राजकीय इण्टर कालेज अल्मोड़ा से इण्टरमीडिएट की परीक्षा इन्होंने उत्तीर्ण की। पढ़ने में होशियार होने के कारण इन्हें इलाहाबाद भेज दिया गया। वहाँ से इन्होंने बी.ए. तथा एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुशाग्र बुद्धि के धनी सोबन सिंह जीना ने हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इस कारण इन्हें कई छात्रवृत्तियाँ मिलती थी। 1933 में इन्होंने वकालत प्रारम्भ की और एक लोकप्रिय तथा सफल अधिवक्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए। वह एक प्रबुद्ध अधिवक्ता के साथ-साथ कर्मठ समाजसेवक भी थे। वे अल्मोड़ा जिला परिषद शिक्षा कमेटी के चेयरमैन भी निर्वाचित हुए थे। इस दौरान वे ग्रामीण जनता तथा वहाँ कार्यरत शिक्षकों से भी मिले। यहाँ से उन्हें जीवन की कठिनाइयों के बारे में जानकारी मिली। ये अल्मोड़ा बार एसोएिशन के अध्यक्ष जीवन पर्यान्त रहे। इन्होंने जनसंघ की ओर से लोकसभा तथा विधानसभा के चुनाव भी लड़े।

सोबन सिंह जीना ने कुमाऊँ राजपूत परिषद नामक संस्था के माध्यम से कुमाऊँ में कई क्षेत्रों में सुधार लाने में सक्रिय भूमिका निभाई। ब्रिटिश सरकार ने इन्हें 'राय बहादुर' की पद्वी भी प्रदान की गई थी। इन्होंने शिक्षण संस्थानों का संरक्षण तथा सहायता करके कई निर्धन छात्र-छात्राओं की मदद की थी। ये अल्मोड़ा इंटर कालेज, अल्मोड़ा महाविद्यालय, बाड़ेछीना तथा पिथौरागढ़ कॉलेजों के संस्थापक व व्यवस्थापक भी रहे। 1977 में जीना जी अल्मोड़ा के बारामण्डल से उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए विधायक चुने गये। फिर उन्हें पर्वतीय विकास मंत्री बनाया गया। उन्होंने पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए कई कार्य किये। पहाड़ के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए पर्वतीय भत्ता, सिद्धांतों के अनुसार देने की मांग तत्कालीन मुख्यमंत्री से की, जिसे स्वीकार कर लिया गया। उन्होंने 'पताका' नामक साहित्यिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। जिसमें वे हिमालय के आर्थिक व साहित्यिक पक्षों को उजागर करने वाले लेख लिखते थे। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से विचार व्यक्त किया कि मैदान के जिलों के लिए तैयार की जानी वाली योजनाओं को पहाड़ों में लागू नहीं किया जा सकता। पहाड़ के लिए बनायी जाने वाली योजनाओं में स्थानीय व्यक्तियों की राय आवश्यक है। शैक्षिक उन्नति के द्वारा सामाजिक बुराइयों को दूर किया जा सकता है और शैक्षिक पिछड़ेपन को अभिशाप मानते हुए वे शैक्षिक प्रगति के लिए जीवन पर्यन्त कार्य करते रहे। इस प्रकार समाज तथा वंचित वर्ग के लिए उन्होंने कई प्रयास किये। इस प्रकार जीना जी एक कुशल प्रशासक, कानूनविद तथा स्वयंसेवक थे। 2 अक्टूबर 1989 को जीना जी यह संसार त्याग कर चले गये। शिक्षा के प्रति सर्मपण देखते हुए अल्मोड़ा कैम्पस का नाम बदलकर सोबन सिंह जीना परिसर रखा गया और वर्ष 2020 सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय हो गया।

❖❖❖

कोविड -19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

●बबीता नेगी
बी.ए.तृतीय सत्रार्ध

कोरोना एक वायरस जनित रोग है, इसे कोविड-19 भी कहते हैं। यह वाइरस सबसे पहले चीन के 'वुहान' नामक शहर में फैला था। इस वायरस ने न केवल चीन की अर्थव्यवस्था बिगाड़ी बल्कि विश्व के सभी देशों की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करके रख दिया। इस वायरस ने महामारी का रूप ले लिया और विश्व में तबाही मचा दी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित कर दिया। प्रारम्भिक रुप से इस वायरस के लक्षण सर्दी, जुकाम, खांसी छोटी-मोटी परेशानी ही थी, लेकिन आगे चलते-चलते यह वाइरस रोगी के श्वसन तंत्र को खराब कर दे रहा था। जिससे में कई रोगियों की मृत्यु हो गई थी। अपने प्रारंभिक चरण में यह वाइरस इतना अधिक जानलेवा नहीं था लेकिन इसकी द्वितीय लहर पहली लहर की तुलना में मानव के लिए बहुत अधिक हानिकारक साबित हुई।

कोरोना के लक्षण- कोरोना के प्रमुख लक्षणों में खांसी, सर्दी, बुखार, गले में खरास, शरीर में थकान, सांस लेने में दिक्कत, लंबे समय तक थकान आदि दिखाई दे रहे थे।

लॉकडाउन का प्रभाव- कोरोना या कोविड-19 ने विश्व भर में आतंक का माहौल पैदा कर दिया। इससे बचने के लिए भारत समेत अन्य देशों ने महामारी के लिए लॉकडाउन का प्रयोग किया। लॉकडाउन से अभिप्राय आपातकालीन स्थिति से है, जिसमें संपूर्ण बाजार, शहर, गांव क्षेत्र तालाबंदी की स्थिति में आ गए। इस आपातकालीन स्थिति को और अधिक ज्यादा प्रभावी बनाने के लिए सरकार ने कई जगह कर्फ्यू तक लगा दिए। भारत में 24 मार्च 2020 को प्रधानमंत्री की घोषणा के साथ ही संपूर्ण लॉकडाउन लागू किया गया। इस पूरी महामारी के दौर में न केवल सामान्य शारीरिक क्षति हुई बल्कि अर्थव्यवस्था पर भी बहुत बुरा असर दिखाई दिया।

कोरोना से बचाव- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड-19 महामारी से बचने के लिए कुछ सावधानियों की सूची निकाली और यह बताया कि कोविड-19 से बचने के लिए मूलमंत्र है - सदैव घर से बाहर निकलने के बाद लोगों के मध्य कम से कम 5 फीट की दूरी बनी रहे। सदैव मास्क व ग्लव्स का प्रयोग किया जाए तथा सामाजिक दूरी का पालन किया जाए। संक्रमण की स्थिति में खुद को दूसरे से अलग रखा जाए जिससे वायरस की संक्रमण की प्रक्रिया धीमी हो जाए।

कोरोना वायरस का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव- कोविड -19 से बचाव के लिए किए गए लॉकडाउन से जहां पर्यावरण प्रदूषण कम हुआ वहीं दूसरी ओर अर्थव्यवस्था का विकास रुक गया। इस समय कोविड-19 वायरस के चलते दो मुख्य समस्या देखने में आई। कोविड -19 संक्रमण से रोकथाम के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रयास किए गए और लोगों के द्वारा अपने घरों में रहकर इसके रोकथाम के प्रयास जारी रहे। इसका असर यह हुआ कि एक बहुत बड़ा वर्ग अपने काम से हाथ धो बैठा। एक बहुत बड़ा श्रमिक मजदूर और बेरोजगार वर्ग पैदा हुआ जो आज तक रोजमर्रा के जीवन में विविध बाजारों में, मॉलों में, सिनेमाघरों में, अस्पतालों में, ट्रैफिक सिग्नलों पर या अन्य स्थानों पर कार्य करता था वह इस लॉकडाउन की स्थिति में अचानक से बेरोजगार हो गया। हालांकि कोविड-19 की वैक्सीन बनाने के बाद तथा सभी को इसका प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराने के बाद यह स्थिति काफी हद तक संभल गई।

बेरोजगारी को बढ़ावा- कोविड-19 वायरस को कम करने के लिए लॉकडाउन लगने से लोगों को अपने काम से हाथ धोना पड़ा, जिससे बेरोजगारी को बढ़ावा मिला। बड़े कंपनियों के कर्मचारी अपने घर से ही वर्क फ्रॉम होम कर रहे थे लेकिन अन्य दैनिक श्रमिक, कारीगर या मजदूर वर्ग के लिए अपने रोजमर्रा की चीजों को जुटा पाना भी मुश्किल हो गया ।

सरकार की आय में कमी - वस्तुओं का उत्पादन घटा जिससे बिक्री कम होने से सरकार की आय का कम होना भी एक इसका प्रभाव रहा।

पर्यटन उद्योग का पतन - कोविड-19 के दौरान जब सभी व्यक्ति अपने घरों में स्वयं को सुरक्षित करने तथा इस महामारी से लड़ने में लगे थे, तो पर्यटन उद्योग को बहुत अधिक क्षति उठानी पड़ी। कई होटल कर्मचारी तथा पर्यटन के रोजगार से जुड़े लोग इसकी चपेट में आए।

उपभोक्ता की गतिविधि में कमी -बेरोजगारी से लोगों की उपभोग करने की क्षमता कम हो गई। अब व्यक्ति कम से कम उपभोग करने के लिए बाध्य हो गया।

धातुओं की कीमत में गिरावट - कोविड -19 से कीमती वस्तुओं की कीमत में गिरावट देखने को मिली।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कोरोना एक जानलेवा बीमारी है। यह बीमारी कभी भी किसी भी व्यक्ति को हो सकती है, क्योंकि वायरस का अंत नहीं होता वह अपना रूप बदल लेता है। इसलिए हमें सावधानी बरतनी चाहिए और आवश्यक दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए।

❖❖❖

गली - गली में बिक रहा है मौत का सामान

●दीपा देवी
शोधार्थी- शिक्षाशास्त्र विभाग

देखो, यह कैसा अनोखा नशे का संसार है
गली-गली में बिक रहा मौत का समान है।
धुआँ-पाउडर कहीं, बोतलें कहीं खाली जाम है
गली-गली में हो रहा संस्कारों का अपमान है,
पैसा बस पैसा कमाना बन गया जरूरी काम है
गली-गली में बिक रहा मौत का समान है।
माँ का दुलार परवरिश पिता की, नशे के नाम है
नशा धरती इनकी, नशा ही इनका आसमान है
नशा है हकीकत इनकी, नशा ही ख्वाब-ए जहान है
हर इक जगह बेच रहे सब मौत का समान है ।
उठो! जागो! कब तक ये मौत का मंजर देखोगे
दरिया-ए नशा पहुंचे तुम तक, तब व्यापार रोकोगे?
एक बेचता एक खरीदता बर्बाद हो रहा जहान है
गली-गली में रहा बिक रहा मौत का समान है।
आओ सभी मिल कर आज हम संकल्प करें
न बेचेंगे-खरीदेंगे, इस विष को न हाथ लगाएंगे
जहां महसूस भी हो यह वहीं आवाज उठायेंगे
प्यारे संसार से नशे का नामों निशान मिटाएंगे
अपना हो या हो पराया, बच्चे-बच्चे को बचाएंगे।

❖❖❖

स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत

● सुष्मिता
बी.ए. द्वितीय सत्रार्ध

कहीं नालियों की गंध, तो कहीं कचरे का ढेर
उठो जागो स्वच्छता अपनाओ, हो न अब अबेर।

यही हाल था उस देश का जो पहले सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था। चारों तरफ हरियाली, खुली हवा, स्वस्थ परिवेश, स्वच्छ भारत का सपना देखने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 145वीं जयन्ती के अवसर पर, हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने, 2 अक्टूबर 2014 को गांधी जी के स्वप्न को साकार रूप देने के लिए 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' का अभियान एक क्रान्ति के रूप में देश के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा, ''मेरे प्यारे देशवासियों, एक ओर जहाँ बाह्य वातावरण की गन्दगी ने अनेक प्रकार के प्रदूषणों से मानव जीवन को खतरे में डालकर सोने की चिड़िया रूपी भारत माता के शरीर को अनेक रोगों से रोगग्रस्त कर दिया है, वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति से आई गंदगी ने भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अनाचार, पापाचार एवं अत्याचार जैसे कीटाणुओं द्वारा भारत माता की आत्मा को ही झकझोर कर रख दिया है। वे भी अनेक प्रकार की रासायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाओं से और भी जहरीले हो गये हैं। यह सब संकट पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति और प्रकृति को जड़ समझने के कारण पैदा हुआ है। मित्रों! पाश्चात्य संस्कृति की गन्दगी ने मानव के शरीर को ही नहीं बल्कि मन, विचार व भावना को भी अपने जाल में ऐसे उलझा दिया है कि सब धन धूलि समान समझने वाले इस देश के मानव को भ्रष्टाचार, व्यभिचार, पापाचार, अनाचार और अत्याचार करते देखने या सुनने पर अत्यन्त पीड़ा होती है। सर्वे भवन्तु सुखिन: की कामना करने वाले देश में हत्या या लूटपाट को स्थान कहाँ परन्तु स्वच्छता हेतु प्रयास तो करने ही होंगे। कहा गया है! अन्धकार को मत धिक्कारो, अच्छा है एक दीप जलाओ। देशभक्त नागरिक होने के नाते आपने भी भावी भारत का सपना देखा होगा। क्या ऐसा ही होना चाहिए आपके स्वप्नों का भारत? नहीं, तो शुरुआत स्वयं से करें अपने घर-आँगन से करें। गाँव के रास्ते पानी के धारे, नौलों से करें, अपने विद्यालय से करें। शहर की सड़क, पार्क, स्टेशन साफ स्वच्छ रहेंगे, विदेशों की तरह चमचमाते होंगे तो हमारे भारत की साख विदेशों में भी बढ़ेगी। वक्त जरूर बदला और 2 अक्टूबर 2019 को महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती पर हमने उन्हें स्वच्छ भारत का तोहफा दिया था।" माननीय मोदी जी के वक्तव्य के समर्थन में मैं कहना चाहूँगी कि-

ठोकर खाते इंसान को भी मंजिल पाते देखा है,
जो मुरझा रहे थे, एक पल में उन्हें खिलते देखा है।

अन्त में मैं सभी गुरुजनों व प्रिय भैय्या बहिनों से कहना चाहती हूँ कि आज वास्तव में जरूरत है भारत को नई पहचान दिलाने की। साथ ही मैं भारत के प्रत्येक व्यक्ति का सन्देह मिटाना चाहती हूँ कि भारत में बदलाव नहीं आ सकता है, क्योंकि मैं जानती हूँ कि परिवर्तन लाने से ही आता है। आज जरूरत है कि हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने भारत देश को स्वच्छ, स्वस्थ व स्वर्ग बनाएंगे।

❖❖❖

एक कदम स्वच्छता की ओर

उत्तराखण्ड के परम्परागत व्यंजन और उनकी विशेषताएं

●दीप्ति कोरंगा
बी.एससी. प्रथम सत्रार्ध

जब भी बात देवभूमि उत्तराखण्ड की आती है, तो यहाँ के व्यंजनों को खूब पसंद किया जाता है, फिर चाहे बात झंगुरे की खीर की हो या मंडुवे की रोटी और भांग की चटनी की। उत्तराखण्ड का पारंपरिक खानपान गुणवत्ता और स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद लाभकारी माना जाता है। भारत ही नहीं विदेशों में भी पहाड़ का मंडुवा, झंगोरा, काले भट्ट, गहत, तिल आदि अपनी मार्केट बना रहे हैं। उत्तराखंड के व्यंजन पहाड़ी संस्कृति की शान है। अपने पारंपरिक भोजन के बिना उत्तराखण्ड की संस्कृति अधूरी है। प्रकृति की गोद में बसा उत्तराखण्ड केवल सौंदर्य के लिए ही नहीं अपितु अपने पारंपरिक प्रचलित भोजन के स्वाद के लिए भी देश विदेश में मशहूर है। अपनी संस्कृति को जीवित रखते हुए राज्य के निवासियों द्वारा तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवान बनाये जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होने के साथ-साथ शुद्ध एवं तरोताजा करने योग्य होते हैं। इस लेख के माध्यम से मैं आप लोगों के साथ उत्तराखण्ड के पारंपरिक भोजन के बारे में जानकारी साझा करना चाहती हूँ-

उत्तराखण्ड के प्रमुख व्यंजन- मंडवे की रोटी, गहत की दाल, चौंस, आलू गुटुक, डुबुक, भांग की चटनी, बाड़ी

मंडवे की रोटी उत्तराखण्ड के पारंपरिक भोजन में से एक है। हरी सब्जी और घी गुड़ के साथ परोसे जाने वाली मंडवे की रोटी पहाड़ी खान-पान का स्वादिष्ट व्यंजन है। पौष्टिक तत्वों से भरपूर मंडवा ऑर्गेनिक तौर-तरीके से उगाया जाता है, जो कि स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होने के साथ-साथ विभिन्न रोगों के उपचार का कार्य भी करता है।

गहत की दाल पहाड़ी स्वाद को चरम तक पहुँचाने में गहत की दाल उत्तराखण्डी प्रमुख व्यंजनों में से एक है। उत्तराखण्ड में अत्यधिक उत्पादन होने के कारण यह दाल हफ्ते में दो दिन हर पहाड़ी घर में बनाई जाती है। गहत की दाल और भात के साथ पुदीने की चटनी का अलग ही स्वाद होता है। गढ़वाल में गहत की दाल का फाणा तथा चीला भी बनता है जिसे पटुड़ी कहा जाता है, स्वादिष्ट होने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मददगार साबित होता है।

चैंस में उड़द और भट्ट की दाल को पीसकर गाढ़ा पकाया जाता है । इसके स्वाद के लिए इसमें बारीक टमाटर, प्याज, अदरक का पेस्ट बनाकर खूब पकाया जाता है। यह भी उत्तराखण्ड के स्वादिष्ट व्यंजनों में से एक है।

आलू गुटुक उत्तराखण्डी प्रसिद्ध व्यंजनों में से एक है। पहाड़ी ऑर्गेनिक आलुओं को उबाल कर जख्या के तड़के लगा आलू का गुटका संजय मिश्रा जैसे बॉलीवुड सेलेब्रिटीज की भी पसंद है। भांग की चटनी और ककड़ी के रायते के साथ इसका स्वाद दुगना हो जाता है।

डुबुक उत्तराखण्ड के सबसे लोकप्रिय भोजन में से एक का खिताब पाने वाला डुबुक आपके पेट और सेहत के लिए फायदेमंद है। पहाड़ी भट्ट और सोयाबीन को भिगोकर पीसकर बनाया जाने वाला यह व्यंजन प्रोटीन का भी सबसे बड़ा स्रोत है। चावल और भांग की चटनी के साथ इसका स्वाद कमाल का होता है ।

भांग की चटनी- भांग उत्तराखंड की प्रमुख फसलों में से एक है। इसके बीजों का स्वाद अपने आप में अनूठा है। इसकी चटनी बच्चे-बूढ़े सभी को पसंद आती है।

उपसंहार - जैसा कि हम सभी जानते हैं कि उत्तराखण्डी भोजन स्वादिष्ट होने के साथ-साथ गुणकारी और लाभदायक भी होता है। यह हमें विभिन्न रोगों से बचाता है। साथ ही आयुर्वेदिक चिकित्सक भी बताते हैं कि पहाड़ी अनाज सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है। मंडवा मधुमेह की बीमारी में बेहद कारगर है। यह शरीर में चीनी की मात्रा नियंत्रित कर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। साथ ही यह पेट की समस्याओं से निजात दिलाता है। मंडवे में फाइबर अधिक मात्रा में पाया जाता है जो वजन कम करने में भी सहायक होता है। काले भट्ट में प्रोटीन प्रचुर मात्रा होता है। गहत की दाल की तासीर गर्म होने के कारण यह गुर्दे की पथरी में बेहद फायदेमंद है। ❖❖❖

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

●दीप्ति कोरंगा
बी.एससी. प्रथम सत्रार्ध

मतदाता जागरूकता से तात्पर्य हर एक व्यक्ति को मतदान के प्रति जागरूक करना है। हमारे देश में लोकसभा राज्यसभा के चुनाव समय-समय पर होते रहते हैं। इन्हीं चुनावों पर हमारे देश का भविष्य निर्भर होता है क्योंकि चुनावों द्वारा चयनित नेता ही विधायिका में जाकर देश के लिए कानूनों का निर्माण करते हैं। मतदाता जागरूक हो तो एक अच्छे नेता को चुनकर अपने देश को प्रगति के शिखर पर ले जा सकते हैं।

मतदाता जागरूकता के अभाव में नुकसान- मतदाता जागरूकता न होने से हमारे समाज को बहुत सारे नुकसान उठाने पड़ सकते हैं। यदि हमारे देश के नौजवान मतदान के प्रति जागरूक नहीं होते हैं तो, अपने मतदान के अधिकार का समुचित प्रयोग नहीं कर पाएंगे, जिससे बच्चे बूढ़े नौजवान सभी का भविष्य अंधकारमय हो सकता है। हम सभी मिलकर अपने मतदान द्वारा जिन लोगों का चुनाव करते हैं वह हमारे देश की नीतियों के निर्धारण में अहम भूमिका निभाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो मतदान का महत्व ही नहीं समझते, वह सोचते हैं कि सिर्फ हमारे मतदान करने से क्या होगा ? उनकी यह सोच गलत लोगों के चुनाव को बल प्रदान करती है। मतदाता जागरूक नहीं होने से आज भी बिजली, पानी, रोजगार भ्रष्टाचार जैसी मूलभूत समस्याएं हमारे देश में बनी हुई हैं।

सर्वप्रथम तो देश के हर नागरिक को इस बात का एहसास होना चाहिए कि सरकार हम अपनी इच्छानुसार बना सकें, अपने लिए अपनी सरकार का चयन कर सकें। इसके लिए हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने प्राणों की आहुति से लेकर कई प्रकार के बलिदान दिए तब जाकर हमें मतदान का अधिकार मिला। इसलिए भी हमें इसका सम्मान करना चाहिए। मतदाता जागरूकता से हमारे देश को हमारे समाज को बहुत लाभ हुए हैं। हर किसी को पैसे की जरूरत होती है लेकिन जब बारिश ही नहीं होगी तो फसल अच्छी कैसे होगी ? लोगों के मतदान जागरूकता की वजह से एक अच्छा नेता हमारे बीच में आकर पूरे देश की शहर और गांव की तस्वीर बदल देता है। नौकरी करने वालों के लिए भी एक अच्छा नेता एक अच्छा नियम बनाता है।

देश के सभी नौजवानों को जागरूक करने के लिए 2011 से हर साल 25 जनवरी को मतदाता दिवस मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य यही है कि प्रत्येक युवक और युवती बिना किसी डर के चुनावों में अपना मतदान करें। इस मतदान के महत्व को समझें कि मतदान देकर हम अपने लिए एक अच्छा भविष्य चुनते हैं। हम ऐसे नेता चुनें जो हमारे लिए कुछ अच्छा करें जो हमारे लिए हितकारी योजनाएं बनाएं। आज हमारे देश में अशिक्षितों और बेरोजगार नौजवानों को बहला-फुसला कर उनसे वोट खरीदे जाते हैं। सभी को मतदान जागरूकता दिवस को मनाते हुए देश के भविष्य बारे में सोचना चाहिए। हमें कभी भी किसी प्रकार के लालच में नहीं आना चाहिए और मतदान द्वारा देश को ऐसा नेता प्रदान करना चाहिए जिसकी देश को जरूरत है। हम यह कहना चाहते कि मतदाता जागरूकता हमारे एवं देश के भविष्य के लिए अति आवश्यक है ।

मतदाता जागरूकता अभियान- इस अभियान को चलाने के पीछे भावना यही है कि हम एक लोकतांत्रिक देश के स्वतंत्र नागरिक हैं। लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत जितने अधिकार नागरिकों को मिलते हैं उनमें सबसे बड़ा अधिकार है वोट देने का अधिकार। इस अधिकार को पाकर हम मतदाता कहलाते हैं। वही मतदाता जिसके पास यह ताकत है कि वो सरकार बना और सरकार गिरा भी सकता है। 26 जनवरी 1950 को जब हमारा देश गणतंत्र बन रहा था, उसके एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को देशभर में सभी चुनावों को निष्पक्षता के साथ कराने लिए भारत निर्वाचन आयोग का गठन हुआ। 2011 में भारत सरकार ने चुनावों में लोगों की भागीदारी बढ़ाने, जागरूकता लाने, निर्वाचन आयोग के गठन दिवस को राष्ट्रीय मतदाता दिवस घोषित करने तथा

इस दिवस को प्रतिवर्ष मतदाता जागरूकता दिवस के रूप में मनाने का ऐलान किया।

निष्कर्ष- 25 जनवरी को यह तारीख प्रतिवर्ष हमें यह भी याद दिलाने आती है कि सिर्फ मतदान कर देना मात्र ही लोकतंत्र के निर्माण में भूमिका नहीं है। मतदान कर देने से हम अपने सपनों का भारत नहीं बना सकते। लोकतंत्र के निर्माण में सहभागिता के लिए सिर्फ वोट का एक दिन नहीं पूरे पांच साल हैं। हम मतदाता ही हैं जो कि उम्मीदवार को इस सच्चाई से वाकिफ करा सकते हैं। चुनाव सिर्फ हार-जीत का ही मौका नहीं होता है, बल्कि यह मौका पिछले 5 साल जनप्रतिनिधि द्वारा किए गये कार्य व व्यवहार के आकलन का भी होता है।

❖❖❖

एक थी प्यारी बिटिया रानी

●आलोक नौटियाल
शोधार्थी हिन्दी विभाग

एक थी प्यारी बिटिया रानी,
ट्विंकल उसका नाम बखानी।
अलीगढ़ वासी थी वह प्यारी
भारत मां की थी वह दुलारी।।

दुर्गा सती सावित्री थी वो,
पालनहारी देवी थी।
धर्म भूमि पर जन्मी थी वो,
आखिर उसको तुमने मार दिया।।

अरे शर्म करो तुम भारत वासी,
तुम कैसे मक्कार हुए।
मां बहनों का शीश झुका कर,
तब, खुद को तुम महान कहे।

क्या है, इस देश का कानून,
क्या नादानों को सताना है?
क्या जुर्म किया था उस बच्ची ने,
जो मां की न्यारी-प्यारी थी।।

दो वर्ष की नन्ही जान वह,
जिसे तुमने तड़फाया है।
चीखी वह चिल्लाई होगी,
आंख मूंद कर सुलाया है।।

हाथ काट कर जिस्म जलाकर,
उसका तो परिहास किया।
क्या थी उस नादान की गलती,
जो उसका तुमने बेहाल किया।

अरे राजतंत्र के सैनिक योद्धा,
अब तुमको दिखाना है।
इन दानव हत्यारों को तो,
फांसी देकर जलाना है।।

एक भी तिनका बच ना सके और,
दुनिया को दिखाना है।
फिर आ न सके ऐसा रावण कोई,
नारी को बचाना है।।

यह भूमि है भारत मां की यारों,
जहां नारियों का सम्मान हुआ।
पर यह कैसा युग आया यारों,
जो इंसानियत को ही भूल गया।।

ना हो पैसा ना हो कपड़ा,
ना खाने को राशन हो।
आए हो इस धर्म भूमि पर
परोपकारिता दिखाओ यार ।।

यह धर्म भूमि है, राष्ट्रभक्ति की,
राष्ट्र को बचाना है।
हम भारत मां के वासी हैं,
हमें भारत को बचाना है।।

❖❖❖

भारतीय अर्थव्यवस्था

●रिया बोरा
बी.ए. द्वितीय सत्रार्ध

"मैं हमेशा भारत के भविष्य की क्षमता के बारे में बहुत आश्वस्त और बहुत उत्साहित रहा हूँ । मुझे लगता है कि यह एक बड़ी क्षमता वाला देश है।" रतन टाटा। उदारीकरण नीति को अपनाने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 1990 के दशक के शुरुआत में भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई और साथ ही साथ भारत में मुद्रास्फीति की दर भी बढ़ी।

भारतीय अर्थव्यवस्था के अंग- **सार्वजनिक क्षेत्र**- इसमें सभी आर्थिक संगठन शामिल हैं, जो सरकार स्वामित्व वाली उत्पादन इकाईयाँ इसके अंतर्गत आती हैं। ये इकाईयाँ कल्याणकारी उद्देश्य से आम जनता के बीच वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और वितरण करती हैं। महात्मा गांधी के अनुसार भारत का जीवन गाँव में है। भारत में कुल आबादी का लगभग तीन चौथाई भाग ग्रामीण क्षेत्र में रहता है। इस क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय खेती और सम्बद्ध गतिविधियाँ हैं। **निजी क्षेत्र**- इसमें सभी आर्थिक उद्यम शामिल हैं जो निजी उद्यमियों द्वारा नियंत्रित और प्रबंधित किये जाते हैं। सभी निजी स्वामित्व वाली उत्पादन इकाईयाँ इसके अन्तर्गत आती हैं। ये इकाईयाँ लाभ के उद्देश्य से लोगों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और विकास करती हैं। भारत में कुल आबादी का एक चौथाई शहरी क्षेत्र में रहता है। इसमें कस्बे और शहर शामिल हैं। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग मुख्य रूप में द्वितीयक क्षेत्र या तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत हैं।

भारतीय लोग बड़ी गतिशील, विविध अर्थव्यवस्था, विनिर्माण उद्योगों, कृषि, कपड़ा और हस्तशिल्प और सेवाओं सहित प्रमुख क्षेत्रों में लगातार विस्तार कर रहे हैं। कृषि इस क्षेत्र से अपनी आजीविका अर्जित करने वाली 68 प्रतिशत से अधिक भारतीय आबादी के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख घटक है।

❖❖❖

पहाड़ की नारी

● निशा नेगी
एम.ए. चतुर्थ सत्रार्ध

स्वभाव में सरलता पहाड़ सी,
व्यवहार में माधुर्य पहाड़ के पानी सा।
कठिनाई से हंस कर लड़े,
थकान को चेहरे पर सिकन न पड़े।
परिवार को रखती है बांधे,
मुश्किलों का सामना करती साँसे साधे।
सरल नहीं किसी पहाड़न की जिन्दगी,
हर दिन करती है कर्म की नई बन्दगी।
हर पहाड़न की है अपनी एक कहानी,
देखने सुनने में लगती है सुहानी।
सुहानी पहाड़ी नदी सी बलखाती,
टकराती पहाड़ों से नई राह बनाती।

❖❖❖

एक नारी

● हिमानी भाकुनी
बी.ए. तृतीय सत्रार्ध

एक नारी
सुख-दुख सब पर भारी
माता-पिता की दुलारी
जाने क्यों बड़ी हो जाती है
जिम्मेदारियों में फंस जाती है
अनेक रूप हैं जिसके दिखते
मां बहन पत्नी बेटी सभी बनती है
पर नहीं बन पाती है कभी प्राणी।
एक नारी
बाहर समाज में हो जाती है छोटी
देख सब की नियत होती है खोटी
वही नारी
जो घर में कई रूपों में पूजी जाती है
बाहर निकलते ही, बन जाती है बेचारी
क्यों बन जाती है बेचारी
वही एक नारी।

शैलेश मटियानी

● **पूजा बिष्ट**
बी.ए. पंचम सत्रार्ध

शैलेश मटियानी का जन्म उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊं मण्डल में अल्मोड़ा जिले के बाड़ेछीना नामक गाँव में 14 अक्टूबर,1931 को हुआ था। उनका मूल नाम रमेश चन्द्र सिंह मटियानी था। बारह वर्ष की अवस्था में उनके माता-पिता का देहांत हो गया था तब वे पाँचवी कक्षा में पढ़ते थे। माता पिता की मृत्यु के बाद वह अपने चाचा लोगों के संरक्षण में रहे। किन्हीं कारणों से निरन्तर विद्याध्ययन में व्यवधान पड़ गया और पढ़ाई रुक गई। इस बीच उन्हें बूचड़खाने तथा जुए की नाल निकालने का काम करना पड़ा। पाँच साल बाद 17 वर्ष की आयु में उन्होंने फिर से पढ़ना शुरू किया। विकट परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की तथा रोजगार की तलाश में पैतृक गाँव छोड़कर 1951 में दिल्ली चले गये। इसके बाद वे इलाहाबाद गये। उन्होंने मुजफ्फरनगर में रहकर भी आजीविका कमाने का प्रयास किया। दिल्ली आकर कुछ समय रहने के बाद वे मुंबई चले गये फिर पाँच छह वर्षो तक उन्हें कई कठिन अनुभवों से गुजरना पड़ा। मुंबई प्रवास के दौरान उनकी मुलाकात भवानी प्रसाद मिश्र से हुई, उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने अपना पूरा ध्यान कहानी तथा उपन्यास लेखन की ओर लगाया। 1956 में श्रीकृष्ण पुरी हाउस में काम मिला जहाँ वे साढ़े तीन साल तक रहे। वहाँ भी इन्होंने अपना लेखन जारी रखा।

मुंबई से फिर अल्मोड़ा और फिर दिल्ली होते हुए इलाहाबाद आ गये। कई वर्षो तक वहीं रहे। 1992 में छोटे पुत्र की मृत्यु के बाद उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। जीवन के अंतिम वर्षो में वे हल्द्वानी आ गये। विक्षिप्तता की स्थिति में उनकी मृत्यु 24 अप्रैल 2001 को दिल्ली के शाहदरा अस्पताल में हुई। 1950 से उन्होंने कविताएँ व कहानियाँ लिखनी शुरू कर दी थी। आरंभ में वे रमेश मटियानी 'शैलेश' नाम से लिखते थे। उनकी आरंभिक कहानियाँ रंगमहल और अमर कहानी में प्रकाशित हुई। जिनमें 'शक्ति ही जीवन है' (1951) और 'दोराहा' (1951) नामक लघु उपन्यास भी थे।

कहानी संग्रह- 'मेरी तैंतीस कहानियाँ, दो दु:खों का एक सुख,' दूसरों के लिए, सफर पर जाने के पहले, हारा हुआ, अतीत तथा अन्य कहानियाँ, पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां, भेड़ें और गडरिये जैसे अनेकों कहानी संग्रह प्रकाशित हुए।

उपन्यास- शैलेश मटियानी ने विशेष रूप से आंचलिक उपन्यास लिखे। बोरीबली से बोरीबन्दर, कबूतरखाना, हौलदार, चिट्ठी रसैन, मुख सरोवर के हंस, एक मूठ सरसों आदि।

संस्मरण- कागज की नाव (1991) राष्ट्रभाषा का प्रश्न, यदा कदा, लेखक की हैसियत, किसके राम कैसे राम (1999) जनता और साहित्य जैसी रचनाएं विभिन्न विधाओं पर मटियानी जी ने लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

सम्मान- प्रथम उपन्यास बोरीबली से बोरीबंदर तक पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत। महाभोज कहानी पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का प्रेमचन्द पुरुस्कार, फणीश्वरनाथ रेणु पुरस्कार, उत्तर प्रदेश सरकार का संस्थागत सम्मान, कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट् मानद डिग्री तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सम्मानित किए गए।

❖❖❖

आजकल का खानपान

●वंदना अल्मियां
एम.ए. प्रथम सत्रार्ध

खान-पान एक ऐसा विषय है जो मनुष्य की जिंदगी बचा भी सकता है बिगाड़ भी सकता है। लेकिन आजकल की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अपने खानपान पर ध्यान नहीं देते। हमने अपने फास्ट लाइफ स्टाइल के चलते स्वास्थ्य के बारे में सोचना छोड़ दिया है। आज हम सात्विक भोजन को छोड़कर दिन-प्रतिदिन जंक फूड का प्रयोग कर रहे हैं। नाश्ता, लंच या डिनर सब में बंद पैकेट वाले भोजन का सेवन हो रहा है। यहाँ तक कि अब गांवों में भी यह सब फैशन सा बन गया है।

आज अगर एक छोटा बच्चा रोता है तो हम उसे मनाने के लिए चॉकलेट या लॉलीपॉप पकड़ा देते हैं। बिना यह सोचे कि इन सब चीजों में शुगर की मात्रा बहुत अधिक होती है। यहीं से उसके खानपान में हम फास्टफूड को शामिल कर रहे हैं, जिससे वह धीरे धीरे इन चीजों का आदि हो रहा है।

वर्तमान पीढ़ी लगभग भूल ही गई है कि स्वस्थ आहार में घरेलू खाद्य पदार्थ, ताजे फल, सब्जियां, अनाज, दूध-दही, पनीर, पत्तेदार सब्जियां आदि आते हैं। पता है भी तो स्वाद के लालच में हम इसके विपरीत भोजन खा रहे हैं- अधिक तला, नमकीन अधिक चीनी वाला यह खाना हमारी ऊर्जा को लेकर फिर हमें ऊर्जा प्रदान करता है। इसी कारण इस प्रकार के भोजन के बाद हमें बहुत आलस और थकान महसूस होती है। हमारे घरों में कहते हैं- 'जैसा अन्न वैसा मन' अर्थात् अगर हमारा खाना अच्छा होगा, तभी हमारा ध्यान एकाग्र हो पाएगा। अच्छे आहार से ही हमारे जीवन में बदलाव आ सकता है। आज डॉक्टर भी हमें सलाह देते हैं कि अधिक पानी पीना चाहिए, लेकिन हम 2 दिन तक उस नियम को मानते हैं तीसरे दिन से पानी की जगह कोल्डड्रिंक का प्रयोग करने लगते हैं। कोल्ड ड्रिंक हमारे शरीर को पानी के विपरीत शुष्क बना देती है, क्योंकि उसमें कार्बोहाइड्रेट और गैस के अतिरिक्त कुछ और नहीं होता, जबकि पानी न केवल शरीर को हाइड्रेट करता है और शरीर के रोग भी दूर करता है।

सही और संतुलित खानपान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उपवास भी है। पहले से उपवास मन की शांति और ईश्वर की पूजा के लिए रखते थे, लेकिन आज के मॉडर्न समय में अधिकांश लोग इसे अंधविश्वास का नाम दे देते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा भी इस पर रिसर्च की गई है और बताया गया है कि उपवास रखने से अनेकों फायदे होते हैं- जैसे कि पाचन तंत्र को आराम मिलता है, वह अपना काम आराम से कर सकता है। उपवास से हमारे शरीर में उपस्थित विषैले में पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। उपवास के द्वारा मधुमेह को भी नियंत्रित किया जा सकता है। हफ्ते में एक दिन उपवास जरूर करना चाहिए।

पहले के लोग घर का खाना खाते थे, जिससे वह निरोगी रहते थे। घर के अनेकों काम करते थे जिससे उनका शरीर फिट रहता था, लेकिन आजकल हम एक दिन बाहर का खाना नहीं खाते तो हमें खाया जैसा नहीं लगता। हम बाहर के चाऊमीन, मोमो, समोसों आदि की आदत बना चुके हैं, जिससे हमारे शरीर में अनेकों बीमारियां जन्म ले रही हैं। आने वाले समय में हम लोग अपने घर परिवार ऑफिस से ज्यादा हॉस्पिटल में नजर आएंगे और इसमें पूरा कसूर हमारा ही होगा। वह कहते हैं न जब पेड़ लगाए बबूल का तो आम कहां से खाएं?

लेकिन आने वाला फास्ट फूड का दौर चलता रहेगा तो 100 साल बाद लोग आम और बबूल को नहीं जानेंगे क्योंकि व्यक्ति के रोजमर्रा के जीवन में जो चीज प्रयोग होती है वह इस ओर ध्यान देता है। अब हम फास्ट फूड पर ही टिके हैं तो आम और बबूल को क्या ही पहचानेंगे? पहले से लोग हरी सब्जियां, गेहूं-मंडवे की रोटी खाते थे और उसी में संतुष्ट रहते थे। उन्हें कभी बाहर के खाने में स्वाद नहीं आया और आज हमें घर में मटर पनीर भी मिलता है तो हम बाहर के खाने को ही सर्वोत्तम समझते हैं। आज शरीर में सभी

बीमारियां हमारी बाहरी खान-पान से पनप रही हैं। हम दवाइयों में हजारों का खर्च करते हैं लेकिन अपने खाने में कोई कंट्रोल नहीं करते जिससे दवाइयां अपना साइड इफेक्ट दिखाती हैं और आधे से भी कम उम्र में आदमी की मृत्यु की खबर पाते हैं। हमें ध्यान रखना चाहिए, 'जैसा भोग, वैसा रोग' इसे कुमाउंनी में ऐसा भी कह सकते हैं- ''जस्से खाण, वस्से धाण'', इसलिए हमेशा याद रखना चाहिए कि, ''जब खाओगे अच्छा भोग, तभी तो रह पाओगे निरोग''।

❖❖❖

चींटी

●प्रिया खर्कवाल
बी.एस.सी. प्रथम सत्रार्ध

चींटी, वह साधारण सी दिखने वाली जीव है जिसको अंग्रेजी में Ant कहा जाता है तथा जिसका वैज्ञानिक नाम फॉर्मीसिडे है। यह शब्द लैटिन भाषा के फॉर्मिका शब्द से निकला है इसका अर्थ होता है चींटी। चींटी को देखा तो हर मनुष्य ने है, लेकिन शायद कुछ ही प्रतिशत लोग इसके जीवन के बारे में सोचते होंगे। चींटी भले ही लाल रंग की हो या काले रंग की यह हमेशा गतिशील रहती है। हमने उसे कभी भी एक जगह स्थिर या रुके हुए नहीं देखा। ऐसा क्यों है? क्यों चींटियां हमेशा एक के पीछे एक सीधी रेखा में चलती रहती हैं? क्यों वह बार-बार गिरने पर भी कोशिश करना नहीं छोड़ती?

भले ही अभी हमारे आसपास कोई चींटी नहीं दिख रही होगी लेकिन जैसे ही कोई मीठा दाना हम कहीं पर रख देते हैं वैसे ही वह इतनी जल्दी कहां से आ जाती है? कैसे वह अपने से कई गुना अधिक वजन उठा सकती है? इन सब सवालों के पीछे भले ही अनेक वैज्ञानिक तथ्य जुड़े हों, लेकिन हम सब सामान्य जनों को आश्चर्य ही होता है। चींटी चलते समय फेरोमोन नाम का रसायन छोड़ती है जिसकी सहायता से अन्य चींटियां भी उसके पीछे-पीछे चल सकें। चीटियों के एंटीना बहुत सक्रिय होते हैं जिसकी वजह से वह अपने खाने की तलाश कर सकती है। कीटविज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसमें चींटियों का अध्ययन किया जाता है उसे पिपीलिका शास्त्र कहते हैं।

वैज्ञानिक जानकारियों से परे चीटियां मनुष्य को प्रेरणा देने के लिए आदर्श जीव हैं। एक आम इंसान जिसे प्रकृति ने चींटियों से कई अधिक खूबियां दी हैं वह कामयाबी प्राप्त करने के लिए मेहनत करता है, लेकिन यदि तीन चार बार नाकामयाब हो गया तो वह मायूस हो जाता है। लेकिन एक चींटी जो मनुष्य के मुकाबले कई कम खूबियों वाली है, कभी परिश्रम करना नहीं छोड़ती है। यह सीख हमने एक प्रसिद्ध कविता जिसे सोहनलाल द्विवेदी जी द्वारा लिखा गया है-

> लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
> कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

से भी सीखा है। चींटी हमें यह भी सिखाती है कि एकता में सर्वाधिक बल होता है, लेकिन आज के समय में मनुष्य के बीच एकता की भावना घटती जा रही है। दूसरी तरफ चीटियों का समाज इस बात को कभी नहीं भूलता इसलिए वह हमेशा एक साथ रहती हैं और चौकन्ना रहती हैं। हमें हमेशा लोग कहते हैं कि इंसान की शक्ति उसके कद पर निर्भर करती है, लेकिन ऐसा नहीं है इसका सबसे बड़ा उदाहरण चींटियां हैं। इतनी छोटी सी होने पर भी वह अपने से कई गुना अधिक भारी वजन उठाने की हिम्मत व साहस रखती हैं। वह हमेशा कठिन श्रम करती हैं ताकि जरूरत के समय उसके समाज के पास वह सभी चीजें उपस्थित हों जिसकी उन्हें आवश्यकता हो। लेकिन एक मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के बावजूद भी सबसे पहले अपने आज के बारे में सोचता है और सिर्फ अपने ही बारे में सोचता है। हमें चींटी से सीखना चाहिए और हमेशा एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ना चाहिए। साथ ही साथ अपने समाज व देश को भी ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए यह सिखाती है चींटी। ❖❖❖

आखिर कैसी शिक्षा की जरूरत है आज

●बिनोद कुमार आर्या
शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह एक व्यापक प्रक्रिया है, जो व्यक्तित्व विकास, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है। आज की शिक्षा में कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है ताकि यह सशक्त और समर्पित नागरिकों का निर्माण कर सके।

नैतिक और सामाजिक शिक्षा- आज की शिक्षा में नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों पर जोर देना आवश्यक है। छात्रों को सहिष्णुता, सहयोग, और सामाजिक न्याय के बारे में शिक्षित करना चाहिए, ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें। यह उन्हें न केवल अपने अधिकारों का सम्मान करना सिखाएगा, बल्कि दूसरों के अधिकारों की भी रक्षा करने की प्रेरणा देगा।

कौशल आधारित शिक्षा- आज की तेजी से बदलती दुनिया में, केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। छात्रों को तकनीकी और व्यावहारिक कौशल भी सिखाए जाने चाहिए। इससे वे न केवल अपने करियर में सफल हो सकेंगे, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार किया जा सकेगा। उदाहरण के लिए, डिजिटल कौशल, समस्या समाधान, और टीम वर्क जैसे कौशल महत्वपूर्ण हो गए हैं।

समग्र विकास- शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं होना चाहिए, बल्कि शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी होना चाहिए। खेल, कला और अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को शिक्षा में शामिल करना आवश्यक है। इससे छात्रों का व्यक्तित्व विकसित होता है और वे तनाव और दबाव का सामना बेहतर ढंग से कर पाते हैं।

वैश्विक दृष्टिकोण- ग्लोबलाइजेशन के इस युग में, शिक्षा को वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और वैश्विक मुद्दों के प्रति जागरूक होना चाहिए। इससे वे एक संवेदनशील और समर्पित वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित होंगे।

नवीनता और रचनात्मकता- शिक्षा को रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए। छात्रों को विचारों को व्यक्त करने, नए विचार विकसित करने, और समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे स्वतंत्र सोच विकसित कर पाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य- आज की शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना भी आवश्यक है। छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरूक करना और उन्हें समुचित समर्थन प्रदान करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह उन्हें स्वस्थ जीवन जीने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

अतः आज की शिक्षा को एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जो न केवल ज्ञान को महत्व दे, बल्कि कौशल, नैतिकता, सामाजिक जागरुकता, और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्राथमिकता दे। ऐसी शिक्षा समाज को समर्पित, जागरुक और सक्षम नागरिक प्रदान करेगी, जो न केवल अपने लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए सकारात्मक परिवर्तन ला सकेंगे। इसलिए, हमें शिक्षा प्रणाली में इन बदलावों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है, ताकि हम एक बेहतर भविष्य की ओर बढ़ सकें।

❖❖❖

शकुन्तला देवी

●टीना राणा
बी.एस.सी. षष्टम् सत्रार्ध

हम सभी जानते हैं कि शिक्षा का जीवन में अहम योगदान है, और सुखद बात यह है कि आज की पीढ़ी शिक्षा के प्रति जागरूक भी हो रही है। परन्तु अगर वे किसी विषय को करने से घबराते हैं या उन्हें वह प्रिय नहीं है तो वह विषय है- गणित। न जाने क्यों बच्चे इस विषय से डरते या घबराते हैं? लोगों का मानना तो यह भी है कि गणित विषय केवल और केवल पुरुषों हेतु ही बना है, इसे महिलाओं द्वारा कर पाना संभव नहीं है, परंतु ऐसा नहीं है, किसी भी विषय के प्रति हमारी रुचि के पीछे कई कारण होते हैं।

हमारे देश में बहुत बड़े बड़े महान गणितज्ञ हुए हैं, जैसे श्रीनिवास, रामानुजन, आर्यभट्ट, महावीर, भास्कर द्वितीय आदि और भी कई महापुरुष। गणित के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने वाले इन महापुरुषों की पंक्ति में एक ऐसी भारतीय महिला भी हैं जिनका नाम आज इतिहास के पन्नों पर अंकित है। वह भारत की प्रथम भारतीय महिला गणितज्ञ शकुंतला देवी हैं। शकुंतला देवी का जन्म 4 नवंबर,1929 को कर्नाटक राज्य के बैंगलोर में हुआ था। वह ना केवल महान गणितज्ञ है, साथ ही ज्योतिष तथा लेखक भी हैं।

शकुंतला देवी के पिता सर्कस में ट्रैपीज आर्टिस्ट का काम किया करते थे। एक बार जब वह शकुंतला को कार्डस ट्रिक सिखा रहे थे तब उन्हें एहसास हुआ कि बच्ची नम्बर्स काफी तेजी से याद कर लेती है। शकुंतला देवी के माता पिता बैंगलोर में रहते थे, वे कन्नड़ ब्राह्मण समुदाय से थे। तीन साल की छोटी सी आयु में उनके पिताजी श्री सुधार राज राव ने उनकी प्रतिभा को पहचान लिया था। छः साल की उम्र में ही शकुंतला देवी ने मैसूर विश्वविद्यालय में अपने अंकगणित कौशल का प्रदर्शन किया। उसके बाद उनके पिताजी शकुंतला को स्कूलों और कॉलेजों में अनेक गणितीय कौशलों का प्रदर्शन करने के लिए ले गए। उन्होंने कई रोड शो में भी शकुंतला की गणितीय प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनकी यह सफलता बिना किसी औपचारिक शिक्षा के उन्होंने प्राप्त की थी। जटिल गणितीय संख्याओं की गणना करने में उनकी प्रतिभा अविश्वसनीय थी। पूरे विश्व भर में उन्होंने अपने कौशल से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

उनकी इस प्रतिभा से लोग अचंभित रह जाते, वह बड़ी सी बड़ी संख्या को पल भर में हल कर देती थी। उनके इसी कौशल, जिसमें वह बिना किसी त्रुटि के गणनाएं कर लेती थी, ने उन्हें जगत में नई उपाधि दिलाई। शीघ्र ही उन्हें मानव कंप्यूटर के नाम से जाना जाने लगा। संख्याओं की गणना के साथ वह एक लेखिका भी थीं तथा उन्होंने ज्योतिष, पहेली और गणित पुस्तकों के माध्यम से अपनी बुद्धि का प्रदर्शन किया।

18 जून 1980 को इंपीरियल कॉलेज लंदन में उन्होंने दो जटिल 13 अंक की संख्याओं का गुणन प्रदर्शित किया। वे संख्याएं यादृच्छिक रूप से दी गई थी और शकुंतला देवी ने केवल 28 सेकंड में इसका उत्तर दे दिया, जिससे उन्हें दुनिया भर में प्रसिद्धि मिली। उन्होंने संख्याओं की गणना करने के लिए कभी भी कागज या कलम का इस्तेमाल नहीं किया। यह उनकी मानसिक क्षमता थी कि वह अपने दिमाग की गणना में ही सही उत्तर प्राप्त कर लेती थीं। शकुंतला देवी को संख्याओं से बहुत लगाव था और इसी वजह से उनकी ज्योतिष में रुचि बढ़ी। संख्याओं की उनकी ताकत ने उन्हें ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कराया। शकुंतला ने किताबों के माध्यम से लेखन के प्रति अपने जुनून को भी व्यक्त किया,

जिसने उन्हें विभिन्न विधाओं की लेखिका बना दिया। उन्होंने अपनी बौद्धिक गणितीय प्रतिभा के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में स्थान प्राप्त कर हमारे देश को पूरे विश्व में गौरवान्वित किया। एक प्रेरक वक्ता जिन्होंने गणित के प्रति कई व्यक्तियों के रुझान को बढ़ाया।

शकुंतला देवी ने विश्व की कई बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी जीत हासिल की। इसी क्रम में 1977 में अमेरिका में एक प्रतियोगिता में कंप्यूटर को पराजित किया, जिससे उनको मानव कंप्यूटर की उपाधि मिली लेकिन यह उपाधि उन्हें पसंद नहीं आई। उन्होंने कहा कि मानव मस्तिष्क की क्षमता कंप्यूटर से कहीं ज्यादा है और दोनों की तुलना कभी नहीं की जा सकती। उनके जीवन पर आधारित एक फिल्म 2020 में रिलीज हुई जिसका नाम है- शकुंतला देवी।

शकुंतला देवी को कई पुरस्कार मिले जिनमें 1969 में मिला 'वूमेन ऑफ द ईयर' का सम्मान भी था। उन्हें रामानुजन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उनके लेखन में कई किताबें शामिल हैं, जैसे- गणना-संख्याओं का आनंद. 2- संख्याओं के आश्चर्य लोक में, 3- संख्याओं की पुस्तक पर 4-पहेलियां जो आपको उलझन में डाल देगी 5- अपने बच्चों में प्रतिभा जागृत करें 6- सुपर मेमोरी यह आपकी भी हो सकती है 7- परफेक्ट मर्डर 8- ज्योतिष आपके लिए 9- शिक्षा प्रणाली 10- ग्रामीण रन और कृषि विकास 11- महिलाओं की स्थिति और सामाजिक परिवर्तन 12- भारत में जाति व्यवस्था।

एक सफल जीवन जीने के पश्चात 21 अप्रैल 2013 को वह हमसे विदा हो गई। यह भारत में गणित के क्षेत्र के लिए एक बहुत बड़ी क्षति थी किंतु अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से वह आज भी लड़कियों को गणित के लिए प्रेरित करती हैं तथा इस मान्यता को असत्य सिद्ध करती हैं कि गणित केवल पुरुषों का विषय है।

❖❖❖

समय है असोज का

● नेहा भारती
बी.कॉम. तृतीय सत्रार्ध

समय है असोज का
बदलाव है मौसम का
दिन छोटे और रात बड़ी होने का
समय है असोज का
फल मिलता किसान के परिश्रम का।
धान कटने का और घास काटने का

कुछ ऐसा समय यह असोज का।
प्रकृति से कुछ पाने का,
साथ मिलकर संघर्ष करने का
धान के साथ में गाज्यो-पराव सारने का
ज्वार काटने के संग-संग भट्ट चूटने का

कुछ ऐसा समय है असोज का।
बड़ा व्यस्त सा रहता है यह समय
कुछ ऐसा है यह मौसम असोज का
धूप सर तपा दे, मेहनत तन भिगा दे लेकिन
इस हालत में भी बड़ी खुशी मिलती है
प्रकृति के पास जाने की लगन होती है
कुछ ऐसा समय यह असोज दिखाती है
फल देती किसान की मेहनत का
आगाज करती है ऋतु शरद का
समय होता यह धान कटने का,
प्रकृति से बहुत कुछ पाने का
एकता बढ़ जाने का,
अपने कार्य में खो जाने का
ना वक्त खाने का होता ना वक्त होता बैठने का

कुछ ऐसा समय है असोज का,
आसमान में तारे देखने का,
नए त्योहार मनाने का
इंतजार नवरात्रि आने का
समय है असोज का

❖❖❖

कार्यालय
स्वागतम्
राष्ट्रीय सेवा योजना

स्वागतम्
राष्ट्रीय सेवा योजना

कार्यालय
स्वागतम्

राष्ट्रीय सेवा योजना
आपका स्वागत एवं हार्दिक
अभिनन्दन करता है।

महाविद्यालय युवा संसद

महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

महाविद्यालय छात्र संघ 2022–23

राजेन्द्र सिंह कैड़ा–अध्यक्ष

विमल सिंह–उपाध्यक्ष

तनुजा पांडे– छात्रा उपाध्यक्ष

विपेंद्र कुमार– सचिव

कविता पाटनी– संयुक्त सचिव

नीरज सिंह राणा–कोषाध्यक्ष

पूजा गोस्वामी–वि0वि0 प्रतिनिधि

महाविद्यालय छात्र संघ 2023–24

चंदन सिंह मेहरा–अध्यक्ष

सुमित पांडे– उपाध्यक्ष

सुमन आर्या– छात्रा उपाध्यक्ष

पूजा आगरी– सचिव

धीरज कोरंगा– कोषाध्यक्ष

धीरज जोशी–वि0वि0 प्रतिनिधि

खो-खो स्पर्धा में विजेता बागेश्वर परिसर की टीम • जागरण

बागेश्वर परिसर की टीम ने जीता खो-खो स्पर्धा का फाइनल

संस, सोमेश्वर : हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में महिला वर्ग की अंतर महाविद्यालय खो- खो प्रतियोगिता हुई। स्पर्धा का फाइनल बागेश्वर परिसर की टीम ने जीता। इस प्रतियोगिता में आठ टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवनींद्र कुमार जोशी व विधायक प्रतिनिधि भुवन चंद्र जोशी ने किया। फाइनल मुकाबला राजकीय महाविद्यालय कपकोट तथा बागेश्वर के बीच खेला गया। फाइनल मुकाबले में बागेश्वर परिसर की टीम विजयी रही।

केंद्रीय टीम ने डिग्री कॉलेज की व्यवस्थाओं को परखा

सोमेश्वर, संवाददाता। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद की टीम ने हुकुम सिंह बोरा डिग्री कॉलेज का दो दिवसीय दौरा किया। इस दौरान टीम ने कॉलेज में पेयजल संसाधान, वेस्ट मैनेजमेंट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग आदि का निरीक्षण किया गया। पुस्तकालय, साइंस लैब, कॉमर्स विभाग, खेल मैदान, इनडोर स्टेडियम, कैरियर काउंसलिंग, एनएसएस कार्यक्रमों की समीक्षा की। प्राचार्य ने प्रभारी डॉ. राकेश पांडे, प्राचार्य प्रो. अवनींद्र कुमार जोशी, सदस्य डॉ. विवेक कुमार आर्या, डॉ आँचल सती, ...न्द्र, नीरज सिंह पांगती ने ...भार जताया टीम में प्रो. ...न उप कुलपति, डॉ.

हुकुम सिंह कॉलेज को बी प्लस ग्रेड

सोमेश्वर। राष्ट्रीय मूल्यांकन परिषद नेक ने हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय का दो दिवसीय निरीक्षण किया था, जिसमें महाविद्यालय को बी प्लस ग्रेड प्राप्त हुआ है। प्राचार्य प्रोफेसर

सोमेश्वर महाविद्यालय में गढ़ भोज दिवस

सोमेश्वर(अल्मोड़ा)। सोमेश्वर महाविद्यालय में मंगलवार को गढ़ भोज दिवस का आयोजन किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. जगदीश प्रसाद ने कहा कि राज्य के परंपरागत व्यंजनों को बढ़ावा देने के लिए हर स्तर पर प्रयास करने चाहिए। उन्होंने मडुवे, गडेरी, मूली आदि मोटे अनाजों की जानकारी दी। वहां ... धौलाखंडी, छात्र संघ

शंकर और उर्मिला रहे अव्वल

सोमेश्वर (अल्मोड़ा)। सोमेश्वर महाविद्यालय में मंगलवार को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के बीच हुई प्रतियोगिता में शंकर जलाल और उर्मिला ने पहला स्थान पाया। रूपाली रावत और गीता बिष्ट को दूसरा स्थान मिला। प्राचार्य प्रोफेसर अवनींद्र कुमार जोशी ने विजेताओं को

विजय ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में मारी बाजी

सोमेश्वर में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेता और प्राध्यापक। संवाद

...ममता आर्या को तीसरा स्थान मिला। प्राचार्य डॉ. हेमा प्रसाद ने विजेताओं को पुरस्कार बांटे। ... डॉ. नीता टम्टा, डॉ. सुनीता

कुलपति प्रो. बिष्ट ने सोमेश्वर महाविद्यालय का किया निरीक्षण

संस, जागरण • अल्मोड़ा : सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट ने हुकुम सिंह बोरा स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर का निरीक्षण किया और महाविद्यालय की व्यवस्थाओं को परखा। ... कार्यों का जायजा लेते हुए कालेज प्रशासन को जरूरी दिशा निर्देश दिए। कुलपति ने लाइब्रेरी, कंप्यूटर लैब, कार्यालय, परीक्षा कक्ष, डिजिटल

जल्द स्थापित होगा देवभूमि उद्यमिता केंद्र

संस, सोमेश्वर : हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर में जल्द ही देवभूमि उद्यमिता केंद्र स्थापित होगा। यह जानकारी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एके जोशी ने दी। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार की ओर से उच्च शिक्षण संस्थानों में स्टार्टअप, स्वरोजगार एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए भारतीय उद्यमिता संस्थान, अहमदाबाद सहायतित देवभूमि उद्यमिता योजना लागू की है। बताया कि

गांधी का साहित्य एवं साहित्य में गांधी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में आठिया ने प्रस्तुत किया शोधपत्र

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में सुष्मिता अव्वल

सोमेश्वर (अल्मोड़ा)। सोमेश्वर महाविद्यालय में विद्यार्थियों की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। सुष्मिता ने अपनी प्रतिभा दिखाते हुए पहला स्थान पाया। रेखा द्वितीय और शंकर जलाल तृतीय स्थान पर रहे। विजेताओं को सम्मानित किया गया। प्रभारी प्राचार्य प्रो. कमला धौलाखंडी ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता से विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर बढ़ता है जो उनके बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है। वहां डॉ. सुनीता जोशी, डॉ. नीता टम्टा, डॉ. पुष्पा भट्ट सहित कई प्राध्यापक और विद्यार्थी मौजूद रहे। संवाद

रूपाली का सामान्य ज्ञान सबसे अच्छा

सोमेश्वर महाविद्यालय में मासिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेता को सम्मानित करते प्राध्यापक। संवाद

पूजा बिष्ट दूसरे और उमा बैड़ा रहीं तृतीय

कौशल क्षमता, ज्ञान बढ़ाती हैं प्रतियोगिताएं : जोशी

मुंशी प्रेमचंद के विचार आज भी प्र...

www.jagranpost.com

सोमेश्वर महाविद्यालय में क्विज के विजेताओं को बांटे पुरस्कार

सोमेश्वर (अल्मोड़ा)। जी-20 सम्मेलन में देश की सफल अध्यक्षता के लिए डॉ. विवेक कुमार आर्या के संयोजन में हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय में क्विज प्रतियोगिता हुई। इसमें विजय कुमार, विजय कुमार, रश्मि गोस्वामी, स्नेहा जोशी प्रथम, इंदिरा उपाध्याय, मोहित सिंह बिष्ट, योगेश नयाल द्वितीय, अंजलि रतूड़ी तृतीय रहीं। प्राचार्य प्रो. अवनींद्र कुमार जोशी ने इन विजेताओं को पदक और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। संवाद

जयंती पर मंगलेश डबराल को याद किया

सोमेश्वर। हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से मेरा उत्तराखंड मेरे साहित्यकार कार्यक्रम के तहत कवि मंगलेश डबराल की जन्मतिथि धूमधाम से मनाई।

प्राचार्य डॉ. हेमा प्रसाद ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि 16 मई 1948 को काफलपानी टिहरी गढ़वाल में जन्मे पहाड़ पर लालटेन रचना के रचनाकार मंगलेश डबराल का साहित्य में सराहनीय योगदान रहा। छात्रों ने मंगलेश

अल्मोड़ा के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर में प्रतियोगिता के विजेता • जागरण

शंकर व उर्मिला ने मारी बाजी

संवाद सहयोगी, सोमेश्वर : हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता हुई। इसमें शंकर जलाल व उर्मिला प्रथम, रूपाली रावत व गीता बिष्ट ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विजेता छात्र-छात्राओं को प्राचार्य प्रो. अवनींद्र कुमार जोशी ने पुरस्कृत किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों के व्यक्तित्व विकास में मदद मिलती है। इस अवसर पर डा. पुष्पा भट्ट, डा. सुनीता जोशी, डा. नीता सहित कालेज के सभी प्राध्यापक व छात्राएं मौजूद थे।

मीडिया की नजर से महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रम

स्वतंत्रता आंदोलन में बौरारो घाटी का योगदान

●खुशी भाकुनी
बी.ए. तृतीय सत्रार्ध

स्वतंत्रता आंदोलन में देश के अन्य क्षेत्रों की तरह कुमाऊं का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। अन्य क्षेत्रों की भांति आंदोलन में भी इस संदर्भ में अपवाद नहीं रहा। 1857 में स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के बाद औपनिवेशिक शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध व्यापक नहीं रहा था। 1916 में कुमाऊं परिषद की स्थापना पर ही कुमाऊं में विरोध का स्वर मुखर हुआ। इसी क्रम में 1920 व 1921 में मकर संक्रांति के दिन बागेश्वर में कुली बेगार न देने के संबंध में ऐतिहासिक निर्णय हुआ जिसे इतिहास में कुली बेगार आंदोलन के नाम से जाना जाता है।

इस आंदोलन में मोहन सिंह मेहता की भूमिका अग्रणी रही। 1921 के बाद ही सारे कुमाऊं में विद्रोह के स्वर गूंज उठे थे। बौरारो घाटी भी इससे अछूती नहीं रही। 1929 में गांधीजी के कौसानी आगमन पर इस क्षेत्र में असहयोग आंदोलन का व्यापक असर हुआ। 1924 के बाद बौरारो घाटी में विद्रोह के स्वर अधिक तीव्रतर होते चले गए। बौरारो घाटी को भी अंग्रेजी हुकूमत ने बागी करार कर दिया। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के समानांतर यहां जंगलात सत्याग्रह चला। इसी संबंध में मोतीराम भट्ट, अंबा दत्त खोलिया, दीवान सिंह, पदम दत्त आदि ने टोटासीलिंग में लीसा डिपो जला दिया। इन्हीं लोगों ने मेहरपाली और कोट जंगलात का डाक बंगला भी जला डाला। 1930 के बाद स्वतंत्रता आंदोलन में बौरारो के वीर सपूतों का योगदान अग्रणी रहा। लीसा कांड के बाद कत्यूर घाटी के चंद्र दत्त ममगई को 15 अगस्त 1942 को उनके 11 साथियों सहित गिरफ्तार कर पटवारी-कमस्यारी बंदी बनाकर अल्मोड़ा ले जा रहा था। सोमेश्वर में कुशाल सिंह खर्कवाल के नेतृत्व में ही ममगई को छुड़ाने के बाद चनौदा के पास सड़क की पुलिया को तोड़कर कलेक्टर मेहरबान सिंह को मारने तक की योजना बना डाली।

बौरारो के स्वतंत्रता आंदोलन में एक बात गौर करने लायक यह है कि चाहे यहां पर जो भी आंदोलन हुए उनकी प्रेरणा चाहे गांधीजी की सत्याग्रह से मिली या विनोबा के सविनय अवज्ञा से, यहां के लोगों ने आंदोलन अपने तरीके से चलाया। जिसका सीधा उदाहरण सत्याग्रह के दौरान लीसा अग्निकांड या पटवारी से जबरन साथियों को छुड़ाना था। यह इस बात को सिद्ध करती है कि उस समय यहां के स्वतंत्रता सेनानियों के दिलोदिमाग में एक ही बात थी, 'अंग्रेजों को भगाओ' चाहे कुछ भी करना पड़े। उसके बाद बौरारो में जो सबसे महत्वपूर्ण घटना घटी वह है 2 सितंबर 1942 की घटना। टोटासीलिंग लीसा डिपो अग्निकांड की जानकारी के सिलसिले में ही जन्माष्टमी 2 सितंबर 1942 को इलाका हकीम मेहरबान सिंह पुलिस पार्टी के साथ-साथ चनौदा गांधी आश्रम पहुंचा। कुछ पता नहीं चलने पर मेहरबान सिंह ने कहा कि आग आश्रम के कार्यकर्ताओं ने लगाई है। उस समय गांधी आश्रम में सभा चल रही थी। क्षेत्र के बहुत सारे ग्रामीण इकट्ठा हुए थे, उनके द्वारा गांधी आश्रम के कमरों को सील कर दिया गया। यही नहीं तिरंगा झंडा काट गिराया गया। इसके विरोध में श्री प्रयाग दत्त जोशी ने अपनी छाती तानकर कहा, "हिम्मत है तो मारो गोली।" यह सुनते ही गोरी फौज की बंदूक तन गई।

उसी समय गांधी आश्रम के ऊपर पहाड़ी पर बैठे क्षेत्र के ग्रामीणों ने पत्थर मारने की तैयारी कर ली लेकिन कुशाल सिंह खर्कवाल तथा शांतिलाल द्विवेदी ने पत्थर मारने से मना कर दिया। यदि ग्रामीण पत्थर मारते और अंग्रेजी फौज वाले गोलियां चलाते तो शायद जलियांवाला बाग के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा हत्याकांड चनौदा में होता। लेकिन क्षेत्रीय ग्रामीणों को नुकसान न हो इसी को ध्यान में रखकर बहुत सारे लोगों ने अपने को गिरफ्तार करवा लिया। गोलीकांड टल जाने के बाद गोरी फौज ने लाठियों से पिटाई कर स्वर्गीय श्रीकृष्ण सिंह बोरा, त्रिलोक सिंह पांगती, रतन सिंह कबडोला, माधो सिंह, बिशन सिंह और विद्या दत्त आदि लोगों की पिटाई की तथा उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इसके अतिरिक्त बहादुर सिंह, देव सिंह, पान सिंह,

विद्या दत्त, राम सिंह तथा नैन सिंह आदि लोगों को गिरफ्तार किया गया। चनौदा के देहाती बाजार में लाठी चार्ज किया गया, जिससे लोग दुकान छोड़कर भाग गए। फलत: वल्ला बोरारो के उन गांवों पर 2264 रुपए तथा पल्ला बौरारो के 27 गांव पर 6433 रुपए 2 आना 8 पाई का जुर्माना सुनाया गया।

ग्राम शैल पर विशेष प्रतिबंध लगाया गया। वहां के ग्राम प्रधान को दो-दो आदमी लीसा डिपो, गांधी आश्रम व कोसी पुल पर चौकीदारी के लिए बिना मजदूरी के लगाने होते थे। 2 सितबर 1942 को जिन 42 आदमियों को गिरफ्तार किया गया, उनमें से सात लोग अंग्रेजी फौज के दमन को सह ना सके और शहीद हो गए। उनके नाम हैं- किशन सिंह बोरा, उदय सिंह प्रधान, विशन सिंह, वाक सिंह दोसाद, रतन सिंह कबडोला, त्रिलोक सिंह पांगती एवं दीवान सिंह भाकुनी। इसी दौरान हयात सिंह भाकुनी के नेतृत्व में लमगड़ा के जगल का कांटदार तारों का बाढ़ काट दी गई, इस कारण उसी समय उनके नाम वारंट निकल गया कि 'मरा या जिंदा पकड़ कर लाया जाए' और उन पर रु0 500 जुर्माना भी घोषित किया गया। दूसरी ओर हरिकृष्ण पांडे, मोहन सिंह भाकुनी, दीवान सिंह, वाक सिंह आदि लोगों ने गणनाथ के जंगलात के तार काट दिए। श्री मोहन सिंह ने शैल देवी मंदिर में तथा बाक सिंह ने छानी ग्राम मंदिर में सभाएं कीं। उसके बाद जब सारे आंदोलनकारी गिरफ्तार हो गए तो पुलिस द्वारा उनके घरों में दमनचक्र चलाया गया। मां बहनों के जेवर नीलाम कर दिए गए और पुरुषों को फांसी की सजा देने की धमकी दी गई थी। इस दौरान यहां की महिलाओं ने जिस बहादुर और साहस से अपने घरों को चलाया उसका वर्णन कर पाना संभव नहीं है। एक ओर घर के पुरुष जेलों में बंद थे जिन्हें फांसी देने की धमकी दी जाती थी तो दूसरी ओर उनकी जमीन जेवरात नीलाम हो रहे थे। ऐसे समय में यहां की औरतों ने हाड़तोड़ मेहनत के बाद किस प्रकार से अपने घरों को बिखरने से रोका होगा इसकी कल्पना करना ही मुश्किल है। इतना कुछ होने के बाद भी यहां महिलाओं ने शराब बंदी का आंदोलन चलाया।

2 सितंबर,1942 का दिन बौरारो घाटी का स्वर्णिम दिन था। उसी दिन के बाद यहां की जनता ने हर आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया। शैल गांव में सात स्वतंत्रता सेनानी हुए। आजादी के आंदोलन में सब कुछ न्योछावर करने, अपने प्राणों की आहुति देने तथा जेल में अंग्रेजी हुकूमत का दमन सहन करने के बाद भी यह क्षेत्र शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए आज भी संघर्ष कर रहा है। रोजगार के अभाव में यहां का युवा अपनी कुंठाओं में डूबा नशे की ओर बढ़ रहा है।

❖❖❖

बौरारो घाटी

●सपना आर्या
एम.ए. प्रथम सत्रार्ध (इतिहास)

म्यार पहाड़ा हरिया डाना, के भली याकि माँटी।
कोसी साई बगने रूनी, म्यार बौरारो घाटी।
पीनाथ, भतनेश्वर, ऐड़ाद्यो गणनाथा।
हरी भरी स्यारों बीच देवा सोमनाथा।।
छत छिन, लोद छिन, रेहड़ छिन भारी।
मली कौसानी डाना तलि मनाड़े स्यारी।।
ट्याड म्याड बरापन हिटनी घस्यारी।
कोसी साई बगने रुनी म्यार बौरारो घाटी।।
शहीदों जनमभूमि रौल बूंग खिरकोटा।
कौसानी हरसिना डाना पंतज्यू को भैंटा।।
शेखर जोशी छना सूपकोट को पारा।
मालौज गोविंद बल्लभ पंत ज्यू को द्वारा।।
कतुक भली छौ यो हमरी निसानी।
कोसी साँई बगने रुनी म्यरा बौरारो घाटी।।
सौकारा गोपीदाशा मालूशाही सुडौछी।
झवाड़, चाँचरी, भगनौला म्यार मुलुक कौंछी।।
सिरखेत, नाखेत, मेहलखेत, स्यारा।
हल्दु स्यारा भरी रुंनी रोप्यारा तोप्यारा।।
अर्जुनराठ , भानाराठ , रतुराठ, नापाराठी।
कोसी साई बगने रुनी म्यार बौरारो घाटी।।

❖❖❖

वनाग्नि

●महिमा बिष्ट
बी.ए. द्वितीय सत्राध

जंगल में धधकती आग आज पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। जंगलों में अनियंत्रित रूप से फैलने वाली आग को वनाग्नि या जंगल की आग कहा जाता है। इसमें पेड़-पौधे, जानवर, घास के मैदान, जो भी उसके रास्ते में आता है सब जलकर राख हो जाता है। जंगलों में तेज हवा के कारण यह आज अनियंत्रित होकर बड़े भू-भाग में फैल जाती है जिससे वायु प्रदूषण का खतरा भी बढ़ जाता है। वनाग्नि आज एक वैश्विक चिंता बन गई है। विगत कई वर्षों में हमने समाचार पत्रों, टेलीविजन या सोशियल मीडिया के माध्यम से देखा है कि कई देशों को हमारी तरह वनाग्नि से बहुत नुकसान हुआ है। वनाग्नि से जंगलों में रहने वाले जीवों के साथ-साथ मनुष्यों को संपत्ति का भी नुकसान उठाना पड़ता है, इसके अलावा जंगल की आग के कारण हवा में मिलने वाली जहरीली कार्बन डाइऑक्साइड से न केवल वायुमंडल प्रभावित होता है बल्कि मनुष्यों में फेफड़े और त्वचा के संक्रमण संबंधी विभिन्न रोग भी होते हैं।

जंगल में लगने वाली आग लंबे समय तक जलती रहती है, इसके कारण मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन होता है। यह आग जंगल में स्थित सूखी लकड़ियों या अन्य ज्वलनशील पदार्थों जैसे लीसा रेसिन आदि के कारण फैलती है। कई बार जंगलों में लगने वाली आग का कारण बिजली गिरना या अधिक सूखी लकड़ियों या पेड़ पौधे के सूखे पत्तों का आपस में टकराना भी होता है किंतु अधिकांश आग मानव द्वारा ही लगाई जाती है।

अप्रैल के पहले हफ्ते से उत्तराखंड में आग लगना शुरू हो जाता है विगत वर्ष उत्तराखंड के लगभग सभी जिलों में वनाग्नि देखने को मिली जिसमें से 11 जिले गढ़वाल मंडल रुद्रप्रयाग चमोली उत्तरकाशी टिहरी बहुत ज्यादा प्रभावित रहे कुमाऊं मंडल के नैनीताल चंपावत अल्मोड़ा बागेश्वर पिथौरागढ़ आदि में आज ने बहुत अधिक नुकसान पहुंचा। जंगलात तथा विभिन्न सरकारी प्रयासों के बावजूद वन आदमी हर साल विकेट से विकट रूप धारण करती जा रही है इसके पीछे कई कारण है लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि अपने छोटे या क्षुद्र स्वार्थ की वजह से हम न केवल पर्यावरण का अपितु जंगल में रहने वाले हजारों जीव जंतुओं का पेड़-पौधों का कितना नुकसान कर रहे हैं मनुष्य को एक पल सोच कर देखना चाहिए कि यदि जंगल नहीं होंगे तो क्या पृथ्वी पर उनका जीवन संभव हो पाएगा?

❖❖❖

कुछ विचार

●प्रिया वर्मा
बी.ए.तृतीय सत्राध

1- देर लगेगी मगर सही होगा
हमें जो चाहिए वही होगा,
दिन बुरे हैं जिंदगी नहीं
अंधेरे के बाद उजाला होगा।

2- कभी हार मत मानो
क्या पता कामयाबी
आपकी एक और कोशिश
का इंतजार कर रही हो

3- पतझड़ हुए बिना,पेड़ों
पर नए पत्ते नहीं आते
कठिनाई और संघर्ष सहे
बिना अच्छे दिन नहीं आते

4- दौर कागजी था पर
देर तक खतों में
जज्बात महफूज रहते थे
आज तो उम्र भर की यादें
एक टच से डिलीट हो जाती है

5- कोहरा सिखाता है एक अच्छी बात
जब धुंध हो न दिख रहा हो कुछ
दूर तक, चलो कदम दर कदम
मंजिल खुद ब खुद नजर आएगी

❖❖❖

रुपए का इतिहास

●तनुजा आर्या
बी.ए. प्रथम सत्राध

रुपया शब्द संस्कृत के रुप्पयकं शब्द से बना है। संस्कृत में चांदी के सिक्के के लिए रुप्पयकं शब्द का प्रयोग होता था। रुपया शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम शेरशाह सूरी द्वारा जारी किए गए चांदी के सिक्के, जिसका वजन 11.34 ग्राम था, के लिए किया गया। प्राचीन भारतीय में मुद्रा का विकास क्रम कुछ इस प्रकार से रहा- फूटी कौड़ी से कौड़ी, कौड़ी से दमड़ी, दमड़ी से धेला, धेले से पाई, पाई से पैसा, पैसे से आना तथा आना से रुपया।

256 दमड़ी = 192 पाई
128 धेला = 64 पैसा पुराना
16 आना = 1 रुपया
वहीं दूसरी ओर
3 फूटी कौड़ी = 1 कौड़ी
10 कौड़ी = 1 दमड़ी
2 दमड़ी= 1 धेला
1धेला व 1ऋ पाई =1 धेला
3 पाई = 1 पैसा पुराना
4 पैसा = 1 आना
16 आना= 1 रुपया

प्राचीन भारतीय मुद्रा की इन्हीं इकाईयों ने हमारी बोलचाल की भाषा को कई कहावतें दी हैं जो आज भी प्रचलित हैं जैसे- एक फूटी कौड़ी नहीं दूंगा, सोलह आने सच, पाई-पाई का हिसाब रखना, धेले भर का काम ना करना इत्यादि।

❖❖❖

मैं भी पढ़ने जाऊंगी

■ अंजलि रतूड़ी
बीएससी द्वितीय सत्राध

मम्मी! भैया के संग, मैं भी पढ़ने जाऊंगी
पढ़ लिखकर मम्मी मैं कुछ बन दिखलाऊंगी।

मम्मी मुझको पढ़ने से बोलो क्यों रोका जाता है?
मुझ पर ही घर के सारे कामों को थोपा जाता है।

जाने से पहले घर के सभी काम निपटाऊंगी
मम्मी सुनो मैं भी भैया के संग ही पढ़ने जाऊंगी।

कसूर मेरा क्या है जो मैं जन्मी एक लड़की हूं
समाज के बंधनों में, मैं ही क्यों अब तक जकड़ी हूं।

औरों को खुली छूट है मुझ पर सारे बंधन क्यों,
मम्मी मैं भैया की किताब से ही काम चलाऊंगी।

फिक्र करो ना मेरी, मैं सीधा ही घर को आऊंगी
मम्मी मैं भी भैया के संग ही पढ़ने जाऊंगी।

कैसे होगा बोलो मम्मी विकास देश-समाज का,
घर पर बोझ बनेगी बेटी, रोग बनेगी माँ- बाप का।

यूं ही रहेगी रोती किस्मत को हर-पल हर दिन,
दोगी नहीं जवाब यदि आज मेरी इस आवाज का।

❖❖❖

"परिवर्तन कभी आसान नहीं होता, लेकिन हमेशा संभव होता है।"

-बराक ओबामा

सबको आगे आना होगा

●लक्षिता लोहनी
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्ध

सबको आगे आना होगा
पर्यावरण बचाना होगा।
कोसी नदी हमारी है ये
इसको हमें बचाना होगा।

जीवन रस बरसाने वाली
जीवन सबका निर्भर इस पर
खेत खलिहानों को दे पानी
फिर क्यों दे हम इसको हानि
जीवन को देने वाली है ये
इसको हमें बचाना होगा।

जहाँ-जहाँ से गुजरे कोसी
वहाँ-वहाँ उस गाँव-गाँव में
अलख जगाने जाना होगा
लोगों को समझाना होगा
इसको हमें बचाना होगा।

जगह-जगह उन रास्तों में
चौक डैम बनवाना होगा।
केवल यहीं ना रोकें खुद को
चौड़े पत्ते वाले पेड़ों को भी
हमें मिलकर लगाना होगा
इसको हमें ही बचाना होगा।

आज 'कोसी' कर रही पुकार
करते हो क्या मुझसे प्यार?
आओ, मुझे बचाने आओ
जल संचय के यत्न कराओ
विधि वैज्ञानिक भी अपनाओ
पहले जैसा जल तुम पाओ
भरा भरा मेरा अंत:स्थल
इसका जल तुम खूब बढ़ाओ।

माँ जैसा तुम मुझको पाओ
लेकिन पालन करना होगा
सबको ही आगे आना होगा
इसको हमें बचाना होगा।

(कोसी बचाओ अभियान के तहत जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत)

ऐसी दुनिया में

●दीपा जोशी
बी.एस.सी. प्रथम सत्रार्ध

उजाला छाया था, फिर भी अंधेरा घना था
आए थे ऐसी दुनिया में जहां हंसना मना था।
गा सब रहे थे पर सुर ताल नहीं सजा था
लिख सब रहे थे पर अक्षर नहीं सधा था।
कहना सब चाहते थे पर मन नहीं रजा था
आए थे ऐसी दुनिया में जहां हंसना मना था।
कदम कदम पर विरोध का जहान खड़ा था
जब दिलो-जान जहान ए हुस्न पर फिदा था।
लोग थे बहुत वहां जहाँ जंगल घना था
शिकारी को भी, शिकार होना पड़ा था
जाने को वहां मेरे ईमान ने मना किया
कदम बढ़ाने से पहले दिल यह डरा था
दिल का वह आलम किसी को न पता था
आए थे इस दुनिया में जहां हंसना मना था
हर पल जीवन में घुटन आक्रोश भरा था
इंसान इंसान के पीछे हाथ धोकर पड़ा था
उस दुनिया के जैसा कोई रंग नहीं बना था
आए थे ऐसी दुनिया में जहा हसना मना था

❖❖❖

हिन्दी है जन - जन की भाषा

●महेश चन्द्र
सहा. प्राध्यापक. संस्कृत

हिन्दी है जन - जन की भाषा
हिन्दी का गुणगान करो।
गुड मॉर्निंग क्या होता है
प्रणाम-प्रणाम किया करो।।

हिन्दी है जन-जन की भाषा।
हिन्दी का गुणगान करो।।1।।

पहला शब्द हिन्दी का सीखा
हिन्दी ने बढ़ना सीखाया।
सब कुछ पाकर आज तुमने
हिन्दी को क्यों नीचा दिखाया।।

हिन्दी है जन-जन की भाषा।
हिन्दी का गुणगान करो।।2।।

हिन्दी की जननी है संस्कृत
जिसको पहले भूले तुम।
इंग्लश-इंग्लश करके-करके
खुद को भुल चुके हो तुम।।

हिन्दी है जन-जन की भाषा।
हिन्दी का गुणगान करो।।3।।

अपना स्व परिवार का और
भारत माता का मान रखो।
संस्कृत का कुछ करना सके तो
हिन्दी का उद्धार करो।।

हिन्दी है जन-जन की भाषा।
हिन्दी का गुणगान करो।।4।।

आओ मिलकर एक साथ सब
हिन्दी का सम्मान करें।
हर भाषा का अध्ययन करके
हिन्दी का उत्थान करें।।

हिन्दी है जन-जन की भाषा।
हिन्दी का गुणगान करो।।5।।

घर हो या कार्यक्षेत्र हो
हिन्दी- हिन्दी में बात करें।
जिस भाषा से आज बने हो
उस भाषा का गुणगान करें।।

हिन्दी है जन- जन की भाषा
हिन्दी का गुणगान करो।
गुड मॉर्निंग क्या होता है
प्रणाम- प्रणाम किया करो।।6।।

❖❖❖

हमारा अस्तित्व क्या?

●उपेन्द्र कुमार
कनिष्ठ सहायक

आज हम लोग 21वीं सदी में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, लेकिन हम लोग आज ब्रह्मांड में एकमात्र ज्ञात ऐसी प्रजाति हैं जिनमें सोचने एवं समझने की क्षमता है जो अन्य सभी से पृथक है, तो क्या आप लोगों ने यह कभी सोचा कि हम यहां क्यों हैं? क्या है हमारा अस्तित्व?

प्राचीन काल की बहुत सी कथाएं आज भी हम लोग सुनते हैं। वैज्ञानिकों के द्वारा आज नई नई खोजें की जा रही हैं। वर्तमान में विश्व के सबसे धनी व्यक्ति एलन मस्क जिनके द्वारा आज भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों को पलटने का प्रयास किया जा रहा है यह किस कारण है?

पूर्व में कुछ व्यक्तियों द्वारा किए गए कार्य एवं उनको आगे आने वाली पीढ़ियों में अग्रसारित करने के कारण ही यह सब संभव हो पाया है। अत: मेरी समझ में हमारा अस्तित्व एवं उद्देश्य केवल इतना सा है कि हम अधिक से अधिक ज्ञान को अर्जित कर आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित करें और वे उसे आगे बढ़ाकर इस धरती पर मनुष्य के लिए ही नहीं सभी जीव जंतुओं के लिए जीवन को सरल और सुगम बनाए।

❖❖❖

English Section

Contribution of Women in Mathematics Evolution

Dr. Rakesh Pandey
Asst. Prof. Mathematics

Until recently, societal norms deemed it improper for women to pursue careers as mathematicians. In a patriarchal world dominated by men, women were often silenced or oppressed for expressing their opinions. The idea of a woman formulating a mathematical theorem was practically unthinkable. Despite these challenges, some courageous women defied these conventions, and their remarkable achievements prove that women are just as capable of contributing to mathematics as men. Identifying the very first female mathematician remains a challenge. Here's a look at some notable women in mathematics, their achievements, and the broader context of their impact:

1- Hypatia of Alexandria (c. 360–415 CE)
Hypatia, one of the earliest recorded female mathematicians, was a philosopher, astronomer, and mathematician in ancient Egypt. She contributed to the development of algebra and geometry, teaching at the Neoplatonic School in Alexandria. She symbolized intellectual pursuit during a time when women rarely had such opportunities.

Émilie du Châtelet (1706–1749)
A French mathematician and physicist, Émilie is best known for her translation and commentary on Isaac Newton's *Principia Mathematica*, making it accessible to a broader audience. Her work on energy conservation and Newtonian physics influenced the scientific community significantly.

Sophie Germain (1776–1831)
Sophie made profound contributions to number theory and elasticity theory. She developed Germain primes, crucial in number theory, and paved the way for the modern understanding of Fermat's Last Theorem. Overcoming gender bias, she corresponded with leading mathematicians under a male pseudonym.

Emmy Noether (1882–1935)
Often referred to as the "mother of modern algebra," Emmy made groundbreaking contributions to abstract algebra and theoretical physics, including Noether's Theorem, which connects symmetry and conservation laws. She overcame significant gender discrimination in academia and is widely regarded as one of the most influential mathematicians of the 20th century.

Mary Cartwright (1900–1998)
Mary was one of the first women mathematicians to be elected as a Fellow of the Royal Society. Her work in chaos theory and non-linear differential equations has had profound implications in mathematics and physics.

Julia Robinson (1919–1985)
Julia contributed to decision problems and was instrumental in solving Hilbert's Tenth Problem. She became the first woman president of the American Mathematical Society (AMS).

Katherine Johnson (1918–2020)
A mathematician at NASA, Katherine's calculations were critical to the success of U.S. space missions, including the Apollo program. She became a symbol of excellence for women and African Americans in STEM fields.

Shakuntala Devi (1929–2013)
Often called the "Human Computer," was an Indian mathematician, writer, and mental calculator renowned for her extraordinary ability to perform complex calculations mentally. Her life and achievements have left an enduring legacy in mathematics and inspired many to appreciate the beauty of numbers.

Notwithstanding being constrained by regressive and orthodox societal norms, these women made extraordinary treads in mathematics and science. Their achievements are particularly remarkable given the lack of resources and the pervasive prejudice of their time. It is undeniable that the milestones of success in mathematical sciences would not have been possible without the contributions of these determined women and countless others who confronted societal expectations, driving science toward a more progressive era.

Struggle of Forests and Animals

● **Dr. Prachi Tamta**
Asst. Prof., Zoology

At present, man has become so selfish that he will go to any extent to fulfill his desires, and the biggest example of this is the current condition of forests and animals. The man, who once depended on the forest for his small and most important needs, today burns them as if there is no life in the forest. There was a time when the sounds of different animals echoed from the forest, but today the situation is such that there are no animals left in the forests, let alone their voices. Some are the lucky ones who manage to save their lives from the burning forest, but many animals and birds get burned in the flames of fire. Why does man not think that he is alive today because of the gratitude of the forest? The veil of selfishness has covered man's eyes in such a way that he has become so blind that he has neither the time nor the inclination to think well of anyone other than himself.

Today, we talk about sustainable development. Is sustainable development possible just by talking about it? The most important things in everyone's life are clean air and clean water, but today the forests and animals living in them are suffering the consequences of our actions. Earlier, forests did catch fire, but there were rules and regulations in place. Today, however, humans make rules and regulations to fulfill their selfish desires. Today, forest fires have ruined the condition of the environment. At present, the situation is so bad that neither cold nor rain arrives on time; if anything happens on time, it is extreme heat. And when it rains, it pours in such a way that we don't know whose fault it is or who should be punished. Because when the environment, after giving so much, did not demand anything from man, why should the environment support those who destroy its balance? Today is the right time for mankind to take charge, do something good, remove our selfishness, and think about how we can protect our environment, save our natural resources, and make them available to future generations.

Today, when we pass through the streets and see burning forests, we ask, "Who is that person who is burning the forest in this way? God, is he not ashamed? Why is he destroying our forests?" And when we move ahead, the topic of discussion changes. Why? Just by talking, will the burning of forests stop? Will the struggle of animals' end? No, we have to wake up. We will have to remove the veil of selfishness from our eyes. Only then will our environment be safe, and so will we.

So many diseases have increased that there are no cures for them. This is all the result of the pollution of the environment, and one of the biggest reasons for this is forest fires. The burning of forests has increased the number of harmful substances and gases in the atmosphere. Because of all these harmful substances and gases, many diseases are occurring in humans and animals. We have read in our religious texts and have also seen religious dramas on television, which have created a picture in our minds of how gods and goddesses live in a clean environment, where we see clean air, water, and greenery all around. The state of Uttarakhand is called the land of Gods. Is it true that our land has become fit for the Gods to live in? No, the truth is that the consequences of destruction caused by humans have increased to such an extent that neither God nor any creature is safe.

The fire of human selfishness has scorched hectares of forest in our state, and as a result, these innocent

animals are suffering. Due to the burning of these forests, the natural habitat of the animals has been snatched away, or we can say that it has been destroyed. As a result, the animals are coming towards the cities, and this migration is disturbing the balance of nature. The natural habitat of animals is being destroyed by humans, and they are also being driven away from cities. Why has the migration of the leopard (Guldar) increased from forests to cities? This is the result of cutting and burning of forests. Forest fires are not only destroying the forests but also destroying the fertility of our land. Forests have been cut down to create concrete jungles. People from far and wide come to the hills in the summer season for a green, clean environment and pure air. Earlier, the number of people coming to the hills during the summer season was less, but today it has become a fashion, due to which the condition of the roads has become so bad that there are hours of traffic jams, and the pollution caused by so many vehicles is polluting the air of the hills, which is also causing a rise in temperature. So, humans, wake up and understand that we have no right to destroy the beauty of nature and the creatures found in it. And if we don't wake up, we do not need any bomb, bullet, or missile to destroy us because nature always balances itself, even if it has to give the consequences of the actions of one or a few people to the entire human race.

Empowering Future: A Comprehensive Guide for College Students in Uttarakhand to Embrace Self-Employment

Dr. Sanjay Kumar
Asst. Prof., Botany

Uttarakhand's majestic hill areas are renowned for their natural beauty, cultural richness, and abundant resources. However, these very regions also face challenges such as limited job opportunities, migration, and underutilization of local potential. For college students in the hills, self-employment offers a promising pathway to not only secure a livelihood but also contribute to the socio-economic development of their homeland. This article explores in detail how students can create self-sustaining careers, leveraging the unique opportunities in Uttarakhand's hill areas.

1. Exploring and Utilizing Local Resources

- Uttarakhand's hills are a treasure trove of natural resources, offering immense.
- Potential for business ideas that align with the region's ecological and cultural heritage.

a) Herbal and Medicinal Products

- Uttarakhand is rich in medicinal plants such as ashwagandha, tulsi, and brahmi.
- Students can learn about the processing of these plants to produce herbal teas, essential oils, and Ayurvedic medicines.
- Collaborations with research institutions and NGOs can help in acquiring knowledge and certifications for products.

b) Organic Farming and Agro-Based Enterprises

- The fertile soil and organic-friendly environment make the hills ideal for cultivating niche crops like rajma (kidney beans), chaulai (amaranth), and red rice.
- Establishing direct connections with urban markets or e-commerce platforms can fetch higher profits.
- Value-added products like pickles, jams, or millet-based snacks can be developed to cater to health-conscious consumers.

c) Handicrafts and Traditional Arts

- Reviving crafts like Aipan (traditional Kumaoni art) and wood carvings can attract buyers.
- With online platforms like Etsy and social media marketing, students can showcase and sell these crafts globally.

2. Tapping into Tourism and Hospitality

- Tourism is a booming industry in Uttarakhand, and the hills provide ample opportunities for innovation in this sector.

a) Homestays and Local Hospitality Ventures

- By converting ancestral homes into homestays, students can offer travelers an authentic hill experience.
- Emphasizing eco-tourism and promoting local cuisines can enhance the appeal.

b) Adventure and Cultural Tourism

- The rugged terrains of Uttarakhand are perfect for adventure tourism, including trekking, rock climbing, and paragliding.
- Students can become guides or organizers for such activities with proper training.
- Cultural tourism focusing on local traditions, folk music, and temple tours can cater to niche travellers.

3. Skill-Based and Knowledge-Oriented Opportunities

- Personal skills and education can be transformed into thriving self-employment ventures.

a) Digital Skills and Marketing

- In a digital age, students with expertise in graphic design, social media management, or web development can offer their services to local businesses looking to expand online.
- Creating platforms or apps to connect local sellers with global buyers can revolutionize rural markets.

b) Content Creation and Storytelling

- Blogging or vlogging about hill life, sustainable living, or tourism can attract followers and sponsorships.
- Students can also write books or create documentaries about the culture, traditions, and biodiversity of Uttarakhand.

c) Tutoring and Coaching

- Starting coaching centers or offering online classes for academic and skill-based subjects can cater to the needs of younger students and job seekers.
- Workshops on English language skills, computer literacy, or entrepreneurship can be beneficial for the community.

4. Building Sustainable Businesses

- Sustainability is not just a trend; it is a necessity, especially in ecologically sensitive regions like Uttarakhand.

a) Eco-Tourism Initiatives

- Projects promoting responsible tourism, such as waste-free treks and eco-lodges, can attract environmentally conscious travelers.

b) Renewable Energy Solutions

- Setting up small-scale solar or wind energy units can cater to the energy needs of remote villages while providing a steady income.

c) Recycling and Waste Management

- Establishing waste collection and recycling businesses can address environmental issues and create job opportunities for locals.

5. Harnessing Government and Institutional Support

- Several government schemes and initiatives can provide financial aid, mentorship, and training to aspiring entrepreneurs.

a) Key Initiatives

- Startup Uttarakhand: Offers funding, incubation, and training to startups in the region.
- Mudra Yojana: Provides easy loans for small business ventures.
- Deen Dayal Upadhyaya Grameen Kaushalya Yojana: Imparts skills and training for rural youth.

b) Collaboration Opportunities

- NGOs and educational institutions often organize workshops and awareness programs.
- Participation in government-sponsored incubation centers can provide hands-on experience in entrepreneurship.

6. Role of Colleges in Fostering Entrepreneurship

- Educational institutions can play a pivotal role in nurturing entrepreneurial talent among students.

- Workshops and Seminars
- Colleges can organize workshops on business planning, marketing strategies, and financial management.
- Seminars featuring successful local entrepreneurs can inspire students.

a) **Mentorship and Incubation**

- Setting up entrepreneurial cells within colleges to guide students in business planning and execution.
- Collaboration with local industries and NGOs for internship and training opportunities.

7. Overcoming Challenges

- While opportunities abound, challenges such as lack of infrastructure, connectivity, and access to markets persist.
- Leveraging online platforms can mitigate geographical constraints.
- Community-based ventures can pool resources to overcome individual limitations.
- Persistent efforts and innovative thinking are key to tackling these challenges effectively.

Conclusion

Self-employment is not just a career choice but a way to empower oneself while uplifting the local community and preserving the heritage of Uttarakhand's hills. College students, with their education and energy, are the torchbearers of this transformation. By embracing self-employment, they can break the cycle of migration, create sustainable livelihoods, and inspire others to stay rooted in their homeland.

Let us pave the way for a future where the hills of Uttarakhand thrive with youthful innovation, enterprise, and hope. Together, we can transform dreams into reality and challenges into opportunities.

The Impact of UPI on Tourism in Rural India

Dr. Shalini Thapa
Asst. Prof. - Commerce

Rural India is where the true essence of our nation lies, making it imperative to delve deeper into the social and economic aspects of rural life. With the increasing popularity of social media and the newfound enthusiasm among young people for uncovering undiscovered natural gems, rural tourism in India is gaining significant importance. It has become one of the largest sources of income for rural people, after agriculture and animal husbandry. The Unified Payments Interface (UPI) is reshaping the Indian economic landscape in unforeseen ways. Recognizing its impact on the rural economy, especially in the field of tourism, is crucial.

Today, it is rare to find someone who isn't using UPI for their day-to-day transactions. We've become so accustomed to it that the thought of reverting to carrying heavy wallets filled with crumpled notes and jangling coins seems unimaginable. With wallets prone to daily wear and tear and the constant worry of misplacing them or having them stolen, it feels like a dark phase in history compared to the convenience of simply making payments using a lightweight mobile phone. The mobile phone has become an extension of our arm, always within reach and secured with a password.

This ease of transaction has boosted business in tourist destinations located in rural regions, especially in hilly areas. It is now convenient to make payments at an expensive restaurant or hotel room, split a bill with friends with a single click, or buy a cup of tea for Rs. 5 and pay on the go without carrying real money. This ease encourages tourists to spend more, which has significantly benefited the tourism industry, a major livelihood for many in these regions.

One of the greatest advantages is that overseas tourists no longer need to physically convert their money into Indian currency. This ease of transaction encourages tourists to spend more in Indian markets, thereby supporting local businesses, including indigenous arts and handicrafts. With money being sent digitally and payment proofs being generated for each transaction, the innocent people of rural India are less likely to be scammed. Additionally, features such as the ability to correct the amount after

entering it, entering a password before completing transactions, and having digital records of payments all unified in one place are some of the unsung advantages of UPI.

A UPI transaction between two users only requires a scanner and a smartphone with an internet connection, significantly reducing the need for physical infrastructure like ATM machines. This decrease in infrastructure also lowers the costs associated with establishing and maintaining these machines. Factors such as the distance of a vendor from an ATM or the main market no longer heavily influence walk-ins, thereby levelling the playing field for vendors in even the most remote locations and promoting healthy, fair competition.

However, just as every coin has two sides, there are a few drawbacks to transitioning towards a digital economy. Heavy reliance on technology inevitably brings concerns about network and equipment failures, making transactions in the most remote regions with minimal connectivity quite challenging. Additionally, individuals who haven't been able to adapt to the times—particularly the elderly and less educated—find themselves excluded from this digital economy as they are unable to keep pace with constantly evolving technological updates. Moreover, on many UPI platforms, each transaction incurs a small yet unavoidable convenience fee, which may discourage people from making multiple transactions.

Despite these drawbacks, the benefits of seamless transactions, coupled with the accessibility of transaction details such as transaction history and payment proofs, along with the security of password-protected transactions, far outweigh the disadvantages. This realization leads us to understand that UPI is swiftly becoming the predominant mode of transaction, with rural regions being no exception. This trend strongly suggests that UPI will significantly bolster the rural economy, especially in sectors like tourism, in the years ahead.

CAREER OPPORTUNITIES IN HOME SCIENCE

Dr. Harsha Rawat
Asst. Prof., Home Science

Home Science is a multidisciplinary and diverse field that provides scientific and systematic knowledge about various aspects related to our day-to-day lives. It is a blend of science and art, which imparts a variety of skills to youth, such as cooking, catering, processing, stitching, decoration, boutique, fashion designing, daycare, and healthcare. It also aims at developing an individual's knowledge, attitudes, values, and skills, which guide one to meet personal needs and aspirations and become a well-adjusted member of the family.

In the current scenario, Home Science is gaining huge popularity among youth owing to its wide application in the private sector, government sector, semi-government sector, and entrepreneurship opportunities. Home Science professionals have ample opportunities in the private sector (cooking, fashion designing, housekeeping, dietetics), NGOs (social welfare office, food analysts, research officers), government sector (scientists, professors, research analysts), and entrepreneurial opportunities (boutiques, grooming centers, hobby classes, child care centers, catering, healthcare, etc.). Thus, Home Science is an emerging academic discipline with numerous opportunities for wage employment as well as self-employment.

AREAS OF SPECIALIZATION IN HOME SCIENCE

There are five major areas of specialization in Home Science:

1. **Food and Nutrition –** This course covers the chemical composition of food, the nutrients present in them, their bioavailability, the functions of various nutrients, and the loss of nutrients in cooking and processing. Techniques in food safety and food security, nutritional deficiencies in the human body, and their consequences are dealt with in detail.

2. **Family Resource Management** – The management of resources such as time, money, energy, and space is the main topic studied under family and community resource management. Students gain knowledge about home-scale budget preparation and work simplification techniques. Consumer education is also included under this subject to ensure that students become intelligent consumers who are aware of their duties, responsibilities, rights, and privileges as consumers in society.
3. **Fabric and Apparel Science** – Textile science includes all details about various natural and synthetic fibers. The process involved in the construction of fabrics, apparel designing, and fabric finishes is also taught.
4. **Human Development** – Human development deals with the development of a child from conception to old age and the developmental tasks pertaining to each stage of life. Physical, motor, emotional, language, cognitive, and social development of human beings are also included. Behavioral problems of children, special or differently-abled children, and specific problems and issues that hinder the development of human beings are also dealt with.
5. **Communication and Extension** – Extension education includes the study of program planning, preparation of audio-visual aids, social work, applied nutrition, and methods of communicating with society.

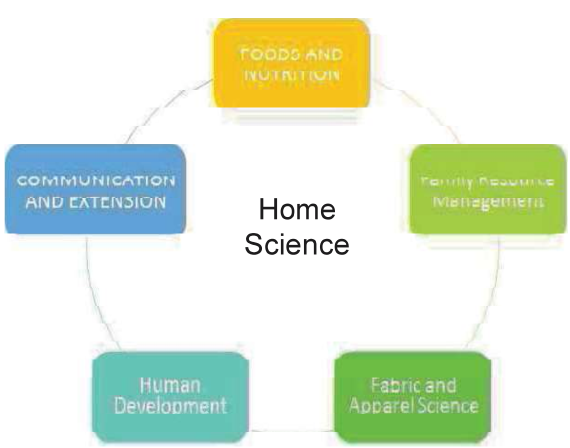

AREAS OF HOME SCIENCE

Thus, the study of Home Science helps individuals lead a more satisfying personal, family, and community life because of the knowledge, understanding, skills, and appreciation of cultural and spiritual values that a pupil acquires through Home Science education.

CAREER OPPORTUNITIES

The career options after pursuing a Home Science course are listed below:

1. **Service and Tourism Industry**: The courses in the Home Science discipline offer many opportunities in the tourism industry, tourist resorts, hotels, etc., as an interior designer, cook, food analyst, catering agent, baker, as well as healthcare professional.
2. **Healthcare Industry**: The health centers specialize in providing advice for the dietary requirements of individuals suffering from various illnesses. The support centers work to provide guidance and support to individuals to stay fit by balancing their diet, exercise, and management of obesity and related conditions. Home Science graduates can work at healthcare institutes, hospitals, or clinics as healthcare counselors, medical coders, dietitians, etc. They can open their own healthcare centers to help individuals maintain balanced diets and meet their nutritional requirements.
3. **Teaching and Research**: After pursuing a course in Home Science, candidates also have teaching options. Candidates must pursue a master's degree in Home Science to become a teacher at the secondary level. For undergraduate-level posts such as Assistant and Associate Professor, one must clear the UGC NET exam after completing a master's degree in Home Science. Research positions are also available for applicants who qualify for the UGC NET exam.
4. **Production Industry**: In the production industry, various activities such as frozen food manufacturing, food preservatives, cooking, and different food production require Home Science experts. Graduates can apply for

posts as food analysts, quality controllers, and quality managers in food preservation departments and food processing units.

5. **Nutrition and Dietetics**: The demand for dietitians is rapidly increasing in India. Dietitians are professionals concerned with individual dietary requirements and suggest diets based on human physiology, caloric consumption, and other factors. Their main role is to provide food analysis, food therapy, and food management.

6. **Textile Industry**: The roles of Home Science professionals in the textile industry include fabric construction, dyeing, printing, assessing, recognizing, and selecting fabrics or products from dealers based on suitability and checking their performance under various conditions. Home Science candidates can be offered jobs as apparel and textile designers.

SELF-EMPLOYMENT OPPORTUNITIES IN HOME SCIENCE

1. **Confectionery and Bakery**: Home Science graduates can start their own bakery or confectionery business, offering different nutritious and conventional products. Their innovative skills can be used to establish a bakery or confectionery business.

2. **Fashion Designer Boutique**: Home Science students can set up a boutique for custom garment construction. They can design and construct garments according to the client's or customer's specifications.

3. **Catering Business**: The catering business is another option for Home Science students, owing to its increasing demand in many institutions and organizations. Catering skills are very useful for running a canteen or outsourcing food services to different offices, factories, etc.

4. **Hobby Centers**: Hobby centers can also be opened by Home Science-trained individuals, where interested persons can learn how to make useful products out of household waste, such as candles, paper flowers, soft toys, rangoli, flower arrangements, jewelry design, pottery, wall painting, and many other crafts.

5. **Child Care Centers**: A person specializing in the human development domain of Home Science can open a childcare center for children whose mothers work outside the home. Graduates and postgraduates can also start crèches, nursery schools, and after-school centers.

6. **Interior Designing**: Home Science students who specialize in resource management can offer training in interior decoration. They can also take up interior decoration projects for various settings, such as offices, hospitals, schools, etc.

7. **Grooming Centers**: Grooming centers can be set up to offer services such as skin care, body care, and hair care.

CONCLUSION AND SUGGESTIONS

Home Science, being a unique discipline blending science and art, equips students with a variety of life skills. Home Science professionals have numerous employment and self-employment opportunities in both the academic and corporate sectors. Home Science covers a range of specializations such as food and nutrition, communication and extension, resource management, human development, and fabric and apparel science. The Home Science syllabus draws strength from both the science and arts disciplines, enabling students to develop the ability to understand concepts and apply them in various situations. This gives Home Science students an edge over those from other disciplines, preparing them for a vast range of opportunities. They can work in the service and tourism industry, the healthcare industry, the production industry, and the textile industry, and they can also pursue careers in teaching, research, and nutrition and dietetics. Home Science students can also start self-employment ventures like catering businesses, hobby classes, child care centers, grooming centers, and work as interior designers. Thus, Home Science prepares individuals to take up jobs outside the home as well as set up home enterprises. It is important to remember that to be successful, one needs to have thorough knowledge of the subject, practice, and experience.

Change and Culture

Neeraj Singh Pangtey
Asst. Prof., English

"Tradition is not the worship of ashes, but the preservation of fire."
- Gustav Mahler

In recent times, one of the most frequently discussed topics is the preservation of culture. Everywhere we look, whether in media, social gatherings, or intellectual debates, there is a concern that our culture is under threat. The narrative often seems to suggest that culture is on the brink of extinction, urging a sense of urgency to protect it. This concern is often expressed with great passion, as if culture is something fragile, a treasure that could easily be lost. While the idea of cultural preservation is important, it is rooted in a fundamental misunderstanding of what culture truly is. The belief that culture is something static, something that can be frozen in time and shielded from change, is flawed. The reality is that culture is not a fixed object to be protected; it is a living, evolving phenomenon that reflects the needs, ideas, and challenges of a society at any given time.

Culture is a dynamic force, constantly changing, shifting, and adapting to new circumstances. The truth is that no culture has ever remained the same over time. From language and art to food and customs, cultures evolve with the passage of time. This is not something to be feared. In fact, it is necessary for the survival and relevance of a culture in an ever-changing world. While the pace and nature of cultural change can vary, it is an inevitable process. Cultures that resist change can stagnate, while those that embrace transformation continue to grow, develop, and remain vibrant.

It is essential to realise that culture is not something we can protect in its current state as though it were a relic of the past. If we seek to preserve culture without allowing for evolution, we risk disconnecting from the very essence of what makes culture meaningful—its ability to adapt and remain relevant. We live in a world that is changing at an unprecedented pace, with technological advancements, global connectivity, and shifting societal norms. This dynamic environment has led to the exchange of ideas, philosophies, and traditions across borders. Rather than resisting these changes, we should seek to understand and integrate the valuable aspects of these influences into our own culture.

One of the key misconceptions in the current discourse about cultural preservation is the idea that culture is a fixed entity—something that once established, must be kept untouched. However, history teaches us that culture is inherently fluid. Take, for example, the chilli pepper, which is now an essential part of Indian cuisine. Today, chilli is so deeply integrated into Indian cooking that it feels as if it has always been there. However, few people know that the chilli was introduced to India only in the 16th century by Portuguese explorers. Before that, Indian cuisine did not include chilli, and it was the arrival of the Portuguese that introduced this new flavour. Today, India is not only a major producer of chilli but also boasts a wide range of chilli varieties. This example highlights the point that culture is not static. It changes over time, absorbing new elements from the outside world. This is a crucial fact to remember when discussing cultural preservation: culture evolves, and it has always evolved.

Similarly, consider the example of tea. In India, tea is synonymous with hospitality and is a central part of daily life. We serve tea to guests, drink it at work, and use it as a social lubricant in our communities. Yet, tea was not always a part of Indian culture. It was introduced by the British during the colonial era, and over time, it became deeply ingrained in Indian society. The establishment of tea plantations in India during the 19th century laid the foundation for the widespread consumption of tea, which was initially considered a foreign drink. Today, it is hard to imagine Indian society without tea. This is another example of how cultures change and adapt to new influences, incorporating them into their own traditions.

These examples demonstrate an important lesson: cultures are not immutable; they are shaped by both internal and external factors. The exchange of goods,

ideas, and practices across borders have always played a central role in the development of culture. Far from eroding cultural identity, these exchanges can enrich and strengthen a culture. The problem arises when we mistakenly believe that our culture must remain unchanged in order to preserve it. Change is an inherent part of life and culture, and resisting it can lead to stagnation.

Despite these facts, there are still individuals who insist that cultural preservation means maintaining culture exactly as it is. These "guardians of tradition" argue that the introduction of foreign influences, particularly from the West, threatens to dilute or distort our cultural identity. They call for strict discipline to prevent any alterations to cultural practices, often advocating for the imposition of rigid rules and customs to ensure that the culture remains intact. While their intentions may be rooted in a sense of pride and love for the culture, their approach is misguided. Strict discipline can create rigidity that stifles creativity and adaptability. When discipline is imposed in an authoritarian manner, it can lead to resistance and rebellion. People begin to feel that their cultural practices are being forced upon them, and this can create a disconnect between individuals and the traditions they are meant to uphold.

On the other hand, complete freedom from discipline can also lead to negative consequences. A lack of structure can result in a loss of cultural coherence, where the values that bind a society together are weakened or ignored. Therefore, the solution does not lie in enforcing strict discipline nor in abandoning discipline altogether. Instead, a balance must be found between honouring tradition and allowing for innovation. The goal should be to preserve the core values of the culture while permitting the introduction of new ideas that align with those values.

Wisdom is key in navigating cultural change. It is through wisdom that we can discern which influences are beneficial and which ones are detrimental. If we cultivate an attitude of thoughtful reflection and critical evaluation, we can integrate the best aspects of new ideas and traditions into our culture while discarding those that do not serve us well. This process requires an open mind and a willingness to engage with the world around us.

The issue of cultural change often leads to the criticism that Western culture is undermining our traditional values. Many people argue that Western ideas and practices, particularly in the realms of consumerism, individualism, and materialism, are corrupting our society and leading us away from our cultural roots. While it is true that Western culture has influenced many parts of the world, including our own, it is important to recognise that the problem is not the presence of Western ideas but our response to them. The challenge is not to reject everything foreign but to evaluate new ideas with discernment. We should embrace those ideas that are in harmony with our values and contribute to the betterment of society, while rejecting those that are detrimental.

Additionally, it is crucial to remember that our own culture is not without its flaws. We must acknowledge the issues that exist within our society, such as inequality, poverty, and various forms of social injustice. There are also harmful practices, such as caste discrimination, gender inequality, and the marginalisation of certain communities, which must be addressed. These problems are part of our cultural heritage, and rather than ignoring them in the name of cultural preservation, we must work to eliminate them. Cultural preservation, then, must also involve a process of self-examination and reform. It is not about holding on to outdated or harmful practices, but about cultivating a culture that is just, inclusive, and progressive.

Cultural preservation, therefore, should not be about stopping change, but about ensuring that the changes we embrace are positive and in line with our core values. It is about striking a balance between maintaining the best aspects of our culture and adapting to new circumstances. This requires a commitment to growth, reflection, and action. Rather than focusing on what is lost in the face of change, we should focus on how we can use change to strengthen our cultural identity and enhance our society.

In conclusion, the preservation of culture is not about holding on to the past, but about embracing the future. It is about allowing culture to evolve in ways that align with our values, while remaining open to new ideas and experiences. The goal is not to stop change, but to guide it in ways that make our culture more vibrant, inclusive, and relevant. To preserve culture is not to freeze it in time but to ensure that it continues to thrive in an ever-changing world.

The Science of Cooking: How Physics Shapes Every Meal

●Dr. Aanchal Sati
Asst. Prof. of Physics

Cooking is more than just a creative endeavor—it is a scientific process governed by the laws of physics. Every time we boil water, bake bread, fry food, or freeze ice cream, we are witnessing physics in action. The way heat moves through food, how pressure affects cooking times, and why different cooking techniques yield different textures can all be explained through fundamental physics principles. Understanding these principles can help improve cooking techniques and elevate the culinary experience.

Heat Transfer: The Heart of Cooking

Cooking primarily involves applying heat to food, and this heat is transferred in three ways:

1. **Conduction –** This is the direct transfer of heat through solid contact. When a steak is placed on a hot pan, heat moves from the pan to the steak, cooking the surface first. Metals like copper and aluminum are excellent conductors, making them ideal materials for cookware.
2. **Convection –** This occurs when heat moves through a fluid (liquid or gas). Boiling water, for example, heats up through convection as hotter water rises and cooler water sinks. In ovens, convection fans circulate hot air, ensuring even cooking.
3. **Radiation –** Heat is transferred through electromagnetic waves. Grilling, broiling, and microwaving all rely on radiation. Infrared radiation from a flame or heating element cooks food from the outside, while microwaves penetrate and heat food from within by exciting water molecules.

The Physics of Cooking Methods

Different cooking techniques rely on physics to achieve the desired texture, taste, and appearance:

- **Boiling and Simmering –** Water boils at 100°C (212°F) at sea level, but at higher altitudes, where atmospheric pressure is lower, it boils at a lower temperature, affecting cooking times.
- **Frying –** Oil can reach much higher temperatures than water, allowing for rapid cooking and the Maillard reaction (A Maillard reaction in cooking is a chemical reaction that occurs between amino acids (from proteins) and reducing sugars that makes food taste delicious when it gets a nice brown crust from cooking at high temperatures), which gives fried foods their golden-brown, crispy texture.
- **Baking and Roasting –** When baking bread, heat causes gases like steam and carbon dioxide (from yeast or baking soda) to expand, making the dough rise. Roasting relies on dry heat to caramelize sugars and develop deep flavors.
- **Steaming –** Cooking with steam is highly efficient because steam transfers heat faster than dry air, cooking food more gently while preserving nutrients.

The Role of Pressure in cooking

Pressure plays a significant role in cooking, especially in techniques that manipulate atmospheric conditions:

- **Pressure Cooking** – In a pressure cooker, steam is trapped, raising the pressure inside and increasing the boiling point of water. This allows food to cook much faster than in a normal pot.

- **Sous Vide Cooking –** This method uses precise temperature control by sealing food in vacuum bags and cooking it in a water bath, ensuring even cooking without overcooking.
- **Leavening in Baking –** Gases like carbon dioxide expand under heat, making cakes, bread, and pastries rise. This expansion is influenced by pressure, which is why baking at high altitudes requires recipe adjustments.

Phase Changes and Molecular Interactions

Physics explains how food transforms at the molecular level:

- **Melting and Freezing –** Butter melts when heated because its fat molecules break apart, while ice cream stays creamy when frozen rapidly because quick freezing prevents large ice crystals from forming.
- **Evaporation and Condensation –** Water evaporates when boiling, helping to concentrate flavors in sauces and soups. Steam condenses back into water when it touches a cooler surface, such as when making condensed milk or reducing sauces.
- **Caramelization and the Maillard Reaction –** When sugar is heated, it undergoes caramelization, forming rich, complex flavors. The Maillard reaction, a chemical process between amino acids and sugars, gives grilled meat and toasted bread their signature flavors and textures.

Physics in Emulsions, Foams and Textures

The way ingredients mix, hold together, or trap air also follows physics principles:

- **Emulsification –** Oil and water usually don't mix, but an emulsifier like egg yolk (which contains lecithin) allows them to blend, as seen in mayonnaise and salad dressings.
- **Foams and Whipped Cream –** Whipping air into liquids creates a foam, as in whipped cream or meringue. Heat can stabilize these foams, making soufflés rise in the oven.
- **Gelatinization –** Starches absorb water and swell when heated, thickening sauces and giving pudding its creamy consistency.

Cooling and Freezing: The Science of Food Preservation

Physics also plays a role in keeping food fresh and preserving textures:

- **Thermal Conductivity in Cooling –** Metal containers cool food faster than plastic because metal is a better conductor of heat.
- **Supercooling –** Sometimes, liquids can be cooled below their freezing point without solidifying until disturbed. This phenomenon is used in certain food preservation techniques.
- **Ice Crystal Formation in Freezing –** Slow freezing leads to large ice crystals, which can damage food texture (as seen in freezer-burned meat). Rapid freezing, like in flash-freezing, prevents this and maintains food quality.

Physics is present in every aspect of cooking, from how heat transforms food to the role of pressure, phase changes, and molecular interactions. Understanding these scientific principles allows cooks and chefs to refine their techniques, control cooking outcomes, and enhance flavors and textures. Cooking is not just about following recipes—it's about mastering the physics behind them to create delicious and perfectly cooked meals.

"Cooking is like love. It should be entered into with abandon or not at all."
- H. V. Horne

Economic Depression 1929

●Akhilesh Kumar,
PhD Scholar, Commerce

A prolonged period of significant economic decline that can last for years is called an economic depression. There can be several factors causing an economic depression. It can have several consequences on the lives of people worldwide. During a depression, unemployment rates soar as businesses cut costs or shut down, leaving many without a stable income, initiating a deflation cycle. This can cause increased poverty, homelessness, and difficulty affording necessities like food, housing, and healthcare. People may experience a decline in their standard of living, being forced to make difficult financial decisions.

After the First World War from 1914-18, the American economy was in better condition than its European counterparts. The fact that World War I was fought primarily in Europe was a major reason why America was able to recover more quickly. The Treaty of Versailles was another reason that helped the U.S. recover from World War I. While the treaty placed heavy reparations and economic burdens on Germany and other Central Powers, the U.S. emerged largely unscathed and even benefited economically. America underwent industrial expansion and increased global trade. Post-war policies helped stabilize Europe, reopening and easing world trade, which boosted American exports. The nation's focus on domestic industry and innovation also contributed to its recovery and eventual economic boom in the 1920s. These developments resulted in the growth of America into a new, industrialized, developed, economic superpower nation.

The 1920s, often referred to as the "Roaring Twenties," was a period of economic prosperity in the United States. Industrial production soared, consumer goods became widely available, and the stock market experienced a significant boom. This era saw a massive increase in consumer spending, fueled by easy credit and the growth of the automobile and construction industries. But how long can durable consumer goods be bought frequently? Initially, anyone would buy durable (like homes, cars, TVs, etc.) or non-durable goods, but after a limit, that surplus will be used for investment, causing a fall in demand and a decrease in profits for businesses, initiating an early phase of the deflation cycle. This is what happened in America. Many Americans invested heavily in the stock market, often with borrowed money. The belief that stock prices would continue to rise led to rampant speculation. Investors bought shares on margin, meaning they only had to pay a small percentage of the stock's price upfront, borrowing the rest, which increased their risk significantly.

By late 1929, stock prices had reached unsustainable levels. The market peaked in August 1929, with the Dow Jones Industrial Average reaching its highest level. On October 24, 1929, known as Black Thursday, stock prices began to fall sharply. Panic selling ensued as investors rushed to sell their shares, leading to a market collapse. The stock market lost billions of dollars in value. The total decline in stock prices from the market peak in August to the end of October 1929 was approximately 40%. As stock prices plummeted, many investors were unable to repay their loans. This led to significant financial instability, and banks that had invested heavily in the stock market faced insolvency. Between 1929 and 1933, thousands of banks failed, leading to widespread loss of savings for individuals and businesses.

The economic downturn led to significant job losses as businesses closed or cut back on production. Unemployment rates soared from about 3% in 1929 to nearly 25% by 1933. Families struggled

to make ends meet, and many-faced poverty and homelessness. The Great Depression was not confined to the United States; it had a global impact. Countries that relied on American loans and investments were severely affected. International trade plummeted as countries raised tariffs to protect domestic industries, leading to a decline in exports and further exacerbating economic troubles. Prices for goods and services fell, leading to deflation. Businesses cut wages and laid off workers, which decreased consumer spending and deepened the economic crisis. The GDP of the United States fell by nearly 30% between 1929 and 1933.

At that time, classical economists were prominent, and their theories were the keystone in economic policy-making. So, President Herbert Hoover also initially believed that the economy would self-correct and was reluctant to provide direct government assistance to individuals. His administration focused on encouraging businesses to maintain production and employment but was largely ineffective. Hoover eventually implemented some public works programs, such as the construction of the Hoover Dam, but these measures were seen as too little, too late. In 1932, Franklin D. Roosevelt was elected president and introduced the New Deal, a series of programs and reforms aimed at economic recovery. The New Deal included measures such as social security, job creation programs (like the Works Progress Administration), banking reforms, and agricultural adjustments. These programs aimed to provide relief, recovery, and reform to the American economy. The economic recovery from the Great Depression was slow, but it was significantly boosted by World War II. The war effort led to increased production, job creation, and a reduction in unemployment.

Dr. S. Jaishankar

Kamlesh Bhatt
B.Sc. III Semester

Dr. S. Jaishankar assumed his responsibilities as Ambassador of India to the United States in December 2013. Dr. Jaishankar comes to Washington, D.C., with more than three decades of diplomatic experience. Joining the Indian Foreign Service in 1977, Dr. Jaishankar has represented India's interests and fostered friendly working relationships in countries around the world.

Dr. Jaishankar's first postings abroad were as Third and Second Secretary (Political) at the Embassy of India in Moscow from 1979 to 1981. From 1981 to 1985, he served as Under Secretary (Americas) and Policy Planning in the Ministry of External Affairs. He then spent three years, from 1985 to 1988, as First Secretary handling political affairs at the Indian Embassy in Washington, D.C., followed by two years as First Secretary and Political Adviser to the Indian Peacekeeping Force (IPKF) in Sri Lanka.

In 1990, Dr. Jaishankar became the Commercial Consul in Budapest. After three years in that position, he returned to India, where he served first as Director of the East Europe Division of the Ministry of External Affairs, and then as Press Secretary for the President of India. Following this service in India, Dr. Jaishankar went abroad again — to Tokyo in 1996 as Deputy Chief of Mission. In 2000, he was appointed Ambassador of India to the Czech Republic and served in Prague until 2004. Upon completing his tenure as Ambassador in Prague, Dr. Jaishankar returned once again to India, where he led the Americas Division in the Ministry of External Affairs. After three years heading the division, he left India in 2007 to serve as High Commissioner to Singapore for two years. Most recently, Dr. Jaishankar was the Ambassador of India to China from 2009 to 2013.

Dr. Jaishankar holds a Ph.D. and M.Phil. in International Relations, as well as an M.A. in Political

Science. He is a member of the International Institute for Strategic Studies in London. He is the longest-serving Indian Ambassador to China and played a pivotal role in reinforcing economic, trade, and cultural relations between the two countries. He brings with him more than three decades of diplomatic experience, having also served as Press Secretary and Speechwriter for the former President of India, Shankar Dayal Sharma.

Dr. Jaishankar attracted the limelight during his tenure as Indian Ambassador to the U.S., where he was a negotiator between the U.S. authorities and the Indian government to mutually handle the Devyani Khobragade incident. He used his wide contacts within the Washington bureaucracy, dealing with South Asia, to smooth out the crisis over the December 12 arrest and strip search of India's then Consul General in New York, Devyani Khobragade.

Subrahmanyam Jaishankar was second of the six ambassadors who presented their credentials to President Obama, one by one, in a traditional ceremony that marks the formal beginning of an ambassador's service in Washington.

He played a key role in negotiating the landmark India-U.S. civil nuclear deal and other initiatives, working closely with then Prime Minister Manmohan Singh. He has served as India's Ambassador to the Czech Republic, High Commissioner to Singapore, and as head of the Americas Division in the Ministry of External Affairs.

Subrahmanyam Jaishankar first attracted the attention of Narendra Modi when he had visited China in 2012. The meetings with important Chinese personalities that Jaishankar had arranged for the Prime Minister left him impressed.

Traditional Dishes of Uttarakhand

Shraddha Kaira
B.A. II Semester

Uttarakhand's cuisine is as simple and natural as its people. The state's food culture is rooted in the philosophy of using locally available ingredients to create flavorful and nutritious meals. The dishes are prepared with minimal spices, focusing on the natural taste of ingredients, offering both comfort and delight to the taste buds. The cuisine of Uttarakhand reflects the state's geography and culture, with food that complements the region's climate and landscape.

As you journey through the roads leading up to your favorite hill station in Uttarakhand, you will be greeted by a variety of enticing aromas from roadside vendors. These dishes tell the story of the people of Garhwal and Kumaon, with every meal a testament to the local traditions and customs. Some of the famous dishes include **Jaula, Kaapa, Sisunak Saag, Aaloo Gutak, Dubuk, Chudkani**, **Thatwani**, **Chainsoo, Kafuli, Baadi, Jholi, Phanu, Gahat ke Parathe**, and **Thechwani**.

Famous Dishes of Uttarakhand

Kafuli – A Mouthwatering Delight

One of the most iconic dishes of Uttarakhand, Kafuli is a flavorful blend of green leafy vegetables such as spinach and fenugreek leaves. This dish is packed with nutrients and is often considered the state food of Uttarakhand. The dish is typically served with a gravy made from rice or wheat flour and water, giving it a thick consistency.

Main Ingredients: Spinach leaves, fenugreek leaves, rice powder, curds, spices, water, and salt.

Health Benefits: Kafuli is rich in protein, fiber, and vitamins A, C, and E.

Kumaoni Raita – Beat the Heat

No meal in Uttarakhand is complete without Kumaoni Raita, prepared with yogurt, turmeric, and cucumber. It is a refreshing and cooling side dish that pairs well with spicy foods. The combination of these ingredients not only adds flavor but also offers a health boost, making it a perfect accompaniment to any meal.

Main Ingredients: Curd, cucumber, turmeric.

Health Benefits: Rich in protein and cooling properties.

Aloo Gutuk – A Regional Favorite

Aloo Gutuk is a simple yet delightful dish that is popular in Uttarakhand. It consists of boiled potatoes garnished with coriander, red chilies, and often served with bhang ki chutney, poorís, and Kumaoni raita. This dish is a must-try for anyone visiting the region, as it reflects the simplicity and rustic flavors of Uttarakhand's cuisine.

Main Ingredients: Boiled potatoes, coriander, red chilies.

Aloo ka Jhol – Thin Gravy Delight

Aloo ka Jhol is a potato-based dish served with poorís or chapatis, known for its thin gravy. The dish goes by different names in various regions, such as Aloo Resedar, Mathura ke Dubki Wale Aloo, or Poori Bhaji. It's a staple comfort food and has several regional variations.

Main Ingredients: Potatoes, spices, tomatoes, onions.

Dubuk – A Hearty Winter Dish

Dubuk is a soothing dish made from Bhat ki dal (or arhar ki dal) that is ground into a fine paste and slow-cooked with spices and onions. The dish is ideal for the winter months as it is light yet flavorful, making it a perfect comfort food. Typically served with rice and bhang ki chutney, Dubuk is a wholesome and nutritious dish.

Main Ingredients: Arhar dal, spices, onions.

Health Benefits: Rich in protein and other essential nutrients.

Jhangora ki Kheer – A Traditional Sweet

No meal in Uttarakhand is complete without a sweet dish, and Jhangora ki Kheer is one of the region's finest desserts. Made with millets, milk, and sugar, this kheer has a unique flavor and is an integral part of the culinary tradition in Uttarakhand.

Main Ingredients: Milk, millets (Jhangora), sugar.

Conclusion

The cuisine of Uttarakhand is a reflection of the state's culture, history, and environment. It offers a variety of dishes that are not only delicious but also nourishing, with an emphasis on simplicity and the use of fresh, locally sourced ingredients. From savory dishes like Kafuli and Aloo Gutuk to sweet treats like Jhangora ki Kheer, the food of Uttarakhand is an experience that delights the senses and offers a deeper connection to the land and people of this beautiful state.

"Good food is the foundation of genuine happiness."

- A.Escoffier

"Life is uncertain. Eat dessert first."

- E Ulmer

Green Supply-Chain Management: A Drive to Sustainability

Bhawna Shah
Ph.D. Scholar, Commerce Deptt.

Green supply chain management (GSCM) focuses on integrating environmental sustainability principles into all aspects of the supply chain, from product design and sourcing to manufacturing, distribution, and disposal. The goal is to minimize the environmental impact of supply chain activities while maximizing resource efficiency and promoting sustainable practices. Major components of this drive include **Product Design**, **Supplier Management**, **Sustainable Sourcing**, **Energy Efficiency**, **Waste Reduction**, **Transportation Optimization**, **Reverse Logistics**, **Environmental Compliance**, **Lifecycle Assessment**, and **Stakeholder Engagement.**

When discussing its inclusion in daily operations, it starts with **Identifying Environmental Impacts** associated with supply chain activities. This involves assessing the carbon footprint, energy consumption, water usage, waste generation, and other environmental aspects at each stage of the supply chain. Once the environmental impacts are identified, companies set specific goals and targets for reducing these impacts. These goals may include reducing carbon emissions, minimizing waste, conserving resources, and promoting sustainable practices throughout the supply chain.

Supplier Engagement is a key element. Companies work closely with their suppliers to ensure that environmental considerations are integrated into sourcing decisions. This may involve selecting suppliers who adhere to environmental standards, promoting sustainable sourcing practices, and collaborating on initiatives to reduce environmental impact.

GSCM also involves designing products with environmental sustainability in mind. This includes using eco-friendly materials, reducing energy consumption during production, minimizing packaging waste, and designing products for ease of recycling or reuse. Companies implement green manufacturing practices to minimize environmental impact during production. This may involve optimizing energy efficiency, reducing water usage, implementing waste reduction measures, and using environmentally friendly technologies and processes.

GSCM focuses on optimizing transportation and logistics operations to reduce carbon emissions and minimize environmental impact. This may include consolidating shipments to reduce transportation miles, using fuel-efficient vehicles, optimizing routing and scheduling, and implementing sustainable packaging practices. Companies adopt sustainable practices in distribution and warehousing operations to minimize environmental impact. This may involve optimizing warehouse layouts for energy efficiency, implementing recycling and waste reduction programs, and using renewable energy sources where feasible.

GSCM also includes managing **reverse logistics** processes for product returns, recycling, and disposal. This involves implementing take-back programs, recycling initiatives, and proper disposal methods to minimize waste and maximize resource recovery. Companies engage with stakeholders such as customers, suppliers, employees, and communities to promote awareness of environmental issues and foster collaboration on sustainable initiatives throughout the supply chain.

In summary, GSCM involves a holistic approach to managing supply chain operations in a way that minimizes environmental impact, promotes resource efficiency, and contributes to the broader goal of environmental sustainability. By integrating green practices into their supply chain operations, companies can achieve multiple benefits, including cost savings, regulatory compliance, enhanced brand reputation, and a more resilient and sustainable business model.

ISO 14001 and GSCM

ISO 14001 is an internationally recognized standard for environmental management systems (EMS). It provides a framework for organizations to establish, implement, maintain, and continually improve environmental management practices. Green supply chain management (GSCM) and ISO 14001 are closely related, as ISO 14001 can serve as a foundation for implementing environmental sustainability initiatives within the supply chain. Both ISO 14001 and GSCM complement each other well.

ISO 14001 emphasizes a systematic approach to identifying environmental aspects, setting objectives and targets, and implementing actions to improve environmental performance. GSCM shares similar objectives by aiming to integrate environmental sustainability principles into supply chain operations. ISO 14001 requires organizations to consider the environmental performance of their suppliers and contractors. GSCM extends this concept by promoting sustainable sourcing practices and engaging suppliers in environmental initiatives.

ISO 14001 encourages organizations to take a lifecycle perspective when assessing environmental impacts. GSCM similarly emphasizes considering the environmental impacts of products and services throughout their lifecycle—from raw material extraction to end-of-life disposal. Both ISO 14001 and GSCM emphasize the importance of continual improvement in environmental performance. Organizations certified to ISO 14001 regularly assess their environmental management system, identify areas for improvement, and take corrective actions. ISO 14001 also encourages organizations to engage with stakeholders on environmental matters, including employees, customers, regulators, and communities. GSCM expands this concept by emphasizing collaboration with supply chain partners to address shared environmental challenges and opportunities.

ISO 14001, the international standard for environmental management systems (EMS), is widely adopted in Indian industries across various sectors. While ISO 14001 certification is not a legal requirement in India, compliance with environmental regulations and laws is mandatory for businesses operating in the country. Though ISO 14001 certification is voluntary, it is widely recognized and respected as a framework for implementing effective environmental management systems (EMS). Many businesses in India choose to pursue ISO 14001 certification to demonstrate their commitment to environmental stewardship and gain a competitive advantage in the marketplace.

ISO 14001 certification can serve as evidence of a company's commitment to environmental responsibility and may provide certain advantages in regulatory compliance, improving environmental performance, and enhancing stakeholder engagement. By prioritizing sustainability, industries can drive innovation, enhance competitiveness, mitigate risks, build trust with stakeholders, and create long-term value for society. Together, we can achieve a more sustainable and resilient future, where economic prosperity goes hand in hand with environmental stewardship and social well-being.

Some Infinities Are Bigger Than Other Infinities

Suyash Bisht
Research Scholar, Deptt. of Mathematics

Some Infinities Are Bigger Than Other Infinities

Infinity is one of those concepts that stretches the imagination. We might think of it as something that goes on forever—like the number of stars in the universe or the grains of sand on a beach. But here's a mind-blowing fact: some infinities are actually bigger than others! That's right—there are different sizes of infinity, and one type of infinity is so strange and enormous that we can barely wrap our heads around it.

The Smallest Infinity

At first, infinity seems simple. Think of counting numbers: 1, 2, 3, 4… forever. There's no end in sight, and no matter how long we count, there's always a next number. This is a type of infinity, and we can call it countable infinity. It's endless, but we can still imagine listing each number one by one, even if we'll never finish.

Hilbert's Paradox of the Grand Hotel

Now that we've got the idea of countable infinity, let's look at a fun and weird example: Hilbert's Hotel. Imagine an infinitely large hotel (Hilbert's Hotel) where every room is filled with guests. We might think that the hotel can't take any more guests, right? Well, because infinity is so strange, the hotel can always accommodate more guests—even though every room is occupied!

Here's how it works: If a new guest arrives, the manager simply asks the guest in room 1 to move to room 2, the guest in room 2 to move to room 3, and so on. Each guest moves to the next room, and now room 1 is free for the new guest. This can keep happening forever! Even though the hotel is fully booked, there's always room for more guests in an infinite space.

Uncountable Infinity

Now, this is where things get strange. There's another kind of infinity that's much bigger—an infinity that we cannot count, even in theory. This is called uncountable infinity, and it's so vast and strange that it challenges how we think about size and numbers.

Let's look at an example to understand this uncountable infinity. Imagine all the numbers between 0 and 1. At first, it seems simple—there's 0.1, 0.2, 0.3, and so on. But what if we start adding more decimal places? Between 0.1 and 0.2, we have 0.11, 0.12, 0.13, and more. But wait—between 0.11 and 0.12, there's 0.111, 0.112, 0.113… we could keep going forever! No matter how many numbers we write down, there will always be more numbers in between.

This is why the infinity of numbers between 0 and 1 is uncountable. There are so many numbers packed in there that we can't even make a list of them all. It's not just a long list—it's an impossible list. This infinity is far bigger than the infinity of counting numbers like 1, 2, 3.

The Fascinating Nature of Uncountable Infinity

What makes uncountable infinity so astonishing is that even though both countable and uncountable infinities go on forever, the uncountable infinity is in a whole different league. It's like comparing a long line of dominoes to an entire beach full of sand. Both could be described as "infinite," but the second is so much vaster that we can't even begin to count all the grains. This idea was discovered by mathematician Georg Cantor, and his work shocked the mathematical world. He proved that no matter how carefully we try to list all the numbers between 0 and 1, we'll always miss some. It's like trying to fit an ocean into a bottle—it's just too big!

Bigger Infinities Than Uncountable Infinity

What's truly baffling about infinity is that it doesn't stop at just one size. While countable infinity, like the set of natural numbers, is endless, it turns out there are bigger infinities, such as the set of real numbers. And the surprises don't end there—after discovering uncountable infinity, mathematicians found that there's an entire ladder of infinities, each one larger than the last. You can keep climbing this

ladder forever, with no end to how vast infinities can become.

This means that for every infinity you encounter, there's always a bigger one waiting just beyond it. It's like discovering that after an ocean, there's a whole galaxy of water, then another universe beyond that. The sheer scale of this idea is hard to grasp, but it shows that infinity is not just a single concept—it's a never-ending hierarchy of increasing vastness that stretches beyond human comprehension.

The idea that some infinities are bigger than others is one of the most surprising and mind-bending concepts in mathematics. Uncountable infinity is so vast that it's beyond our ability to list or count, and yet it's just one of many kinds of infinity. Exploring this concept stretches our thinking and shows us that even the most familiar ideas—like numbers—can behave in the strangest and most unexpected ways. So next time you hear the word "infinity," remember that it's not just endless—it comes in sizes, and some are unimaginably huge!

Lal Bahadur Shastri: A Legacy of Leadership, Integrity, and Vision

Uma Kaira
B.Sc. First Semester

Lal Bahadur Shastri was an influential Indian politician and statesman who served as the 2nd Prime Minister of India from 1964 to 1966. Known for his humility, integrity, and vision, Shastri played a pivotal role in shaping the trajectory of post-independence India. His leadership during critical moments in Indian history, including the Indo-Pakistan War of 1965, earned him widespread respect and admiration, both within India and internationally.

Early Life and Political Influence

Lal Bahadur Shastri was born on October 2, 1904, in Mughalsarai, Uttar Pradesh. His political and philosophical thoughts were deeply influenced by the teachings of Swami Vivekananda, Mahatma Gandhi, and Annie Besant. Shastri was particularly inspired by Gandhi Ji's philosophy of simplicity, non-violence, and self-reliance, which motivated him to join the Indian independence movement in 1920. Shastri's participation in the freedom struggle laid the foundation for his later role in the leadership of a free India.

Leadership in Government

Shastri became an important figure in the Indian political landscape after independence. Before becoming Prime Minister, he served as the Home Minister of India from 1961 to 1963. During his tenure as Home Minister, he worked on improving internal security and promoting national unity. In 1964, following the untimely death of Jawaharlal Nehru, Shastri was appointed as the Prime Minister of India.

As Prime Minister, Shastri made significant contributions to India's socio-economic development. He promoted the Green Revolution, a national initiative aimed at increasing food production, particularly in states like Punjab, Haryana, and Uttar Pradesh. His policies focused on modernizing agricultural practices, which resulted in a dramatic increase in food grain production, securing India's food supply and reducing its dependency on foreign aid.

Shastri also championed the White Revolution, which aimed to increase the production and supply of milk across India. His support for the Amul Milk Cooperative in Anand, Gujarat, and the establishment of the National Dairy Development Board marked a significant milestone in India's dairy industry. These efforts not only helped improve the nation's food security but also empowered millions of farmers, particularly in rural areas.

"Jai Jawan, Jai Kisan": A National Call

One of Shastri's most enduring contributions was his ability to inspire the nation during times of crisis. During the Indo-Pakistan War of 1965, Shastri coined the slogan "Jai Jawan, Jai Kisan" ("Hail to the

Soldier, Hail to the Farmer"), which became a rallying cry for both the armed forces and the farmers who were crucial to the country's survival and growth. The slogan symbolized the importance of both the soldier at the front and the farmer in the fields, and it resonated deeply with the Indian populace.

Shastri's leadership during the war was marked by his resilience and determination. Despite being faced with significant challenges, he managed to secure a ceasefire and ultimately brokered a peace agreement, ensuring that India's sovereignty and interests were preserved.

A Man of Integrity and Simplicity

Lal Bahadur Shastri was known for his honesty, humility, and incorruptibility. He led a life of simplicity, refusing to indulge in material wealth or personal gains. Even after his tenure as Prime Minister, he remained modest and thrifty. At the time of his death, he was poor and owned little material wealth — only an old car, which he had bought on installment from the government. He was deeply committed to public service and, throughout his life, adhered to the principles of the Servants of India Society, which discouraged the accumulation of personal property and emphasized selfless service to the nation.

Legacy and Honors

Shastri's untimely death on January 11, 1966, shocked the nation. In recognition of his unparalleled service to the country, he was posthumously awarded India's highest civilian honor, the Bharat Ratna. His memorial, Vijay Ghat, was built in his honor in Delhi, serving as a place of reflection for those who admired his leadership.

Shastri's legacy is also carried forward through several educational institutions bearing his name. The Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration in Mussoorie, Uttarakhand, trains India's civil servants. Additionally, the Lal Bahadur Shastri Institute of Management in Delhi, founded by the Lal Bahadur Shastri Educational Trust in 1995, continues to uphold his values of ethical leadership and public service. The Shastri Indo-Canadian Institute, named in his honor, promotes scholarly exchange between India and Canada, further highlighting his global influence.

In addition, IIT Kharagpur has a hall of residence named after him, the Lal Bahadur Shastri Hall of Residence, which serves as a reminder of his commitment to education and national development.

Conclusion

Lal Bahadur Shastri remains an iconic figure in Indian history. His leadership during critical times, his commitment to agricultural and economic reforms, and his embodiment of simplicity, integrity, and humility has left an indelible mark on the nation. Through his vision and tireless work, Shastri not only advanced India's self-sufficiency but also inspired future generations to serve the nation with dignity and honor. His life and legacy continue to serve as a guiding light for those in public service and for all who aspire to contribute to the nation's progress.

A Dream I Dream

Dr. Shalini Thapa
Asst. Prof., Commerce

In the dense growth of tall trees
Where magic breaths through every breeze
Where the canopy glitters in moon shine
Built in oak and stone is my home divine

On top of hill, you can see some snow
Every ray makes it glow
Far away from the city's hustle
To live a life nice and slow

In nature's lap lies my home
Like a pearl in an Oyster's womb
It is here i wish spending my last of days
And it is here i want my tomb

Alas! such a place can rarely be
Since we shot all animals and chopped all tree
Yet, everyday this home I do build
To only last within my closed eye lids

विभागीय आख्याएं

हिन्दी विभाग

सत्र 2022-23

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर के हिंदी विभाग द्वारा शैक्षिक सत्र 2022-23 के दौरान विभागीय गतिविधियों के अंतर्गत विविध शिक्षण सहगामी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विभाग द्वारा 10 जनवरी, 2023 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर हेमा प्रसाद द्वारा की गई। इस अवसर पर हिंदी प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाने वाले विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम के संबंध में सन 1975 से लेकर वर्तमान समय तक हुए विश्व हिंदी सम्मेलनों की भूमिका, उद्देश्य और उपलब्धियों पर विभाग के प्राध्यापकों द्वारा चर्चा-परिचर्चा की गई। विभाग द्वारा इस अवसर पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें महाविद्यालय के विविध विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

विभाग द्वारा विद्यार्थियों को शीतकालीन अवकाश हेतु ''मेरे अवकाश मेरी रचनात्मकता'' कार्यक्रम के तहत विविध गृह कार्य प्रदान किए गए, इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को सूक्ति लेखन, चार्ट या पेपर शीट पर किसी चित्र या स्लोगन लेखन तथा सुंदर अक्षरों द्वारा विविध शीर्षक जैसे सुंदर सोमेश्वर, प्यारा सोमेश्वर, मेरे प्रिय अध्यापक, मेरा गांव सुंदर गांव आदि विषयों पर अपने लेख लिखने का कार्य प्रदान किया गया। विद्यार्थियों द्वारा इस संपूर्ण कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया गया तथा इस कार्यक्रम में विविध विद्यार्थियों द्वारा अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया गया। शीतकालीन अवकाश के उपरांत महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा उपर्युक्त प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें बी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र सौरभ कुमार प्रथम, बी.ए. तृतीय सत्रार्ध की छात्रा प्रीति भडारी द्वितीय तथा बी.ए. प्रथम सत्रार्ध की छात्रा शिवानी बोरा तृतीय स्थान पर रही। उपर्युक्त विजेता विद्यार्थियों को

विभाग द्वारा माननीय प्राचार्य महोदय के कर -कमलों द्वारा पारितोषिक प्रदान किया गया।

विभाग द्वारा 'मेरा उत्तराखंड मेरा साहित्यकार' कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत दिनांक 29 मार्च 2023 को अल्मोड़ा जनपद और हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कथाकार मनोहर श्याम जोशी की पुण्यतिथि को धूमधाम से मनाया गया। उपर्युक्त कार्यक्रम में न केवल मनोहर श्याम जोशी बल्कि समकालीन हिंदी कथा साहित्य में उत्तराखंड के विभिन्न साहित्यकारों पर चर्चा की गई। नब्बे के दशक के प्रसिद्ध टीवी सीरियल हम लोग, बुनियाद, मुंगेरीलाल के हसीन सपने आदि प्रसिद्ध धारावाहिकों के लेखक मनोहर श्याम जोशी के रचना साहित्य पर विभाग के प्राध्यापक डा0 विपिन चंद्र द्वारा विस्तृत परिचर्चा की गई । इसी कार्यक्रम के अंतर्गत विभाग द्वारा 24 अप्रैल 2023 को प्रेमचंद के समतुल्य कथाकार शैलेश मटियानी के रचनाकर्म और साहित्यिक यात्रा पर विद्यार्थियों से संवाद स्थापित किया गया, हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. अमिता प्रकाश द्वारा शैलेश मटियानी के उपन्यास हवलदार, चिट्ठी रसैन, कबूतरखाना तथा उनकी कहानी 'प्रेतमुक्ति' आदि पर उत्तराखंड के परिवेश के आधार पर गहन वार्तालाप किया गया। दिनांक 16 मई 2023 को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कवि मंगलेश डबराल की जन्म तिथि विभाग द्वारा मनाई गई, हिंदी विभाग की डॉ. भावना द्वारा मंगलेश डबराल की कविता 'यह नंबर मौजूद नहीं है' का पाठ भी किया गया। महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा मंगलेश डबराल की विविध कविताओं का पाठ किया गया जिसमें स्नातक द्वितीय सत्रार्ध की छात्रा पूजा बिष्ट द्वारा मंगलेश डबराल की कविताओं का वाचन किया गया। दिनांक 20 मई 2023 को विभाग द्वारा सोमेश्वर के ही नजदीक कौसानी में जन्मे उत्तराखंड के प्रसिद्ध कवि और हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर सुमित्रानंदन पंत का जन्म दिवस मनाया गया, इस अवसर पर विद्यार्थियों को सुमित्रानंदन पंत की काव्य यात्रा के संबंध में छायावाद और प्रगतिवाद से लेकर अरविंददर्शन तक के प्रभाव से परिचित कराया गया। विद्यार्थियों द्वारा इस अवसर पर पंत की कविता परिवर्तन का पाठ भी किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राएं गीता गोस्वामी, ज्योति आर्या, भावना आर्या, उर्मिला, पूजा बिष्ट, ललिता और दीक्षा आदि इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर हेमा प्रसाद द्वारा की गई। दिनांक 30 मई 2023 को हिंदी विभाग द्वारा राष्ट्रीय हिंदी पत्रकारिता दिवस का आयोजन किया गया इस अवसर पर 30 मई सन 1826 को हिंदी के प्रथम समाचार पत्र उदंत मार्तंड के प्रारम्भ से लेकर हिंदी पत्रकारिता की हुई शुरुआत को समकालीन परिप्रेक्ष में विद्यार्थियों के सम्मुख रखा गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. हेमा प्रसाद द्वारा की गई।

सत्रः 2023-24

विभाग द्वारा दिनांक 31 जुलाई 2023 को हिंदी के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के जन्म दिवस पर एक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया, उपर्युक्त कार्यक्रम में अतिथि व्याख्याता के रूप में डॉ. हेमचंद दुबे विभागाध्यक्ष- हिंदी, बागेश्वर महाविद्यालय तथा डॉ. शिव प्रकाश त्रिपाठी, सहा. प्रा. हिंदी, बुंदेलखंड महाविद्यालय झांसी, उत्तर प्रदेश उपस्थित रहे । दोनों विद्वान व्याख्याताओं द्वारा विद्यार्थियों को प्रेमचंद के साहित्य का कथा, उपन्यास एवं निबंध के माध्यम से तथा हंस पत्रिका में प्रेमचंद के योगदान को देखते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

दिनांक 14 सितंबर 2024 को विभाग द्वारा हिंदी दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया इस अवसर पर निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 31 जुलाई 2024 को विभाग द्वारा मुंशी प्रेमचंद के जन्मदिवस के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवनीन्द्र कुमार जोशी की अध्यक्षता में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन अल्मोड़ा के साथ मिलकर एक विस्तृत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियो के मध्य प्रेमचद की कहानी नमक का दरोगा का पाठ महाविद्यालय की छात्रा बबीता आर्य द्वारा किया गया।

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन अल्मोड़ा द्वारा इस अवसर पर प्रेमचंद के साहित्य में उद्धृत विशिष्ट कथन पोस्टर के माध्यम से विद्यार्थियों के मध्य रख चर्चा और परिचर्चा कराई गई, तदुपरान्त एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रेमचंद जीवन एवं रचना साहित्य विषय पर आयोजित की गई, जिसमें बबीता आर्या प्रथम, लक्षिता लोहनी द्वितीय और पूजा बिष्ट तृतीय स्थान पर रहे। 14 सितंबर सन 2024 को विभाग द्वारा हिंदी दिवस माननीय प्राचार्य प्रोफेसर अवनीद्र कुमार जोशी की अध्यक्षता में मनाया गया। उपर्युक्त कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक डॉ. विपिन चंद्र द्वारा हिंदी भाषा के उद्‌भव और विकास पर एक विस्तृत व्याख्यान विद्यार्थियों के मध्य प्रस्तुत किया गया।

इतिहास विभाग

सत्र: 2022-23

सत्रारम्भ में विभागीय परिषद का गठन किया गया। विभाग प्रभारी तथा विभागीय परिषद के सदस्यों ने मिलकर प्राचार्य जी के निर्देशन में इतिहास विभाग में विभिन्न कार्यक्रम तथा प्रतियोगिताएं आयोजित करवायी गयी। जिसमें सर्वप्रथम "मतदाता दिवस" के अवसर पर निबन्ध तथा पोस्टर प्रतियोगिता करवायी गई तथा क्षेत्र के मतदाताओं को मत देने हेतु जागरूक किया गया। उत्तराखण्ड की संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु "उत्तराखण्ड का इतिहास तथा संस्कृति" के विषय में संगोष्ठी आयोजित की गयी। छात्रों में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने हेतु "कारगिल दिवस" पर शहीद अमर जवानों को श्रृद्धा सुमन अर्पित कर महाविद्यालय में बृहद वृक्षारोपण कार्य किया गया।

सत्र: 2023-24- सत्रारम्भ में विभागीय परिषद का गठन किया गया। बालिका दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं को बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने तथा आत्मनिर्भर बनने हेतु "ज्योतिबा फुले" पर लघु फिल्म दिखाई गयी। भारतीय इतिहास विषय पर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु महाविद्यालय परिसर में बृहद वृक्षारोपण कार्य किया गया साथ ही आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत तिरंगा शपथ लेकर "हर घर तिरंगा" लगाने का संकल्प लेकर छात्र-छात्राओं ने हाथ में तिरंगा लेकर महाविद्यालय से तिरंगा रैली निकाली।

भूगोल विभाग

सत्र: 2022-23

सत्रारम्भ में विभागीय भूगोल परिषद का गठन किया गया। विभाग प्रभारी तथा विभागीय परिषद के अध्यक्ष दीपक नाथ गोस्वामी तथा सदस्यों ने मिलकर प्राचार्य जी के निर्देशन में भूगोल विभाग में विभिन्न कार्यक्रम तथा प्रतियोगिताएं आयोजित करवायी। जिसमें सर्वप्रथम "योगा दिवस" के अवसर पर '**करो योग रहो निरोग**' थीम पर

योगा करवाया गया। उत्तराखण्ड में स्वच्छ पर्यावरण को बढ़ावा देने हेतु 'पर्यावरण संरक्षण' के विषय में संगोष्ठी आयोजित की गयी। छात्रों में प्रकृति प्रेम की भावना विकसित करने हेतु "हिमालय दिवस" पर हिमालय प्रतिज्ञा करवायी गयी तथा महाविद्यालय में बृहद वृक्षारोपण कार्य किया गया।

सत्र 2023-24- सत्रारम्भ में विभागीय परिषद भूगोल का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष कु0 प्रिया वर्मा, सचिव कु0 मीना बोरा, कोषाध्यक्ष कु0 काजल बोरा द्वारा भूगोल विभाग में विभिन्न गतिविधियां करवायी गयी। बी0ए0 पंचम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं द्वारा भू-सर्वेक्षण करने हेतु चौड़ा गाँव की आर्थिक तथा सामाजिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। भूगोल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु महाविद्यालय परिसर में बृहद वृक्षारोपण कार्य किया गया। साथ ही आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत अमृत वाटिका का निर्माण किया गया। सत्रान्त में षष्ठम् सेमेस्टर के छात्र छात्राओं की रंगारंग कार्यक्रम के साथ विदाई समारोह आयोजित किया गया। जिसमें प्राचार्य महोदय द्वारा सभी छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना कर सबको अपना आशीर्वाद प्रदान किया गया।

संस्कृत विभाग

सत्र : 2023-24

हुकुम सिंह बोरा, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर,अल्मोड़ा, की स्थापना 2006 में हुई। यह महाविद्यालय सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा से सम्बद्ध है। यह महाविद्यालय अल्मोड़ा मुख्यालय से 35 किमी0 दूरी पर कोसी नदी के तट पर स्थित है। यहाँ विभिन्न विभागों में से एक संस्कृत विभाग भी है। संस्कृत विभाग की शुरुआत सत्र-2023-24 में एक पद सृजन के साथ हुई। इस 2023-24 सत्र में संस्कृत षिय बी0ए0 प्रथम सेमेस्टर में 03 छात्राओं ने प्रवेश लिया था। अगले सत्र-2024-25 में बी0ए0 प्रथम सेमेस्टर संस्कृत विषय में 04 छात्राओ ने प्रवेश लिया। तत्पश्चात् दिनाक-22/7/2024 को रा0स्ना0 महा0 बागेश्वर से स्थानान्तरित होकर श्री महेश चन्द्र असि0प्रो0 (संस्कृत) की इस महाविद्यालय में नियुक्ति हुई। इस समय संस्कृत विषय में विद्यार्थियों की संख्या न्यून है, लेकिन आशा करते हैं कि आगामी सत्रों में अधिक संख्या में प्रवेश होंगे। इसी आशा के साथ-

मनोविज्ञान विभाग

सत्र : 2023-24

मनोविज्ञान विभाग द्वारा मतदान मेरा अधिकार विषय पर दिनांक 30 दिसम्बर 2023 को एक पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें मनोविज्ञान के समस्त विद्यार्थियों द्वारा बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग किया गया।

प्रतियोगिता में निम्न विद्यार्थी विजयी रहे-

प्रथम- खुशी भाकुनी, द्वितीय- पिंकी आर्या

तृतीय- सौरभ कुमार

उक्त प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में निम्न प्राध्यापकों का सराहनीय योगदान रहा -

डॉ. लोतिका अमित, डॉ. जगदीश प्रसाद , डॉ. विवेक कुमार आर्य।

अभिभावक शिक्षक संघ- हकुम सिंह बोरा रा.स्ना, महा. सोमेश्वर दिनांक 24 जुलाई 2024 को अभिभावक शिक्षक संघ की एक बैठक आयोजित हुई जिसमें सोमेश्वर क्षेत्र के विभिन्न ग्राम सभाओं के ग्राम प्रधान एवं अभिभावक सम्मिलित हुए। उक्त बैठक में महाविद्यालय एवं विद्यार्थियों के विकास से सम्बन्धित विषयों पर विचार विमर्श किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवनीन्द्र कुमार

जोशी जी के स्वागत सम्बोधन के साथ हुआ। उन्होंने अभिभावकों से महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास के लिए नये सुझाव आमंत्रित किये तथा महाविद्यालय तक सुगम आवागमन हेतु सड़क निर्माण में भी सहयोग देने का आह्वान किया। गोष्ठी को संबोधित करते हुए ग्राम प्रधान संगठन के अध्यक्ष श्री रणजीत नयाल ने विद्यालय में पर्वतीय सड़क अनुसंधान संस्थान की स्थापना का सुझाव दिया जिससे कि इस क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि से सड़क निर्माण, सड़क चौड़ीकरण व टनल निर्माण कर पर्यटन की संभावनाओं को बढ़ाया जा सके। इस कार्यक्रम में उपस्थित श्री कैलाश बोरा श्री विनोद बोरा, श्री भूपेन्द्र भण्डारी, श्री किशोर नयाल छात्रसंघ अध्यक्ष श्री चंदन सिंह मेहरा, श्री कैलाश जोशी तथा डॉ. सी.पी. वर्मा द्वारा भी महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. लोतिका अमित, डॉ. जगदीश प्रसाद, डॉ. राकेश पाण्डे, डॉ. विपिन चन्द्र, डॉ. विवेक आर्या के अतिरिक्त विभिन्न गाँवों के ग्राम प्रधानों की उपस्थिति रही जिनमें श्रीमती चम्पा देवी, बबीता पाण्डे, कविता राणा, सरिता दुम्का, जगत राम आर्या, रमेश सिंह भाकुनी, आनन्द कुमार, गिरीश आर्या, दीपा गोस्वामी, सुरेन्द्र सिंह रावत, कविता आर्या, गीता देवी, तथा कविता देवी आदि मुख्य थे। कार्यक्रम का संचालन अभिभावक शिक्षक संघ की संयोजक प्रो. कमला डी. भारद्वाज द्वारा किया गया।

युवा संसद -8 अगस्त 2024- हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर में 8 अगस्त 2024 को संसदीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार की महत्वपूर्ण प्रतियोगिता राष्ट्रीय युवा संसद-2024 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवनींद्र कुमार जोशी द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पुष्पेश पांडे, प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत, श्री किशन सिंह बोरा पुत्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुकुम सिंह बोरा, सोमेश्वर तथा क्षेत्र के ग्राम प्रधान संगठन के अध्यक्ष रंजीत बोरा के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन कर रही हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. अमिता प्रकाश द्वारा महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.जगदीश प्रसाद, डॉ. चंद्र प्रकाश वर्मा, डॉ. राकेश पांडे, डॉ. शालिनी थापा, डॉ. विवेक कुमार आर्या के माध्यम से मंचस्थ अतिथियों का स्वागत सत्कार बैच अलंकरण और पुष्प गुच्छ प्रदत्त कर किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम की संयोजक प्रो. कमला धौलाखंडी भारद्वाज द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य, उपयोगिता और संक्षिप्त रूपरेखा को सभी आगंतुकों के मध्य रखा गया। इस संपूर्ण कार्यक्रम में विगत कई दिनों से अपनी अथक मेहनत से विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दे रहे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रमोद कुमार राजनीति शास्त्र की गरिमामयी उपस्थित भी बनी रही। तत्पश्चात महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अपने-अपने राजनीतिक उम्मीदवारों के किरदार को कृत्रिम रूप से बनाई गई महाविद्यालय सभागार की संसद में बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया गया। लोकसभा अध्यक्ष के पद पर स्नातक पंचम सत्रार्ध के छात्र सौरव कुमार, नेता प्रतिपक्ष में रूपाली रावत तथा रक्षा मंत्री के रूप में सुष्मिता तथा अन्य विविध प्रभार महाविद्यालय के विद्यार्थी उमा कैड़ा, श्रद्धा कैड़ा, पूजा बोरा आदि द्वारा संभाले गए।

माननीय अध्यक्ष महोदय की गरिमाय उपस्थिति में विपक्ष द्वारा वर्तमान सरकार के विविध मंत्रियों पर विविध

प्रश्नों की बौछार की गई । प्रतिपक्ष द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन, विगत कुछ समय से प्रतियोगी परीक्षाओं में सरकार द्वारा अपनी खत्म होती साख, रक्षा, खेल तथा अन्य विविधि मुद्दों को छात्र संसद में उठाया गया। सत्ता पक्ष द्वारा भी अपने विविध मंत्रिमंडल के माध्यम से अध्यक्ष महोदय की अनुमति के साथ नेता प्रतिपक्ष की मौजूदगी में समस्त सवालों का यथासंभव उचित जवाब देने का प्रयास किया गया।
संपूर्ण कार्यक्रम में जिला नोडल अधिकारी तथा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रानीखेत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर पुष्पेश पांडे द्वारा विद्यार्थियों के प्रयास की खूब सराहना की गई। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित किशन सिंह बोरा द्वारा महाविद्यालय के इस प्रयास को सराहनीय एवं विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन बताया गया। सोमेश्वर क्षेत्र से ग्राम प्रधान संगठन के अध्यक्ष रंजीत नयाल द्वारा विद्यार्थियों को संपूर्ण कार्यक्रम हेतु हृदय की गहराइयों से हार्दिक आभार प्रेषित किया गया।

तत्पश्चात समस्त गणमान्य अतिथियों को महाविद्यालय के प्राचार्य एवं प्राध्यापकों द्वारा एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवनींद्र कुमार जोशी द्वारा इस कार्यक्रम की संयोजक प्रो. कमला धौलाखंडी को हार्दिक बधाई दी गई। उन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों द्वारा कम समय में किए गए इस प्रयास को महाविद्यालय सदैव याद रखेगा। इस तरह के कार्यक्रम विद्यार्थियों के जीवन में न केवल अभी बल्कि आगे भी सदैव अविस्मरणीय रहते हैं। सरकार द्वारा इस तरीके के मंच प्रदान कर आज के युवाओं को न केवल पढ़ाई, खेल तथा अन्य विधाओं में आगे रखा जा रहा है, बल्कि उन्हें आगे भविष्य के लिए एक श्रेष्ठ भारतीय नागरिक तथा राजनीतिज्ञ के रूप में उभरने का अवसर भी प्रदान किया जा रहा है। मंच संचालन डॉ अमिता प्रकाश द्वारा किया गया।

शिक्षाशास्त्र विभाग

सत्र : 2022-23

शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा सत्र 2022-23 में विभिन्न विभागीय गतिविधियां आयोजित की गई हैं। आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभागीय परिषद का गठन किया गया जिसके तहत छात्रों द्वारा विभागीय परिषद के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव का निर्वाचन किया गया। अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शिक्षाशास्त्र एवं अर्थशास्त्र विभाग द्वारा संयुक्त रूप से महिला पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत 14 दिनों तक महिला जागरूकता से सम्बंधित अनेक कार्यक्रम जैसे- भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, महिलाओं की समस्यायें, पर्वतीय क्षेत्रों

में महिलाओं की समस्याओं पर विमर्श, छात्र-छात्राओं द्वारा अपने जीवन अनुभव व समस्यायें साझा करना इत्यादि आयोजित किए गए। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं को जीवन में व शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर चर्चा की गई। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 17 से 21 जून 2023 तक योग सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें प्रत्येक दिन अपने घर व पास-पड़ोस के लोगों के साथ छात्र-छात्राओं ने योग आसनों का अभ्यास किया गया व इस प्रकार आम जन को योग के प्रति जागरूक किया।

विभागीय गतिविधियों में विजेता छात्र-छात्राएं

विभागीय परिषद् का गठन

अध्यक्ष - अंकित (बी.ए. पंचम सेमेस्टर)
उपाध्यक्ष - ज्योति राणा (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)
सचिव - भावना बोरा (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

आजादी का अमृत महोत्सव भाषण प्रतियोगिता- 13 जुलाई 2022

प्रथम- ज्योति राणा (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)
द्वितीय - आशा राणा (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)
तृतीय - मीनाक्षी नयाल (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (भाषण प्रतियोगिता- महिलाओं की समस्याओं पर विमर्श)

प्रथम - सुष्मिता (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)
द्वितीय - करिष्मा नेगी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)
तृतीय - उर्मिला (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (निबंध प्रतियोगिता- पर्वतीय क्षेत्रों में महिलाओं की समस्यायें व निराकरण हेतु सुझाव)

प्रथम- रेनू गोस्वामी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)
द्वितीय- मिनाक्षी जोशी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस -अप्रैल 2023 से शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र विभाग द्वारा संयुक्त रूप से मासिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन प्रारंभ किया गया है। यह प्रतियोगिता प्रत्येक मास के अंतिम कार्य दिवस पर आयोजित की जाती है व दिसंबर माह के अंतिम कार्य दिवस पर पूरे वर्ष की प्रतियोगिताओं पर आधारित फाइनल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

विभागीय गतिविधियों में विजेता छात्र-छात्राएं

अप्रैल 2023

प्रथम- विजय कुमार (बी.ए. प्रथम सत्र)
द्वितीय- उर्मिला आर्या (बी.ए. प्रथम सत्र)
तृतीय- रुपाली रावत (बी.ए.पंचम सत्र)
व ममता आर्या (बी.ए. प्रथम सत्र)

मई 2023

प्रथम- विजय कुमार (बी.ए. प्रथम सत्र)
द्वितीय- उर्मिला आर्या (बी.ए. प्रथम सत्र)
तृतीय- रुपाली रावत (बी.ए.पंचम सत्र)
व ममता आर्या (बी.ए. प्रथम सत्र)

जून 2023

प्रथम- शंकर जलाल (बी.ए. षष्ठम् सत्र)
द्वितीय- उर्मिला आर्या (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर)
तृतीय- श्रद्धा कैड़ा (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर)

जुलाई 2023

प्रथम- सुष्मिता (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर)
द्वितीय- रेखा भैंसोडा
तृतीय- शंकर जलाल (बी.ए. षष्ठम् सेमेस्टर)

अगस्त 2023

प्रथम- अंजलि रानी
द्वितीय- दीक्षा आर्या
तृतीय- पूजा बिष्ट

अक्टूबर 2023

प्रथम- शंकर जलाल (बी.ए. षष्टम् सेमेस्टर)
द्वितीय- उर्मिला आर्या (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर)
तृतीय- रुपाली रावत (बी.ए. षष्टम सेमेस्टर)

दिसम्बर 2023

प्रथम- रुपाली रावत (बी.ए. षष्टम सेमेस्टर)
द्वितीय- अंजलि रानी
तृतीय- पूजा बिष्ट (बी.ए. पंचम सत्र)

फरवरी 2024

प्रथम- रुपाली रावत (बी.ए. षष्टम सेमेस्टर)
द्वितीय- पूजा बिष्ट (बी.ए. पंचम सत्र)
तृतीया- उमा कैड़ा (बी.ए. पंचम सत्र)

अप्रैल 2024

प्रथम- रुपाली रावत (बी.ए. षष्टम सेमेस्टर)

द्वितीय- श्रद्धा कैड़ा (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर), पूजा बिष्ट
तृतीय- कंचन जोशी

विभागीय गतिविधियाँ सत्र (2023-24)

विभागीय परिषद् का गठन किया गया जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए-

अध्यक्ष- अंकित (बी.ए. पंचम सेमेस्टर)
उपाध्यक्ष - ज्योति राणा (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)
सचिव - भावना बोरा (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

शिक्षा व समाज विषय पर विचार विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों द्वारा शिक्षा व समाज आपस में किस प्रकार सम्बंधित हैं इस पर अपने विचार प्रस्तुत किये हरेला पर्व के अवसर पर वृक्षारोपण किया गया। छात्रों ने परिसर में बुरांश, बाज, काफल व अन्य फलों के वृक्ष लगाये।

समाजशास्त्र विभाग

(शैक्षणिक सत्र 2022-23)

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर के समाजशास्त्र विभाग द्वारा शैक्षणिक सत्र 2022-23 में विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया।

इस क्रम में समाजशास्त्र विभाग द्वारा महाविद्यालय के अन्य विभागों के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें अंजलि बोरा, नेहा कश्यप तथा पूजा गोस्वामी द्वारा गुरु की महिमा को एक सुंदर गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। अन्य छात्राएं ज्योति राणा एवं दीक्षा जोशी ने देश व समाज के विकास में शिक्षकों के योगदान एवं अध्यापन पेशे की महानता को उल्लेखित करने हेतु पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन परिचय, विचारों एवं उनके कार्यो के संदर्भ में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

छात्र-छात्राओं की सर्वसम्मति से 7 जनवरी 2023 को विभागीय परिषद का गठन किया गया जिसमें दीक्षा जोशी, प्रेम प्रकाश एवं गायत्री को क्रमश: अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव के पद पर चयनित किया गया साथ ही प्रौद्योगिकी दिवस पर विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों द्वारा दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान समय में विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के प्रभाव आदि के बारे में जानकारी दी गई। उत्तराखंड के प्रसिद्ध लोक पर्व ''हरेला'' के अवसर पर विभाग द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रों द्वारा महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.ए.के. जोशी ने छात्र- छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण में वृक्षारोपण के महत्व की जानकारी देते हुए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने हेतु प्रेरित किया गया।

छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु तैयार करने एवं उन्हें स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अद्यतन जानकारी प्रदान करने हेतु शिक्षा शास्त्र एवं अर्थशास्त्र विभाग के साथ मिलकर शैक्षणिक सत्र 2022-23 के प्रत्येक माह सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा पुरस्कृत किया गया ताकि छात्रों को प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने हेतु प्रेरित किया जा सके और आगे चलकर वे प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता का परचम लहरा सकें।

प्रतियोगिता में सभी संकायों के छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर कार्यक्रम में डॉ. कमला धौलाखंडी, डॉ. सी.पी. वर्मा, डॉ. अमिता प्रकाश, डॉ. सुनीता जोशी, डॉ. भावना, डॉ. नीता टम्टा, डॉ. विपिन, डॉ. पुष्पा भट्ट आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

सत्र 2023-24

छात्रों में सार्वजनिक भाषण कौशल को बेहतर बनाने के उद्देश्य से, विभाग द्वारा ''संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार'' शीर्षक से वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने परिवार की महत्ता एवं उसके बदलते स्वरुप के सम्बन्ध में अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत किया। अधिकांश छात्रों ने संयुक्त परिवार के पक्ष पर अपने विचार रखें। प्रतियोगिता में प्रियंका नेगी ने प्रथम, गायत्री द्वितीय तथा प्रियंका जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने जहां एक ओर समाज में अंधविश्वास, रूढ़िवादिता एवं भाग्यवादिता को कम किया है शिक्षा के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया है, वहीं दूसरी ओर भौतिकता एवं व्यक्तिवादिता बढ़ी है। नैतिक मूल्य विलुप्त होने के कगार में है। इस संदर्भ में छात्रों को उचित मार्गदर्शन एवं नैतिक मूल्यों से परिचित कराए जाने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा ''आधुनिकीकरण का सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव'' शीर्षक से भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें छात्र हिमानी बोरा ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया

8 मार्च 2024 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ''भारत में महिला सशक्तिकरण'' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें छात्रों ने भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता तथा इस संदर्भ में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों को अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया। योग प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योगाभ्यास से मानव जीवन सुखद एवं शरीर स्वस्थ रहता है। छात्रों के माध्यम से समाज के लोगों को योग के प्रति जागरूक करने हेतु 21 जून 2024 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे महिमा बिष्ट ने प्रथम एवं पूजा बिष्ट ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 8 मार्च 2024 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ''भारत में महिला सशक्तिकरण'' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें छात्रों ने भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता तथा इस संदर्भ में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों को अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया। योग प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योगाभ्यास से मानव जीवन सुखद एवं शरीर स्वस्थ रहता है। छात्रों के माध्यम से समाज के लोगों को योग के प्रति जागरूक करने हेतु 21 जून 2024 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे महिमा बिष्ट ने प्रथम एवं पूजा बिष्ट ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

पूर्व की भांति शैक्षणिक सत्र 2023-24 में भी प्रत्येक माह सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को प्राचार्य द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया साथ ही छात्रों को प्रतियोगिता में अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग करने हेतु प्रोत्साहित भी किया गया। विभाग द्वारा जल संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु महाविद्यालय के अन्य विभागों के संयुक्त तत्वाधान में पौधारोपण कार्यक्रम किया गया जिसमें नव प्रवेशित विद्यार्थियों के साथ मिलकर चौड़ी पत्ती वाले पौधों का रोपण किया गया।

अर्थशास्त्र विभाग

सत्र : 2022-23

हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में अर्थशास्त्र विभाग द्वारा सत्र 2022-23 में अनेक शिक्षक सहगामी कार्यक्रमों का संचालन किया गया। जिसके अंतर्गत 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर संस्थान के अन्य विभागों के साथ संयुक्त रूप से छात्रों द्वारा वंदना, गीत व डॉ. राधा कृष्णन जी के जीवन से जुड़ी घटनाओं पर प्रकाश डाला गया। 1 अक्टूबर को विभाग द्वारा गांधी जी की जयंती के अवसर पर उनके जीवन से संबंधित घटनाओं पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है जिसमें अभय कनवाल प्रथम, आशा द्वितीय व चंदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 20 अक्टूबर को विभागीय परिषद का गठन किया गया।

जिसमें छात्रों द्वारा रूपाली रावत को अध्यक्ष, कुलदीप सिंह को सचिव व सौरभ कुमार आर्य को कोषाध्यक्ष चुना गया। 25 जनवरी 2023 को विभाग द्वारा राष्ट्रीय मतदान दिवस के अवसर पर भाषण, कविता लेखन, पोस्टर, निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 5 फरवरी को विभाग द्वारा बजट परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मार्च माह में 13 से 26 मार्च तक महिला सशक्तिकरण पखवाड़े का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत विभागों द्वारा संयुक्त रूप से महिलाओं की समस्याओं पर गोष्ठी, पर्वतीय क्षेत्र में महिलाओं की समस्याओं व निराकरण हेतु

सुझाव विषय पर निबंध प्रतियोगिता आदि कार्यक्रमों का संचालन किया गया। 29 मार्च को विभाग द्वारा जी-20 पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कमल पांडे प्रथम, हिमांशु बिष्ट द्वितीय व प्रियंका जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 11 अप्रैल को अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं शिक्षा शास्त्र विभाग द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन किया गया। 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से स्लोगन एवं पोस्ट प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें शंकर सिंह जलाल प्रथम, चेतन द्वितीय व रितु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 30 जून को अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से प्रोफेसर प्रशांत चंद्र महालनोबिस की स्मृति में राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस का आयोजन किया गया।

सत्र : 2023-24

इसी प्रकार से सन् 2023-24 में भी अर्थशास्त्र विभाग द्वारा नियमित कक्षाओं के संचालन के साथ ही

अनेक पाठ्य सहगामी क्रियाओं का भी आयोजन किया गया जैसे- वृक्षारोपण, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता, गांधी जयंती पर गांधी जी के जीवन से संबंधित घटनाओं पर भाषण प्रतियोगिता, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, शिक्षक दिवस, बजट परिचर्चा, राष्ट्रीय महिला दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, सांख्यिकी दिवस के अवसर पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

उपरोक्त वर्णित समस्त कार्यक्रमों में विद्यार्थियों द्वारा उत्साह पूर्वक प्रतिभाग किया गया। साथ ही कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक संचालन के लिए प्राचार्य प्रोफेसर अवनीन्द्र कुमार जोशी जी व अन्य शिक्षक साथियों से भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

गृह विज्ञान विभाग

सत्र : 2023-24

गृह विज्ञान विभाग वर्ष 2023 से प्रारंभ हुआ। इस वर्ष इस विभाग में 9 छात्राओं ने प्रवेश लिया। इस सत्र में विभाग में गृह विज्ञान परिषद का निर्माण हुआ जिसमें कुमारी नन्दी अध्यक्ष रही, कुमारी अनीता आर्य सचिव और कुमारी रिंकी आर्य को सदस्य बनाया गया। इस सत्र के दौरान गृह विज्ञान विभाग का संचालन डॉ. लोतिका अमित द्वारा किया गया। वर्तमान में नवनियुक्त प्राध्यापिका डॉ. हर्षा रावत ने कार्यभार ग्रहण किया है। आशा है विभाग निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसारित होगा।

Department of English

Introduction:

The Department of English is pleased to present its annual report for the academic year [2021-22], [2022-23] and [2023-24]. Throughout these years, the department has remained committed to its mission of fostering a deep appreciation for literature, enhancing students' language proficiency, and

department has also formed Student Council in every session.

Faculty Achievements:

Our dedicated faculty members have made significant contributions to scholarship, research, and teaching. Mr. Neeraj Singh Pangtey delivered an enlightening guest lecture at Graphic Era Hill University, Haldwani, providing valuable insights and practical skills to aspiring media professionals (Mass Communication).

Faculty members also participated in outreach programs to nearby schools and institutions, demonstrating our commitment to community engagement and service.

Notably, Miss Himadri visited Government Intermediate College (GIC) Mansari Nala and Chora to conduct a session on "Community Mobilization." Her expertise and insights contributed to fostering community engagement and promoting social responsibility among the students.

Mr. Neeraj participated in a career counselling session at Government Intermediate College (GIC) Salonj, guiding students towards informed career choices and opportunities.

Student Engagement and Achievements:

Throughout the year, students actively participated in various departmental activities, including literary discussions, writing workshops, poetry recitation, and academic competitions. We are proud to announce that one student pursuing MA in English, Deepak Nath Goswami, was awarded the Chief Minister's Scholarship for meritorious students for outstanding academic achievements.

Departmental Events and Initiatives:

The Department of English organized several events and initiatives aimed at enriching students' learning experiences and promoting literary and cultural awareness.

On June 5, 2022, **World Environment Day** was celebrated. The students brought crafts and models on environment conservation. In continuation of Azadi ka Amrit Mahotsav Celebration, the department organized a poster competition on July 14, 2022. The students participated in it with great enthusiasm. On November 2, 2022, an **Aipan Art Competition** was organised by the department. Kalpana Rana, Nisha Pandey and Rekha Bora secured first, second and third position respectively. On November 26, 2022 Department of English commemorated Constitution Day by organizing a S**peech Competition on the topic "Constitutional Values and Fundamental**

Principles of Indian Constitution". Students avidly participated in the activity and Shraddha, Anjali and Gayatri secured first, second and Third position respectively.

A wall magazine with the title "**Magpie Magazine**" was initiated, with Ms. Shradhha serving as its editor, providing a creative platform for students to express themselves through articles, artwork, and literary contributions. Additionally, Monal Mentorship Program for postgraduate students was launched, facilitating mentorship opportunities and academic guidance. Throughout the year, various literary and cultural days have been celebrated. Furthermore, the department organized events such as debates, elocutions, and poster-making competitions, providing students with opportunities to showcase their talent and foster intellectual discourse.

Enhancement of Language Lab:

The Department of English is pleased to announce the enhancement of our Language Lab facilities. While our Language Lab has been an integral part of our teaching methodology, we are now leveraging advanced language lab software and audio-visual equipment to provide an immersive and interactive learning experience for our students. The newly upgraded lab, named Barbet Language Lab, is equipped with state-of-the-art audio-visual and computer systems to facilitate language learning through interactive exercises, multimedia content, and real-time feedback mechanisms. This advanced technology will enable students to improve their language proficiency, communication skills, and pronunciation through personalized learning modules and interactive activities.

Future Directions:

Looking ahead, the Department remains dedicated to excellence in teaching, research, and community service. We are committed to continuously enhancing our academic programs, leveraging technology to enrich the learning experience, and providing students with diverse opportunities for intellectual growth and personal development.

In conclusion, the Department has had productive and successful sessions, thanks to the collective efforts of our faculty, staff, and students. As we reflect on our achievements and challenges, we are excited about the opportunities that lie ahead and remain steadfast in our commitment to advancing the study and appreciation of English language and literature.

Thank you to everyone who has contributed to the success of the English Department in 2023-2024.

वाणिज्य संकाय

सत्र : 2022-23

वाणिज्य संकाय विद्यार्थियों के सर्वोन्मुखी विकास के लिए सतत प्रयासशील रहता है। पठन-पाठन के अतिरिक्त समय-समय पर विभाग विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता रहता है। आजादी के अमृत महोत्सव को मनाते हुए विभाग ने 14/7/2022 को वाद-विवाद प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

वाणिज्य विभाग की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एवं स्वतंत्रता प्राप्ति विषय पर आधारित एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 2/8/2022 को किया गया। प्रतियोगिता में पंजीकृत 110 विद्यार्थियों में से 59 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया जिसमें पांच विद्यार्थियों का चयन पुरस्कार के लिए किया गया। प्रतियोगिता में बी.कॉम. षष्ठ सत्रार्ध के सूरज बोरा ने कुल 50 प्रश्नों में से 37 प्रश्नों के सही उत्तर देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया, एम.ए. चतुर्थ सत्रार्ध की ललिता नेगी, बी.कॉम. षष्ठ सत्रार्ध की आरती पांडे , बीकॉम षष्ठ सत्रार्ध के अब्दुल समीर ने 36 प्रश्नों के सही उत्तर देकर संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान एवं बी.ए. चतुर्थ सत्रार्ध की रूपाली रावत ने 34 प्रश्नों के सही उत्तर देकर

प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शालिनी टम्टा एवं डॉ. विवेक कुमार ने किया।

5 सितंबर 2022 को विभाग द्वारा शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया गया। देश की प्रथम उपराष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में मनाए जाने वाले इस दिवस का शुभारंभ उनके चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। प्रभारी प्राचार्य डॉ. जगदीश प्रसाद ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। डॉ. शालिनी टम्टा एवं डॉ. विवेक कुमार आर्या ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को रेखांकित किया।

दिनांक 26/11/2022 को संविधान दिवस के अवसर पर विभाग के डॉ. विवेक कुमार आर्य एवं डॉ. शालिनी टम्टा के नेतृत्व में एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कला-स्नातक तृतीय सत्रार्ध के कुलदीप सिंह ने प्रथम, कला-स्नातक प्रथम सत्रार्ध के विजय कुमार ने द्वितीय एवं बी.कॉम. फर्स्ट सेमेस्टर के बलवंत सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंत में वाणिज्य विभाग ने संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सच्चिदानंद सिन्हा एवं बी.एन. राव आदि के योगदान को भी याद किया। महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

इसी क्रम में विभाग की ओर से राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर 12/1/2023 को अपनी स्वविकसित विभागीय वेबसाइट को लॉन्च करने के साथ-साथ प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए 'डॉ. बी.आर. अंबेडकर वाणिज्य विभाग क्षमता निर्माण केंद्र' का शुभारंभ किया गया वेबसाइट एवं केंद्र का उद्घाटन प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. हेमा प्रसाद द्वारा किया गया। उन्होंने वाणिज्य विभाग के डॉ. विवेक कुमार आर्य एवं शालिनी टम्टा के प्रयासों की सराहना करते हुए विद्यार्थियों को वेबसाइट एवं केंद्र के माध्यम से अधिकत लाभोपार्जन का आवाह्न किया। कार्यक्रम के दौरान विभाग के मेधावी छात्र नीरज जोशी को बी.कॉम. चतुर्थ सेमेस्टर में एवं छात्र रश्मि गोस्वामी को बी.कॉम. सेकंड सेमेस्टर में सर्वाधिक अंक लाने पर मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

27 फरवरी 2023 को एक वित्तीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन विभाग द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस वर्ष फरवरी माह में मनाए गए वित्तीय साक्षरता सप्ताह हेतु चयनित विषय ''सही वित्तीय

बर्ताव करे आपका बचाव'' पर आधारित था। वर्ष 2016 से भारतीय रिजर्व बैंक प्रतिवर्ष वित्तीय साक्षरता सप्ताह मानता आ रहा है इसी क्रम में वाणिज्य विभाग द्वारा वित्तीय जागरूकता हेतु दो सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में वाणिज्य विभाग के प्राध्यापक डॉ. विवेक कुमार आर्य ने बचत निवेश आयोजन एवं डिजिटल वित्तीय सेवाओं के विवेक पूर्ण उपयोग के बारे में व्याख्यान दिया, वहीं दूसरे सत्र में वाणिज्य विभाग की प्राध्यापक डॉ. शालिनी टम्टा ने प्रतिभागियों को वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री जनधन योजना, जीवनज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, मुद्रा योजना एवं स्टैंड-अप योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर अर्थशास्त्र विभाग की डॉ. नीता टम्टा ने ''सुरक्षित भविष्य हेतु बचत के महत्व'' पर प्रकाश डाला कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. हेमा प्रसाद ने की।

विभाग द्वारा 20 मार्च 2023 से 26 मार्च 2023 तक एक सात दिवसीय डिजिटल पेमेंट अवेयरनेस सप्ताह आयोजित किया गया। यह जागरूकता कार्यक्रम जी -20 तथा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के हर पेमेंट डिजिटल मिशन के तहत आयोजित किया गया। 5 जून 2023 को विभाग ने पौधारोपण कर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। 30 जून 2023 राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस वाणिज्य संकाय द्वारा पर अर्थशास्त्र विभाग के साथ मिलकर ''सतत विकास लक्ष्य'' विषय पर एक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया।

सत्र : 2023-24

स्थानीय पर्वो को महत्व देते हुए और भावी नागरिकों में सहनीय संस्कृति और उससे जुड़े संदेशों को पहुँचने के लिए वाणिज्य संकाय समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित करता रहता है इसी उद्देश्य से हरेला पर्व और धान रोपाई महोत्सव के अवसर पर 14/7/2023 को मोबाईल फोटो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 15 सितंबर 2023 को विभाग ने देश द्वारा जी - 20 सम्मेलन की सफल अध्यक्षता किए जाने के उपलक्ष्य में एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया। भारत सरकार एवं उत्तराखंड शासन के संयुक्त कार्यक्रम 'देवभूमी उद्यमिता योजना' के तहत 7-8 दिसंबर 2023 को दो दिवसीय उद्यमिता बूट शिविर का सफल आयोजन किया गया जिसमें कुल 250 छात्रों की सक्रिय भागीदारी रही।

भारत सरकार एवं उत्तराखंड शासन के तत्वाधान में 5/3/2024 से 19/3/2024 तक एक 12 दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यक्रम का सफल आयोजन भी विभाग द्वारा किया गया।

उपलब्धियां-

1- छात्रों, व्यापारियों एवं स्थानीय समुदाय के बीच डिजिटल भुगतान जागरुकता फैलाने के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया हल्द्वानी, नैनीताल से प्रशंसा-पत्र प्राप्त।

2- 5/11/2023 से 10/11/2.023 तक देवभूमि उद्यमिता योजना' के तहत ईडीआईआई अहमदाबाद में 6 दिवसीय फैकल्टी मेंटरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम में कॉलेज का प्रतिनिधित्व।

3- पं. बी.डी. पांडे कैम्पस बागेश्वर, में 6 दिसंबर 2023 को उद्यमिता बूट कैंप में रिसोर्स पर्सन के रूप में प्रतिभागिता। 4- 22 दिसंबर 2023 को एल एस एम कैम्पस पिथौरागढ़ में आयोजित उद्यमिता बूट कैम्प में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभागिता।

गणित विभाग

विज्ञान संकाय के अंतर्गत गणित विभाग सन् 2018 में 6 विद्यार्थियों के साथ आरंभ हुआ था वर्तमान में गणित विभाग में कुल 25 विद्यार्थी अध्यनरत है।

गणित विभाग द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है, जिसमें राष्ट्रीय गणित दिवस प्रमुख है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को गणित के विभिन्न उपयोगों के बारे में बताया जाता है तथा कई तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। गणित विभाग द्वारा विज्ञान संकाय के अंग के रूप में संयुक्त रूप से विज्ञान दिवस प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।

गणित विभाग के प्राध्यापक डॉ. राकेश पांडे वर्तमान में चार शोधार्थियों को शोध निर्देशन कर रहे हैं। डॉ. राकेश पांडे द्वारा 2 अंतराष्ट्रीय पेटेंट प्रकाशित किए जा चुके हैं।

Intellectual Property Office

Certificate of Registration for a UK Design

Design number: 6374910

Grant date: 08 July 2024

Registration date: 28 June 2024

This is to certify that,

in pursuance of and subject to the provision of Registered Designs Act 1949, the design of which a representation or specimen is attached, had been registered as of the date of registration shown above in the name of

Dr. Rakesh Pandey

in respect of the application of such design to:

Modular Arithmetic and Calculus Learning Device

International Design Classification:
Version: 14-2023
Class: 14 RECORDING, TELECOMMUNICATION OR DATA PROCESSING EQUIPMENT
Subclass: 02 DATA PROCESSING EQUIPMENT AS WELL AS PERIPHERAL APPARATUS AND DEVICES

Adam Williams
Comptroller-General of Patents, Designs and Trade Marks
Intellectual Property Office
The attention of the Proprietor(s) is drawn to the important notes overleaf.

Intellectual Property Office is an operating name of the Patent Office

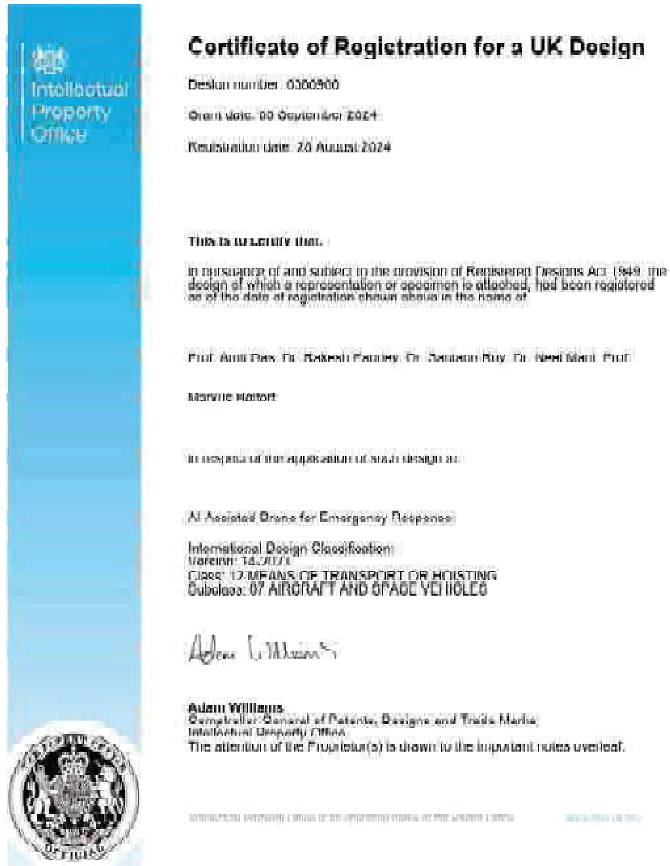
Intellectual Property Office

Certificate of Registration for a UK Design

Design number: 6380900

Grant date: 09 September 2024

Registration date: 20 August 2024

This is to certify that,

in pursuance of and subject to the provision of Registered Designs Act 1949, the design of which a representation or specimen is attached, had been registered as of the date of registration shown above in the name of

Prof. Amit Das, Dr. Rakesh Pandey, Dr. Santanu Roy, Dr. Neel Mani, Prof. Marvin Hallorf

in respect of the application of such design to:

AI Assisted Drone for Emergency Response

International Design Classification:
Version: 14-2023
Class: 12 MEANS OF TRANSPORT OR HOISTING
Subclass: 07 AIRCRAFT AND SPACE VEHICLES

Adam Williams
Comptroller-General of Patents, Designs and Trade Marks
Intellectual Property Office
The attention of the Proprietor(s) is drawn to the important notes overleaf.

रसायन विज्ञान विभाग

विज्ञान संकाय में पांच विभाग स्थापित हैं, जिसमें से रसायन विज्ञान विभाग भी एक है। महाविद्यालय में रसायन विज्ञान की कक्षाएं 2018 से बीएससी बायो ग्रुप (ZBC) तथा बीएससी मैथ्स ग्रुप (PCM) रूप में संचालित हुई। 2021 में महाविद्यालय से पहला बैच पास आउट हुआ। रसायन विज्ञान विभाग में प्रारंभ से ही प्रयोगशाला स्थापित की गई थी, परंतु सीमित संशाधन होने की वजह से प्रयोगात्मक कक्षाएं संचालित करने में दुविधा होती थी। परंतु अब रसायन विज्ञान विभाग की प्रयोगशाला अत्याधुनिक है जिसमें डिजिटल बैलेंस, डिजिटल पीएच मीटर, सेंट्रीफ्यूज, डिस्टीलेशन प्लांट, मैग्नेटिक थर्मल स्टीरर विद हॉट प्लेट आदि उपकरण हैं। 2023 में नैक में 'बी' ग्रेड प्राप्त करने के बाद महाविद्यालय को कुछ प्रोत्साहन राशि प्राप्त हुई, जिससे रसायन विज्ञान की प्रयोगशाला में ब्रॉन्ज तथा कॉपर फिटिंग वाला गैस प्लांट इंस्टॉल किया गया जिसमें 30 बर्नर लगाए गए।

रसायन विज्ञान की कक्षाएं डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक बोर्ड पर स्मार्ट क्लास में संचालित की जाती हैं। बच्चे रसायन विज्ञान की कक्षा में बड़े मनोयोग के साथ उपस्थित रहते हैं। 28 फरवरी 2023 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष में 'ग्लोबल साइंस तथा ग्लोबल वेल बीइंग' टॉपिक पर विज्ञान संकाय द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित किया गया।

26 मई 2023 को विज्ञान संकाय द्वारा अवेयरनेस प्रोग्राम 'वेस्ट मैनेजमेंट फॉर सस्टेनेबल लाइफस्टाइल' पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। भविष्य में रसायन विज्ञान में विभाग नैनो रसायन पर शोध करने की योजना की जा रही है।

Botany And Zoology

1. Session - 2021-2022

I. Occasion- Science Day (28.02.2022)

Activity & Involvement - Students participated in a model exhibition and speech competition, presenting innovative scientific models on various topics. Teachers guided them in preparing these models and speeches, fostering a deeper understanding of scientific concepts. This event helped students develop their research and presentation skills, as well as encouraged creativity and teamwork.

Winner of speech competition:
First : Kukum Bhandari
Second : Himani
Third : Jaya Rana

Winner of model competition:
First : Jyoti Joshi
Second : Asha Bora
Third : Geeta Bora

2. Session - 2022-2023

I. Occasion- Azadi ka Amrit Mahotsav (12.07.2022)

Activity & Involvement - To celebrate the spirit of independence, students took part in a speech competition where they expressed their thoughts on freedom, national pride, and patriotism. Teachers organized and facilitated the event, helping students refine their speeches. Additionally, a plantation drive was conducted, involving both students and teachers, to promote environmental awareness and the importance of greenery. Students enthusiastically planted saplings around the campus, understanding their role in sustainable practices.

II. Occasion- Teachers' Day (05.09.2022)

Activity & Involvement - Students celebrated Teachers' Day by performing dance routines and delivering heartfelt speeches to honor their teachers. Teachers supported and guided students in preparing these performances, making the event memorable. It was an opportunity for students to express their gratitude and admiration for their mentors, while teachers appreciated the efforts put in by the students, strengthening the teacher-student bond.

III. Occasion- Dengue Control Program (2022)

Activity & Involvement - In this cleanliness and prevention program, students worked under the guidance of teachers to raise awareness about dengue prevention. They participated in cleaning campaigns around the campus and nearby areas, learning the importance of maintaining hygiene. Teachers educated students about the causes of dengue and effective ways to prevent mosquito breeding, making it a collaborative effort to promote public health and safety.

IV. Occasion- Field Visit (23.02.2023)

Activity & Involvement - A field visit to Malla Kholi, Someshwar, was organized, where students had the opportunity to explore the local flora and fauna. Guided by teachers, they collected samples, took notes, and learned about various plant and animal species found in the region. This hands-on experience allowed students to observe biodiversity in its natural habitat, deepening their understanding of ecology and environmental science. Teachers provided insights and explanations, ensuring that the students could connect classroom learning with real-world applications.

V. Occasion- World Migratory Bird Day (13.05.2023)

Activity & Involvement - An essay competition was held to raise awareness about migratory birds and their conservation. Students researched and wrote essays, showcasing their understanding of the topic and the need to protect these species. Teachers guided students through the research process, providing resources and feedback to help them develop well-informed essays. The event aimed to educate students about the ecological importance of migratory birds and the challenges they face during migration.

Winners:
First: Uma Kaira
Second: Khusi Rana
Third: Kumkum Bhandari

VI. Occasion- World Environment Day (05.06.2023)

Activity & Involvement - Students participated in a poster competition, creating visual representations that highlighted various environmental issues, such as pollution, climate change, and deforestation. Teachers encouraged students to use their creativity to convey strong messages about environmental conservation. This activity was designed to inspire students to think critically about environmental problems and advocate for sustainabl practices. Teachers evaluated the posters, offering feedback and appreciating the students' artistic efforts and awareness.

पुस्तकालय आख्या

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर का पुस्तकालय संसाधन संपन्न है। पुस्तकालय में

सभी विषयों की पर्याप्त पुस्तकें हैं, जिसमें पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बंधित पुस्तकें हैं। अध्ययन हेतु वाचनालय (रीडिंग रुम) है, जिसमें एक समय में लगभग 35 छात्र अध्ययन कर सकते हैं। पुस्तकालय में विभिन्न ई-संसाधन व सभी विषयों के पाठ्यक्रम के क्यू-आर कोड लगाये गए हैं, जिसके द्वारा छात्र ऑनलाइन माध्यम से अध्ययन सामग्री व ऑनलाइन जर्नल्स का अध्ययन कर सकते हैं। पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की जानकारी के लिए OPAC सॉफ्टवेयेर व ई-बुक्स के अध्ययन व प्रबंधन के लिए Calibre सॉफ्टवेयेर उपलब्ध है। विगत वर्षो में पुस्तकालय में क्रय की गई पुस्तकों का विवरण निम्नवत है :

क्रम सं.	वर्ष	क्रय पुस्तकों की संख्या	धनराशि
1	2022-23	—	—
2	2023-24	293	80,000/-
3	2024-25	287	80,000/-

एन्टी ड्रग सेल

एंटी ड्रग सेल के द्वारा निदेशक, उच्च शिक्षा के आदेशानुसार प्राचार्य जी के निदेशन में प्रति माह विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमे स्लोगन, भाषण, निबन्ध, स्वरचित कविता प्रतियोगिताएं प्रमुख रहीं। एन.एस.एस. के साथ संयुक्त रूप से समय-समय पर जन जागरुकता रैली

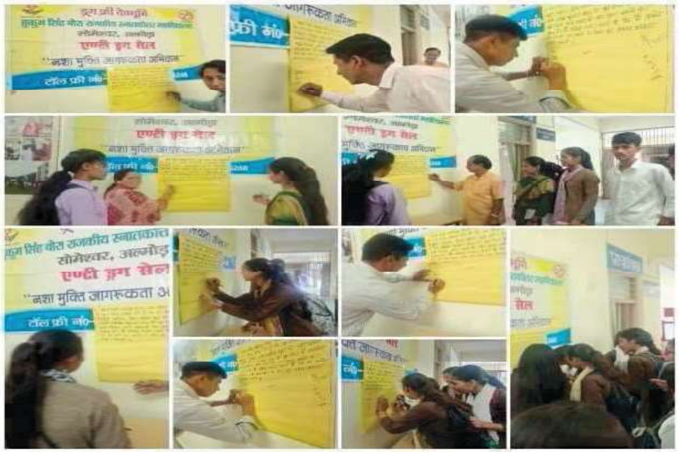

निकाली गई। श्री आनन्द बल्लभ तिवारी चिकित्सा अधिकारी, उप चिकित्सा केन्द्र सोमेश्वर तथा श्री गोपाल

गोस्वामी चीफ फर्मेसिस्ट सोमेश्वर, श्रीमती मोनी टम्टा पुलिस अधीक्षक थाना सोमेश्वर, श्री रणजीत नयाल, संगठन ग्राम प्रधान अध्यक्ष क्षेत्र ताकुला, श्री गिरीश पाण्डे जी समाजसेवी तथा विभिन्न विषय के प्राध्यापकों के व्याख्यान आयोजित किये गये। तम्बाकू निषेध दिवस पर नशा मुक्त भारत के संकल्प के लिए महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी तथा छात्र छात्राओं द्वारा नशा न करने की शपथ ग्रहण की गई। सभी छात्र छात्राओं से ई शपथ "जिन्दगी को कहे हाँ, तथा नशे को कहें ना" शपथ करवायी गयी। नशा मुक्त भारत बनाने के लिए व्यापक हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। एन्टी ड्रग क्लब का गठन किया गया।

सांस्कृतिक परिषद

सांस्कृतिक समिति द्वारा प्राचार्य जी के निर्देशन में कॉलेज का वार्षिकोत्सव किया गया जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये तथा विभिन्न क्षेत्रों एवं प्रतियोगिताओं में अव्वल छात्रों को पुरुस्कृत किया गया। कालेज की वार्षिक आख्या प्रस्तुत की गयी। स्वतन्तता दिवस पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम झोड़ा, चांचरी, एकल नृत्य तथा विभिन राज्यों की संस्कृति का प्रदर्शन किया गया। होली पर होली गायन आयोजन किया गया। राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर उत्तराखंड सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी तथा बाल दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में अव्वल छात्र छात्राओं को पुरष्कृत किया गया।

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में शोध एवं विकास प्रकोष्ठ सत्र 2021-22 में गठित हुआ, जब महाविद्यालय में दो साथ शोध छात्र रवींद्र कुमार, हिंदी तथा ललित जोशी, इतिहास में क्रमशः डॉ. अमिता प्रकाश और डॉ. अपर्णा सिंह के निर्देशन में पंजीकृत हुए। महाविद्यालय का शोध एवं विकास प्रकोष्ठ शोध के विकास हेतु निरंतर प्रयत्नशील है। पी.एच.डी. छात्रों हेतु 26 जुलाई 2024 को "रिसर्च मेथाडोलॉजी" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। शोध छात्रों हेतु प्री पीएचडी कोर्स वर्क में संपादित होने वाली कक्षाएं एवं लघु शोध नियमित रूप से करवाए जाते हैं। वर्तमान में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में पंजीकृत शोधार्थियों की संख्या निम्नवत है-

शोधार्थी	विभाग	शोध निर्देशक
1. भावना	मनोविज्ञान	प्रो (डॉ) कमला डी भारद्वाज
2. रुचिता भण्डारी	मनोविज्ञान	प्रो (डॉ) कमला डी भारद्वाज
3. संगीता तड़ागी	मनोविज्ञान	प्रो (डॉ) कमला डी भारद्वाज
4. सुयश बिष्ट	गणित	डॉ. राकेश पांडे
5. नीतू रावत	गणित	डॉ. राकेश पांडे
6 सुनील जोशी	गणित	डॉ. राकेश पांडे
7. मोहित बिष्ट	गणित	डॉ. राकेश पांडे
8. रविंद्र कुमार	हिंदी	डॉ. अमिता प्रकाश
9. पूजा	हिंदी	डॉ. अमिता प्रकाश
10. प्रेमा	हिंदी	डॉ. अमिता प्रकाश

11. बबीता दौरियाल	हिंदी	डॉ. अमिता प्रकाश
12 आलोक नौटियाल	हिंदी	डॉ. विपिन चंद्र
13. दिनेश चौहान	हिंदी	डॉ. भावना
14. ललिता गुप्ता	हिंदी	डॉ. भावना
15. दीपा देवी	शिक्षाशास्त्र	डॉ. सुनीता जोशी
16. विनोद कुमार आर्य	शिक्षाशास्त्र	डॉ. सुनीता जोशी
17. रमेश रावत	शिक्षाशास्त्र	डॉ. सुनीता जोशी
18. पूनम नेगी	समाजशास्त्र	डॉ. पुष्पा भट्ट
19. अखिलेश कुमार	वाणिज्य	डॉ.विवेक कुमार आर्या
20. प्रदीप कुमार	वाणिज्य	डॉ.विवेक कुमार आर्या
21. काजल थापा	वाणिज्य	डॉ.विवेक कुमार आर्या
22. सुनैना कुमारी	वाणिज्य	डॉ. शालिनी टम्टा
23. हुजेफा नईम	वाणिज्य	डॉ. शालिनी टम्टा
24. भावना शाह	वाणिज्य	डॉ. शालिनी टम्टा
25. साहिल जगोटा	जन्तु विज्ञान	डॉ. प्राची टम्टा
26. शेर राम	अर्थशास्त्र	डॉ. नीता टम्टा

क्रीड़ा आख्या

2022 – 2024

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा ने क्रीड़ा के क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण

SOBAN SINGH JEENA UNIVERSITY, ALMORA
North Zone Inter University Cricket (Men)

CERTIFICATE OF MERIT/ PARTICIPATION

S.No.- SSJU 057 2021 - 2022 Date 16/07/2022

This is to certify that GAURAV BHANDARI Class B.Sc. 3rd Sem Father's Name Mr. K.S. Bhandari Mother's Name Mrs. Deepa Bhandari Student of G.P.G.C. Someshwar represented Soban Singh Jeena University in the North Zone Inter University Cricket Men Tournament held at C.S.J.M. University Kanpur From 16.06.2022 to 24.06.2022

Sports Incharge
Soban Singh Jeena
University, Almora

Registrar
Soban Singh Jeena
University, Almora

भूमिका निभाई है। महाविद्यालय की क्रीड़ा टीम ने अंतर-महाविद्यालयी विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगिताओं, जैसे- क्रिकेट, वॉलीबाल, क्रॉस-कंट्री, बैडमिंटन, एथलेटिक्स, टेबल- टेनिस एवं खो-खो आदि में प्रतिभाग करके अच्छा स्थान प्राप्त किया है। क्रिकेट में गौरव भंडारी तथा विनोद कैड़ा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विश्वविद्यालयी टीम से नॉर्थ जोन तक खेला है। क्रॉस-कंट्री रेस, पुरुष वर्ग में विनोद कुमार तथा महिला वर्ग में नेहा रावत ने उत्कृट प्रदर्शन करते हुए नॉर्थ जोन तक प्रतिभाग किया है। वॉलीबाल महिला वर्ग में प्रीति कांडपाल ने नॉर्थ जोन अंतर-विश्वविद्यालयी वॉलीबाल प्रतियोगिता चितकारा विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश में प्रतिभाग किया। खो - खो महिला महिला वर्ग में विद्या रावत ने नॉर्थ जोन से अंतरविश्वविद्यालयी खो-खो

प्रतियोगिता मे एल.पी.यू. विश्वविद्यालय जालधर, पजाब मे प्रतिभाग किया।

सोमेश्वर महाविद्यालय विभिन्न प्रकार की अंतरमहाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में पिछले 5 वर्षों में लगभग 30 मेडल अपने नाम कर चुका है। सोमेश्वर क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में ऊर्जा का स्तर बहुत उच्च कोटि का पाया

गया है। इसका कारण यह है कि सोमेश्वर घाटी एक अत्यधिक उपजाऊ घाटी है। अनाज, साग-सब्जी में यहां ठीक-ठाक उत्पादन हो जाता है। यहां के निवासी बाजार से अनाज खरीद कर कम खाते हैं। यही कारण है कि यहां की छात्र-छात्राएं खेलकूद के क्षेत्र में अधिक ऊर्जा के साथ अपना शत प्रतिशत देकर उत्कृट प्रदर्शन करते हैं। महाविद्यालय ने अंतर-महाविद्यालयी टेबल-टेनिस प्रतियोगिता तथा अंतर महाविद्यालयी खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन भी सफलता पूर्वक करवाया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

सत्र : 2022-23

वर्ष 2022-23 में राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरार्थियों द्वारा अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस धूमधाम से मनाया गया जिसमें डॉ. कपिलेश भोज, सेवानिवृत्त प्रवक्ता, महात्मा गांधी इण्टर कॉलेज चनौदा के द्वारा सोमेश्वर घाटी की सृजनशील महिलाओं' पर अपना वक्तव्य दिया गया। 31 मई 2022 को तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर तंबाकू से होने वाली बीमारियों तथा खतरों से सजग किया गया साथ ही शपथ ली गई। 5 जून पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण सुरक्षा पर चर्चा पर चर्चा की गई। 21 जून 2022 को योग दिवस पर विभिन्न योगासनों का अभ्यास एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष साथ दिवसीय शिविर 18-2-2023 से 24-2-2023 तक अर्जुन राठ, मल्ला खोली सोमेश्वर में लगाया गया जिसका उद्घाटन समाजसेवी श्री मदन मोहन सनवाल जी के द्वारा किया गया। विशेष शिविर में नित्य वंदना, व्यायाम आदि दैनिक क्रियाओं के पश्चात सफाई कार्यक्रम, वृक्षारोपण हेतु गड्ढों का निर्माण, नशा मुक्त उत्तराखंड हेतु जन जागरूकता रैली आदि कार्यक्रम आयोजित हुए। डॉक्टर आनंद बल्लभ तिवारी जी के द्वारा प्राथमिक चिकित्सा, नशा उन्मूलन पर जानकारी तथा शपथ दिलाई गई। विभिन्न प्राध्यापकों द्वारा बौद्धिक सत्र में महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई। कार्यक्रम के समापन में प्रो. डॉ. जगत सिंह बिष्ट, कुलपति सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा उपस्थित रहे। उन्होंने छात्रों को शिविर में सीखी गई बातों का उपयोग व्यक्तित्व विकास के साथ समाज सेवा में भी करने को कहा। सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी सलोनी भंडारी तथा कुलदीप सिंह, उद्घोषक कुमकुम भंडारी तथा अनुशासित शिविरार्थी प्रेम प्रकाश, सर्वश्रेष्ठ संस्कृतिकर्मी वंदना रही।

सत्र : 2023-24

वर्ष 2023-24 में एनएसएस के शिविरार्थियों द्वारा कारगिल दिवस की 24वीं वर्षगांठ पर अमर शहीद जवानों को पुष्पांजलि दी गई। 10 अगस्त को 'मेरी माटी मेरा देश' के तहत अमृत वाटिका का निर्माण किया गया, जिसमें सभी शिविरार्थियों ने अपने-अपने गांव से मिट्टी लाकर वाटिका का निर्माण किया। 28-8-2024 को कृमि मुक्ति दिवस पर शिविरार्थियों ने छात्र-छात्राओं को अल्बेंडाजोल दवाई खिलाई। 1 अक्टूबर 2024 को स्वच्छांजलि कार्यक्रम में श्रमदान किया गया। मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया साथ ही तंबाकू निषेध दिवस मनाया गया। पर्यावरण दिवस एवं योग दिवस मनाया गया, एन.एस.एस. का विशेष शिविर 14-3-2024 से 20-3-2024 तक अर्जुन राठ, मल्ला खोली सोमेश्वर में प्राचार्य प्रो. डॉ. अवनीन्द्र कुमार जोशी जी, श्री कमल तिवारी, खेल प्रशिक्षक तथा श्री पीतांबर दत्त पांडे समाजसेवी द्वारा किया गया। विशेष शिविर में नित्य वंदना, व्यायाम, नाश्ता तथा रचनात्मक कार्य आदि गतिविधियां हुई जिसमें मतदाता जागरूकता, वाद-विवाद, स्वच्छता, नशा मुक्ति अभियान, पेंटिंग प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि किए गए। बौद्धिक क्षेत्र में ललित कुमार आर्य, भूतपूर्व छात्र संघ अध्यक्ष, श्रीमती मोनी टम्टा उपनिरीक्षक थाना सोमेश्वर, हर्ष काफर कुमाऊंनी कवि, श्री उपेंद्र कुमार कनिष्ठ सहायक तथा विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों द्वारा छात्र-छात्राओं को महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। विशेष शिविर के समापन पर मुख्य अतिथि श्री किशन सिंह बोरा पुत्र स्वर्गीय हुकुम सिंह बोरा तथा श्री धीरज पांडे, समाजसेवी उपस्थित रहे। सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी कुमारी श्रद्धा कैड़ा एवं दीपक बिष्ट रहे, कार्यक्रम का संचालन धीरज जोशी द्वारा किया गया अनुशासित शिविरार्थी कुमारी सुष्मिता भैसोड़ा रही।

मुख्यमंत्री उच्चशिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना से पुरस्कृत छात्र-छात्राएं 2022-23

कला संकाय- स्नातक

Shraddha Kaira, B.A. II Year (First)

Pooja Bisht, B.A. II Year (Second)

Sangeeta Arya, B.A. III Year (Third)

Nikita, B.A. III Year (First)

Harshita Pandey, B.A. III Year (Second)

Chanchal Jalal, B.A. III Year (Third)

विज्ञान संकाय

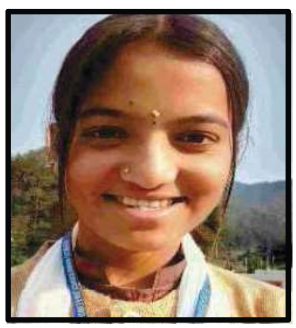
Uma Kaira, B.Sc.II Year (First)

Kumkum Bhandari, B.Sc. III Year (First)

Neha Arya, B.Sc. III Year (Second)

Ankita, B.Sc. III Year (Third)

वाणिज्य संकाय

Sneha Joshi, B.Com III Year (First)

Priya Bhatt, B.Com III Sem. (Second)

Rashmi Goswami, B.Com III Sem. (Second)

स्नातकोत्तर स्तर (हिन्दी साहित्य)

Nisha Negi M.A.III Sem (First)

Pooja Dosad, M.A. III Sem (Second)

Deepa Bora, M.A. III Sem (Third)

इतिहास

Neetu Bisht, M.A. III Sem. (First)

Rajendra Singh Kaira, M.A. III Sem. (Second)

Mamta Joshi , M.A. III Sem. (Third)

English Literature

Deepak Nath Goswami, M.A. III Sem. English (First)

मुख्यमंत्री उच्चशिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृति योजना से पुरस्कृत छात्र-छात्राएं 2023-24

कला संकाय- स्नातक

Babita Arya B.A.III Sem. (First)

Sanjana Arya B.A.III (Second)

Himani Bhakuni B.A.III (Third)

Shraddha Kaira B.A.V (First)

Diksha Arya B.A.V (Second)

Pooja Bisht B.A.V (Third)

Nikita B.A. Final (First)

Chanchal Jalal B.A. (Second)

Lakshita Negi (Third)

विज्ञान संकाय

Anjali Raturi B.Sc.III (First)

Nitin Pandey B,Sc.III (Second)

Bhandari Sandhya Deepak B.Sc.III (Third)

Uma Kaira B.Sc.V Sem (First)

Sushma Arya B.Sc.V (Second)

Mohit Prakash Pandey B.Sc.V (Third)

Kumkum Bhandari B.Sc (First)

Neha Arya B.Sc (Second)

Lalita Rawal B.Sc. (Third)

वाणिज्य संकाय

Himanshu Kumar B.Com. V Sem (First)

Rashmi Goswami B.Com(First)

Sneha Joshi B.Com (Second)

Priya Bhatt B.Com (third)

स्नातकोत्तर स्तर (हिन्दी साहित्य)

Lakshita Lohani M.A.III (First)

Bhagwati Bora M.A.III (Second)

Himani Bora M.A.III (Third)

Kavita Rana M.A. Final (First)

kajal Bhakuni M.A. Final(Second)

Nisha Negi M.A. Final (Third)

इतिहास

Priyanka Bhojak, M.A. III (First)

Tanuja Negi B.A.III (Second)

Pooja , M.A. III (Third)

Neetu Bisht, M.A. Final (First)

Rajendra S. Kaira, M.A. Final (Second)

Rohit S Bhakuni M.A. Final(Third).

English Literature

Deeksha Joshi, M.A. III (First)

Rupali Rawat, M.A. III (Second)

Jyoti Bora, , M.A. III (Third)

Deepak N. Goswami (First)

Rajani Kharkwal (Second)

Vandana Kharkwal (Third)

सम्पादक मण्डल

प्रथम पंक्ति- (बायें से दायें): डॉ. जगदीश प्रशाद, डॉ. चन्द्र प्रकाश वर्मा, प्रोफे. अवनीन्द्र कुमार जोशी (प्राचार्य), डॉ. अमिता प्रकाश, डॉ. राकेश पाण्डे।

द्वितीय पंक्ति- (बायें से दायें): डॉ. महेश चन्द्र, श्री नीरज सिंह पांगती, डॉ. विवेक कुमार आर्या, डॉ. विपिन चन्द्र

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

प्रथम पंक्ति- (बायें से दायें): श्री कमलेश कुमार, श्री कुन्दन सिंह बिष्ट, श्री राकेश चन्द्र, प्रोफे. अवनीन्द्र कुमार जोशी (प्राचार्य), श्री राकेश चन्द्र (वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी) श्री राजन मेहरा।

द्वितीय पंक्ति- (बायें से दायें): श्री नरेन्द्र सिंह बोरा, श्री लाल सिंह नेगी, श्री सचिन आनन्द, श्री पूरन सिंह, श्री लक्ष्मण सिंह।

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सोमेश्वर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)